

खुर्रुज

याकूब का खानदान मिसर में

1 ज़ैल में उन बेटों के नाम हैं जो अपने बाप याकूब और अपने खानदानों समेत मिसर में आए थे :

2 रुबिन, शमौन, लावी, यहदाह,

3 इशकार, ज़बूलून, बिनयमीन,

4 दान, नफ़ताली, जद और आशर।

5 उस वक्त याकूब की औलाद की तादाद 70 थी। यूसुफ़ तो पहले ही मिसर आ चुका था।

6 मिसर में रहते हुए बहुत दिन गुज़र गए। इतने में यूसुफ़, उसके तमाम भाई और उस नसल के तमाम लोग मर गए।

7 इसराइली फले-फूले और तादाद में बहुत बढ़ गए। नतीजे में वह निहायत ही ताक़तवर हो गए। पूरा मुल्क उनसे भर गया।

इसराइलियों को दबाया जाता है

8 होते होते एक नया बादशाह तख़्तनशीन हुआ जो यूसुफ़ से नावाकिफ़ था।

9 उसने अपने लोगों से कहा, “इसराइलियों को देखो। वह तादाद और ताक़त में हमसे बढ़ गए हैं।

10 आओ, हम हिकमत से काम लें, वरना वह मज़ीद बढ़ जाएंगे। ऐसा न हो कि वह किसी जंग के मौक़े पर दुश्मन का साथ देकर हमसे लड़ें और मुल्क को छोड़ जाएँ।”

11 चुनौचे मिसरियों ने इसराइलियों पर निगरान मुकर्रर किए ताकि बेगार में उनसे काम करवाकर उन्हें दबाते रहें। उस वक्त उन्होंने पितोम और रामसीस के शहर तामीर किए। इन शहरों में फिरौन बादशाह के बड़े बड़े गोदाम थे।

12 लेकिन जितना इसराइलियों को दबाया गया उतना ही वह तादाद में बढ़ते और फैलते गए। आखिरकार मिसरी उनसे दहशत खाने लगे,

13 और वह बड़ी बेरहमी से उनसे काम करवाते रहे।

14 इसराईलियों का गुज़ारा निहायत मुश्किल हो गया। उन्हें गारा तैयार करके ईंटें बनाना और खेतों में मुख्तलिफ़ क्रिस्म के काम करना पड़े। इसमें मिसरी उनसे बड़ी बेरहमी से पेश आते रहे।

दाइयाँ अल्लाह की राह पर चलती हैं

15 इसराईलियों की दो दाइयाँ थीं जिनके नाम सिफ़रा और फ़ुआ थे। मिसर के बादशाह ने उनसे कहा,

16 “जब इबरानी औरतें तुम्हें मदद के लिए बुलाएँ तो खबरदार रहो। अगर लड़का पैदा हो तो उसे जान से मार दो, अगर लड़की हो तो उसे जीता छोड़ दो।”

17 लेकिन दाइयाँ अल्लाह का ख़ौफ़ मानती थीं। उन्होंने मिसर के बादशाह का हुक्म न माना बल्कि लड़कों को भी जीने दिया।

18 तब मिसर के बादशाह ने उन्हें दुबारा बुलाकर पूछा, “तुमने यह क्यों किया? तुम लड़कों को क्यों जीता छोड़ देती हो?”

19 उन्होंने जवाब दिया, “इबरानी औरतें मिसरी औरतों से ज्यादा मज़बूत हैं। बच्चे हमारे पहुँचने से पहले ही पैदा हो जाते हैं।”

20 चुनौचे अल्लाह ने दाइयों को बरकत दी, और इसराईली कौम तादाद में बढ़कर बहुत ताकतवर हो गई।

21 और चूँकि दाइयाँ अल्लाह का ख़ौफ़ मानती थीं इसलिए उसने उन्हें औलाद देकर उनके खानदानों को कायम रखा।

22 आखिरकार बादशाह ने अपने तमाम हमवतनों से बात की, “जब भी इबरानियों के लड़के पैदा हों तो उन्हें दरियाए-नील में फेंक देना। सिर्फ़ लड़कियों को ज़िंदा रहने दो।”

2

मूसा की पैदाइश और बचाव

1 उन दिनों में लावी के एक आदमी ने अपने ही कबीले की एक औरत से शादी की।

2 औरत हामिला हुई और बच्चा पैदा हुआ। माँ ने देखा कि लड़का ख़ूबसूरत है, इसलिए उसने उसे तीन माह तक छुपाए रखा।

3 जब वह उसे और ज़्यादा न छुपा सकी तो उसने आबी नरसल से टोकरी बनाकर उस पर तारकोल चढाया। फिर उसने बच्चे को टोकरी में रखकर टोकरी को दरियाए-नील के किनारे पर उगे हुए सरकंडों में रख दिया।

4 बच्चे की बहन कुछ फासले पर खड़ी देखती रही कि उसका क्या बनेगा।

5 उस वक़्त फिरौन की बेटी नहाने के लिए दरिया पर आई। उस की नौकरानियाँ दरिया के किनारे टहलने लगीं। तब उसने सरकंडों में टोकरी देखी और अपनी लौंडी को उसे लाने भेजा।

6 उसे खोला तो छोटा लड़का दिखाई दिया जो रो रहा था। फिरौन की बेटी को उस पर तरस आया। उसने कहा, “यह कोई इब्रानी बच्चा है।”

7 अब बच्चे की बहन फिरौन की बेटी के पास गई और पूछा, “क्या मैं बच्चे को दूध पिलाने के लिए कोई इब्रानी औरत ढूँड लाऊँ?”

8 फिरौन की बेटी ने कहा, “हाँ, जाओ।” लड़की चली गई और बच्चे की सगी माँ को लेकर वापस आई।

9 फिरौन की बेटी ने माँ से कहा, “बच्चे को ले जाओ और उसे मेरे लिए दूध पिलाया करो। मैं तुम्हें इसका मुआवज़ा दूँगी।” चुनाँचे बच्चे की माँ ने उसे दूध पिलाने के लिए ले लिया।

10 जब बच्चा बड़ा हुआ तो उस की माँ उसे फिरौन की बेटी के पास ले गई, और वह उसका बेटा बन गया। फिरौन की बेटी ने उसका नाम मूसा यानी ‘निकाला गया’ रखकर कहा, “मैं उसे पानी से निकाल लाई हूँ।”

मूसा फ़रार होता है

11 जब मूसा जवान हुआ तो एक दिन वह घर से निकलकर अपने लोगों के पास गया जो ज़बरी काम में मसरूफ़ थे। मूसा ने देखा कि एक मिसरी मेरे एक इब्रानी भाई को मार रहा है।

12 मूसा ने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई। जब मालूम हुआ कि कोई नहीं देख रहा तो उसने मिसरी को जान से मार दिया और उसे रेत में छुपा दिया।

13 अगले दिन भी मूसा घर से निकला। इस दफ़ा दो इब्रानी मर्द आपस में लड़ रहे थे। जो ग़लती पर था उससे मूसा ने पूछा, “तुम अपने भाई को क्यों मार रहे हो?”

14 आदमी ने जवाब दिया, “किसने आपको हम पर हुक्मरान और काज़ी मुकर्रर किया है? क्या आप मुझे भी क़ल्ल करना चाहते हैं जिस तरह मिसरी को मार डाला था?” तब मूसा डर गया। उसने सोचा, “हाय, मेरा भेद खुल गया है!”

15 बादशाह को भी पता लगा तो उसने मूसा को मरवाने की कोशिश की। लेकिन मूसा मिदियान के मुल्क को भाग गया। वहाँ वह एक कुँए के पास बैठ गया।

16 मिदियान में एक इमाम था जिसकी सात बेटियाँ थीं। यह लड़कियाँ अपनी भेड़-बकरियों को पानी पिलाने के लिए कुँए पर आईं और पानी निकालकर हौज़ भरने लगीं।

17 लेकिन कुछ चरवाहों ने आकर उन्हें भगा दिया। यह देखकर मूसा उठा और लड़कियों को चरवाहों से बचाकर उनके रेवड़ को पानी पिलाया।

18 जब लड़कियाँ अपने बाप रऊएल के पास वापस आईं तो बाप ने पूछा, “आज तुम इतनी जल्दी से क्यों वापस आ गई हो?”

19 लड़कियों ने जवाब दिया, “एक मिसरी आदमी ने हमें चरवाहों से बचाया। न सिर्फ़ यह बल्कि उसने हमारे लिए पानी भी निकालकर रेवड़ को पिला दिया।”

20 रऊएल ने कहा, “वह आदमी कहाँ है? तुम उसे क्यों छोड़कर आई हो? उसे बुलाओ ताकि वह हमारे साथ खाना खाए।”

21 मूसा रऊएल के घर में ठहरने के लिए राज़ी हो गया। बाद में उस की शादी रऊएल की बेटी सफ़फ़ूरा से हुई।

22 सफ़फ़ूरा के बेटा पैदा हुआ तो मूसा ने कहा, “इसका नाम जैरसोम यानी ‘अजनबी मुल्क में परदेसी’ हो, क्योंकि मैं अजनबी मुल्क में परदेसी हूँ।”

23 काफ़ी अरसा गुज़र गया। इतने में मिसर का बादशाह इंतकाल कर गया। इसराईली अपनी गुलामी तले कराहते और मदद के लिए पुकारते रहे, और उनकी चीखें अल्लाह तक पहुँच गईं।

24 अल्लाह ने उनकी आहें सुनीं और उस अहद को याद किया जो उसने इब्राहीम, इसहाक और याक़ूब से बाँधा था।

25 अल्लाह इसराईलियों की हालत देखकर उनका ख़याल करने लगा।

3

जलती हुई झाड़ी

1 मूसा अपने सुसर यितरो की भेड़-बकरियों की निगहबानी करता था (मिदियान का इमाम रऊएल यितरो भी कहलाता था)। एक दिन मूसा रेवड़ को रेगिस्तान की

परली जानिब ले गया और चलते चलते अल्लाह के पहाड होरिब यानी सीना तक पहुँच गया।

2 वहाँ रब का फ़रिश्ता आग के शोले में उस पर ज़ाहिर हुआ। यह शोला एक झाड़ी में भड़क रहा था। मूसा ने देखा कि झाड़ी जल रही है लेकिन भस्म नहीं हो रही।

3 मूसा ने सोचा, “यह तो अजीब बात है। क्या वजह है कि जलती हुई झाड़ी भस्म नहीं हो रही? मैं ज़रा वहाँ जाकर यह हैरतअंगेज़ मंज़र देखूँ।”

4 जब रब ने देखा कि मूसा झाड़ी को देखने आ रहा है तो उसने उसे झाड़ी में से पुकारा, “मूसा, मूसा!” मूसा ने कहा, “जी, मैं हाज़िर हूँ।”

5 रब ने कहा, “इससे ज़्यादा करीब न आना। अपनी जूतियाँ उतार, क्योंकि तू मुक़द्दस ज़मीन पर खड़ा है।

6 मैं तेरे बाप का खुदा, इब्राहीम का खुदा, इसहाक़ का खुदा और याक़ूब का खुदा हूँ।” यह सुनकर मूसा ने अपना मुँह ढाँक लिया, क्योंकि वह अल्लाह को देखने से डरा।

7 रब ने कहा, “मैंने मिसर में अपनी क़ौम की बुरी हालत देखी और गुलामी में उनकी चीखें सुनी हैं, और मैं उनके दुखों को ख़ूब जानता हूँ।

8 अब मैं उन्हें मिसरियों के काबू से बचाने के लिए उतर आया हूँ। मैं उन्हें मिसर से निकालकर एक अच्छे वसी मुल्क में ले जाऊँगा, एक ऐसे मुल्क में जहाँ दूध और शहद की कसरत है, गो इस वक़्त कनानी, हिती, अमोरी, फ़रिज़्जी, हिब्वी और यबूसी उसमें रहते हैं।

9 इसराईलियों की चीखें मुझ तक पहुँची हैं। मैंने देखा है कि मिसरी उन पर किस तरह का ज़ुल्म ढा रहे हैं।

10 चुनौचे अब जा। मैं तुझे फिरौन के पास भेजता हूँ, क्योंकि तुझे मेरी क़ौम इसराईल को मिसर से निकालकर लाना है।”

11 लेकिन मूसा ने अल्लाह से कहा, “मैं कौन हूँ कि फिरौन के पास जाकर इसराईलियों को मिसर से निकाल लाऊँ?”

12 अल्लाह ने कहा, “मैं तो तेरे साथ हूँगा। और इसका सबूत कि मैं तुझे भेज रहा हूँ यह होगा कि लोगों के मिसर से निकलने के बाद तुम यहाँ आकर इस पहाड पर मेरी इबादत करोगे।”

13 लेकिन मूसा ने एतराज़ किया, “अगर मैं इसराईलियों के पास जाकर उन्हें बताऊँ कि तुम्हारे बापदादा के खुदा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है तो वह पूछेंगे, ‘उसका नाम क्या है?’ फिर मैं उनको क्या जवाब दूँ?”

14 अल्लाह ने कहा, “मैं जो हूँ सो मैं हूँ। उनसे कहना, ‘मैं हूँ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।’

15 रब जो तुम्हारे बापदादा का खुदा, इब्राहीम का खुदा, इसहाक का खुदा और याकूब का खुदा है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।’ यह अबद तक मेरा नाम रहेगा। लोग यही नाम लेकर मुझे नसल-दर-नसल याद करेंगे।

16 अब जा और इसराईल के बुजुर्गों को जमा करके उनको बता दे कि रब तुम्हारे बापदादा इब्राहीम, इसहाक और याकूब का खुदा मुझ पर जाहिर हुआ है। वह फरमाता है, ‘मैंने खूब देख लिया है कि मिसर में तुम्हारे साथ क्या सुलूक हो रहा है।’

17 इसलिए मैंने फैसला किया है कि तुम्हें मिसर की मुसीबत से निकालकर कनानियों, हितियों, अमोरियों, फरिजियों, हिवियों और यबूसियों के मुल्क में ले जाऊँ, ऐसे मुल्क में जहाँ दूध और शहद की कसरत है।’

18 बुजुर्ग तेरी सुनेंगे। फिर उनके साथ मिसर के बादशाह के पास जाकर उससे कहना, ‘रब इबरानियों का खुदा हम पर जाहिर हुआ है। इसलिए हमें इजाज़त दें कि हम तीन दिन का सफ़र करके रेगिस्तान में रब अपने खुदा के लिए कुरबानियाँ चढाएँ।’

19 लेकिन मुझे मालूम है कि मिसर का बादशाह सिर्फ़ इस सूरत में तुम्हें जाने देगा कि कोई जबरदस्ती तुम्हें ले जाए।

20 इसलिए मैं अपनी कुदरत जाहिर करके अपने मोजिज़ों की मारिफ़त मिसरियों को मारूँगा। फिर वह तुम्हें जाने देगा।

21 उस वक़्त मैं मिसरियों के दिलों को तुम्हारे लिए नरम कर दूँगा। तुम्हें खाली हाथ नहीं जाना पड़ेगा।

22 तमाम इबरानी औरतें अपनी मिसरी पड़ोसनों और अपने घर में रहनेवाली मिसरी औरतों से चाँदी और सोने के ज़ेवरात और नफ़ीस कपड़े माँगकर अपने बच्चों को पहनाएँगी। यों मिसरियों को लूट लिया जाएगा।”

4

1 मूसा ने एतराज़ किया, “लेकिन इसराईली न मेरी बात का यक्रीन करेंगे, न मेरी सुनेंगे। वह तो कहेंगे, ‘रब तुम पर जाहिर नहीं हुआ’।”

2 जवाब में रब ने मूसा से कहा, “तूने हाथ में क्या पकड़ा हुआ है?” मूसा ने कहा, “लाठी।”

3 रब ने कहा, “उसे ज़मीन पर डाल दे।” मूसा ने ऐसा किया तो लाठी साँप बन गई, और मूसा डरकर भागा।

4 रब ने कहा, “अब साँप की दुम को पकड़ ले।” मूसा ने ऐसा किया तो साँप फिर लाठी बन गया।

5 रब ने कहा, “यह देखकर लोगों को यक्रीन आएगा कि रब जो उनके बापदादा का खुदा, इब्राहीम का खुदा, इसहाक़ का खुदा और याक़ूब का खुदा है तुझ पर जाहिर हुआ है।

6 अब अपना हाथ अपने लिबास में डाल दे।” मूसा ने ऐसा किया। जब उसने अपना हाथ निकाला तो वह बर्फ़ की मानिंद सफ़ेद हो गया था। कोढ़ जैसी बीमारी लग गई थी।

7 तब रब ने कहा, “अब अपना हाथ दुबारा अपने लिबास में डाल।” मूसा ने ऐसा किया। जब उसने अपना हाथ दुबारा निकाला तो वह फिर सेहतमंद था।

8 रब ने कहा, “अगर लोगों को पहला मोज़िज़ा देखकर यक्रीन न आए और वह तेरी न सुनें तो शायद उन्हें दूसरा मोज़िज़ा देखकर यक्रीन आए।

9 अगर उन्हें फिर भी यक्रीन न आए और वह तेरी न सुनें तो दरियाए-नील से कुछ पानी निकालकर उसे खुशक ज़मीन पर उंडेल दे। यह पानी ज़मीन पर गिरते ही खून बन जाएगा।”

10 लेकिन मूसा ने कहा, “मेरे आका, मैं माज़रत चाहता हूँ, मैं अच्छी तरह बात नहीं कर सकता बल्कि मैं कभी भी यह लियाक़त नहीं रखता था। इस वक़्त भी जब मैं तुझसे बात कर रहा हूँ मेरी यही हालत है। मैं स्क़ स्क़कर बोलता हूँ।”

11 रब ने कहा, “किसने इनसान का मुँह बनाया? कौन एक को गुँगा और दूसरे को बहरा बना देता है? कौन एक को देखने की काबिलियत देता है और दूसरे को इससे महरूम रखता है? क्या मैं जो रब हूँ यह सब कुछ नहीं करता?”

12 अब जा! तेरे बोलते वक़्त मैं खुद तेरे साथ हूँगा और तुझे वह कुछ सिखाऊँगा जो तुझे कहना है।”

13 लेकिन मूसा ने इल्लिजा की, “मेरे आका, मेहरबानी करके किसी और को भेज दे।”

14 तब रब मूसा से सख्त खफ़ा हुआ। उसने कहा, “क्या तेरा लावी भाई हारून ऐसे काम के लिए हाज़िर नहीं है? मैं जानता हूँ कि वह अच्छी तरह बोल सकता है। देख, वह तुझसे मिलने के लिए निकल चुका है। तुझे देखकर वह निहायत खुश होगा।

15 उसे वह कुछ बता जो उसे कहना है। तुम्हारे बोलते वक़्त मैं तेरे और उसके साथ हूँगा और तुम्हें वह कुछ सिखाऊँगा जो तुम्हें करना होगा।

16 हारून तेरी जगह क्रौम से बात करेगा जबकि तू मेरी तरह उसे वह कुछ बताएगा जो उसे कहना है।

17 लेकिन यह लाठी भी साथ ले जाना, क्योंकि इसी के ज़रीए तू यह मोज़िज़े करेगा।”

मूसा मिसर को लौट जाता है

18 फिर मूसा अपने सुसर यितरो के घर वापस चला गया। उसने कहा, “मुझे ज़रा अपने अज़ीज़ों के पास वापस जाने दें जो मिसर में हैं। मैं मालूम करना चाहता हूँ कि वह अभी तक ज़िंदा हैं कि नहीं।” यितरो ने जवाब दिया, “ठीक है, सलामती से जाएँ।”

19 मूसा अभी मिदियान में था कि रब ने उससे कहा, “मिसर को वापस चला जा, क्योंकि जो आदमी तुझे क़त्ल करना चाहते थे वह मर गए हैं।”

20 चुनौचे मूसा अपनी बीवी और बेटों को गधे पर सवार करके मिसर को लौटने लगा। अल्लाह की लाठी उसके हाथ में थी।

21 रब ने उससे यह भी कहा, “मिसर जाकर फिरौन के सामने वह तमाम मोज़िज़े दिखा जिनका मैंने तुझे इख़्तियार दिया है। लेकिन मेरे कहने पर वह अड्डा रहेगा। वह इसराईलियों को जाने की इजाज़त नहीं देगा।

22 उस वक़्त फिरौन को बता देना, ‘रब फ़रमाता है कि इसराईल मेरा पहलौठा है।

23 मैं तुझे बता चुका हूँ कि मेरे बेटे को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत करे। अगर तू मेरे बेटे को जाने से मना करे तो मैं तेरे पहलौठे को जान से मार दूँगा।”

24 एक दिन जब मूसा अपने खानदान के साथ रास्ते में किसी सराय में ठहरा हुआ था तो रब ने उस पर हमला करके उसे मार देने की कोशिश की।

25 यह देखकर सफ़फ़ूरा ने एक तेज़ पत्थर से अपने बेटे का खतना किया और काटे हुए हिस्से से मूसा के पैर छुए। उसने कहा, “यकीनन तुम मेरे खूनी दूल्हा हो।”

26 तब अल्लाह ने मूसा को छोड़ दिया। सफ़फ़ूरा ने उसे खतने के बाइस ही ‘खूनी दूल्हा’ कहा था।

27 रब ने हासून से भी बात की, “रेगिस्तान में मूसा से मिलने जा।” हासून चल पड़ा और अल्लाह के पहाड़ के पास मूसा से मिला। उसने उसे बोसा दिया।

28 मूसा ने हासून को सब कुछ सुना दिया जो रब ने उसे कहने के लिए भेजा था। उसने उसे उन मोजिज़ों के बारे में भी बताया जो उसे दिखाने थे।

29 फिर दोनों मिलकर मिसर गए। वहाँ पहुँचकर उन्होंने इसराईल के तमाम बुजुर्गों को जमा किया।

30 हासून ने उन्हें वह तमाम बातें सुनाई जो रब ने मूसा को बताई थीं। उसने मज़कूरा मोजिज़े भी लोगों के सामने दिखाए।

31 फिर उन्हें यकीन आया। और जब उन्होंने सुना कि रब को तुम्हारा खयाल है और वह तुम्हारी मुसीबत से आगाह है तो उन्होंने रब को सिजदा किया।

5

मूसा और हासून फिरौन के दरबार में

1 फिर मूसा और हासून फिरौन के पास गए। उन्होंने कहा, “रब इसराईल का खुदा फ़रमाता है, ‘मेरी क्रौम को रेगिस्तान में जाने दे ताकि वह मेरे लिए ईद मनाएँ।’”

2 फिरौन ने जवाब दिया, “यह रब कौन है? मैं क्यों उसका हुक्म मानकर इसराईलियों को जाने दूँ? न मैं रब को जानता हूँ, न इसराईलियों को जाने दूँगा।”

3 हासून और मूसा ने कहा, “इबरानियों का खुदा हम पर ज़ाहिर हुआ है। इसलिए मेहरबानी करके हमें इजाज़त दें कि रेगिस्तान में तीन दिन का सफ़र करके रब अपने खुदा के हुज़ूर कुरबानियों पेश करें। कहीं वह हमें किसी बीमारी या तलवार से न मारे।”

4 लेकिन मिसर के बादशाह ने इनकार किया, “मूसा और हासून, तुम लोगों को काम से क्यों रोक रहे हो? जाओ, जो काम हमने तुमको दिया है उस पर लग जाओ!”

5 इसराईली वैसे भी तादाद में बहुत बढ़ गए हैं, और तुम उन्हें काम करने से रोक रहे हो।”

जवाब में फिरौन का सख्त दबाव

6 उसी दिन फिरौन ने मिसरी निगरानों और उनके तहत के इसराईली निगरानों को हुक्म दिया,

7 “अब से इसराईलियों को ईंटें बनाने के लिए भूसा मत देना, बल्कि वह खुद जाकर भूसा जमा करें।

8 तो भी वह उतनी ही ईंटें बनाएँ जितनी पहले बनाते थे। वह सुस्त हो गए हैं और इसी लिए चीख रहे हैं कि हमें जाने दें ताकि अपने खुदा को कुरबानियाँ पेश करें।

9 उनसे और ज्यादा सख्त काम कराओ, उन्हें काम में लगाए रखो। उनके पास इतना वक्त ही न हो कि वह झूटी बातों पर ध्यान दें।”

10 मिसरी निगरान और उनके तहत के इसराईली निगरानों ने लोगों के पास जाकर उनसे कहा, “फिरौन का हुक्म है कि तुम्हें भूसा न दिया जाए।

11 इसलिए खुद जाओ और भूसा ढूँडकर जमा करो। लेकिन खबरदार! उतनी ही ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाते थे।”

12 यह सुनकर इसराईली भूसा जमा करने के लिए पूरे मुल्क में फैल गए।

13 मिसरी निगरान यह कहकर उन पर दबाव डालते रहे कि उतनी ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाते थे।

14 जो इसराईली निगरान उन्होंने मुर्करर किए थे उन्हें वह पीटते और कहते रहे, “तुमने कल और आज उतनी ईंटें क्यों नहीं बनवाई जितनी पहले बनवाते थे?”

15 फिर इसराईली निगरान फिरौन के पास गए। उन्होंने शिकायत करके कहा, “आप अपने खादिमों के साथ ऐसा सुलूक क्यों कर रहे हैं?”

16 हमें भूसा नहीं दिया जा रहा और साथ साथ यह कहा गया है कि उतनी ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाते थे। नतीजे में हमें मारा पीटा भी जा रहा है हालाँकि ऐसा करने में आपके अपने लोग गलती पर हैं।”

17 फिरौन ने जवाब दिया, “तुम लोग सुस्त हो, तुम काम करना नहीं चाहते। इसलिए तुम यह जगह छोड़ना और रब को कुरबानियाँ पेश करना चाहते हो।

18 अब जाओ, काम करो। तुम्हें भूसा नहीं दिया जाएगा, लेकिन खबरदार! उतनी ही ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाते थे।”

19 जब इसराईली निगरानों को बताया गया कि ईंटों की मतलूबा तादाद कम न करो तो वह समझ गए कि हम फँस गए हैं।

20 फिरौन के महल से निकलकर उनकी मुलाकात मूसा और हासून से हुई जो उनके इंतज़ार में थे।

21 उन्होंने मूसा और हासून से कहा, “रब खुद आपकी अदालत करे। क्योंकि आपके सबब से फिरौन और उसके मुलाज़िमों को हमसे धिन आती है। आपने उन्हें हमें मार देने का मौका दे दिया है।”

मूसा की शिकायत और रब का जवाब

22 यह सुनकर मूसा रब के पास वापस आया और कहा, “ऐ आक्रा, तूने इस कौम से ऐसा बुरा सुलूक क्यों किया? क्या तूने इसी मक़सद से मुझे यहाँ भेजा है?”

23 जब से मैंने फिरौन के पास जाकर उसे तेरी मरज़ी बताई है वह इसराईली कौम से बुरा सुलूक कर रहा है। और तूने अब तक उन्हें बचाने का कोई क़दम नहीं उठाया।”

6

1 रब ने जवाब दिया, “अब तू देखेगा कि मैं फिरौन के साथ क्या कुछ करता हूँ। मेरी अज़ीम कुदरत का तज़रबा करके वह मेरे लोगों को जाने देगा बल्कि उन्हें जाने पर मजबूर करेगा।”

2 अल्लाह ने मूसा से यह भी कहा, “मैं रब हूँ।

3 मैं इब्राहीम, इसहाक और याकूब पर ज़ाहिर हुआ। वह मेरे नाम अल्लाह कादिर-मुतलक * से वाकिफ़ हुए, लेकिन मैंने उन पर अपने नाम रब † का इनकिशाफ़ नहीं किया।

4 मैंने उनसे अहद करके वादा किया कि उन्हें मुल्के-कनान दूँगा जिसमें वह अज़नबी के तौर पर रहते थे।

5 अब मैंने सुना है कि इसराईली किस तरह मिसरियों की गुलामी में कराह रहे हैं, और मैंने अपना अहद याद किया है।

6 चुनौचे इसराईलियों को बताना, “मैं रब हूँ। मैं तुम्हें मिसरियों के जुए से आज़ाद करूँगा और उनकी गुलामी से बचाऊँगा। मैं बड़ी कुदरत के साथ तुम्हें छुड़ाऊँगा और उनकी अदालत करूँगा।

* 6:3 इबरानी में एल-शदई। † 6:3 इबरानी में यहवे।

7 मैं तुम्हें अपनी क्रौम बनाऊँगा और तुम्हारा ख़ुदा हूँगा। तब तुम जान लोगे कि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ जिसने तुम्हें मिसरियों के जुए से आज़ाद कर दिया है।

8 मैं तुम्हें उस मुल्क में ले जाऊँगा जिसका वादा मैंने कसम खाकर इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से किया है। वह मुल्क तुम्हारी अपनी मिलकियत होगा। मैं रब हूँ।”

9 मूसा ने यह सब कुछ इसराईलियों को बता दिया, लेकिन उन्होंने उस की बात न मानी, क्योंकि वह सख्त काम के बाइस हिम्मत हार गए थे।

10 तब रब ने मूसा से कहा,

11 “जा, मिसर के बादशाह फिरौन को बता देना कि इसराईलियों को अपने मुल्क से जाने दे।”

12 लेकिन मूसा ने एतराज़ किया, “इसराईली मेरी बात सुनना नहीं चाहते तो फिरौन क्यों मेरी बात माने जबकि मैं स्क़ स्क़कर बोलता हूँ?”

13 लेकिन रब ने मूसा और हासून को हुक्म दिया, “इसराईलियों और मिसर के बादशाह फिरौन से बात करके इसराईलियों को मिसर से निकालो।”

मूसा और हासून के आबा-ओ-अजदाद

14 इसराईल के आबाई घरानों के सरबराह यह थे : इसराईल के पहलौठे रूबिन के चार बेटे हनूक, फ़ल्लू, हसरोन और करमी थे। इनसे रूबिन की चार शाखें निकलीं।

15 शमौन के पाँच बेटे यमुएल, यमीन, उहद, यकीन, सुहर और साऊल थे। (साऊल कनानी औरत का बच्चा था)। इनसे शमौन की पाँच शाखें निकलीं।

16 लावी के तीन बेटे जैरसोन, किहात और मिरारी थे। (लावी 137 साल की उम्र में फ़ौत हुआ)।

17 जैरसोन के दो बेटे लिबनी और सिमई थे। इनसे जैरसोन की दो शाखें निकलीं।

18 किहात के चार बेटे अमराम, इज़हार, हबसून और उज़्जियेल थे। (किहात 133 साल की उम्र में फ़ौत हुआ)।

19 मिरारी के दो बेटे महली और मूशी थे। इन सबसे लावी की मुख्तलिफ़ शाखें निकलीं।

20 अमराम ने अपनी फूफी यूकबिद से शादी की। उनके दो बेटे हासून और मूसा पैदा हुए। (अमराम 137 साल की उम्र में फ़ौत हुआ)।

- 21 इज़हार के तीन बेटे कोरह, नफ़ज और ज़िकरी थे।
 22 उज़्ज़ियेल के तीन बेटे मीसाएल, इल्सफ़न और सितरी थे।
 23 हारून ने इलीसिबा से शादी की। (इलीसिबा अम्मीनदाब की बेटी और नहसोन की बहन थी)। उनके चार बेटे नदब, अबीह, इलियज़र और इतमर थे।
 24 कोरह के तीन बेटे अस्सीर, इलकाना और अबियासफ़ थे। उनसे कोरहियों की तीन शाखें निकलीं।
 25 हारून के बेटे इलियज़र ने फ़ूतियेल की एक बेटी से शादी की। उनका एक बेटा फ़ीनहास था।
 यह सब लावी के आबाई घरानों के सरबराह थे।
 26 रब ने अमराम के दो बेटों हारून और मूसा को हुक्म दिया कि मेरी क़ौम को उसके ख़ानदानों की तरतीब के मुताबिक़ मिसर से निकालो।
 27 इन्हीं दो आदमियों ने मिसर के बादशाह फ़िरौन से बात की कि इसराईलियों को मिसर से जाने दे।

रब दुबारा मूसा से हमकलाम होता है

- 28 मिसर में रब ने मूसा से कहा,
 29 “मैं रब हूँ। मिसर के बादशाह को वह सब कुछ बता देना जो मैं तुझे बताता हूँ।”
 30 मूसा ने एतराज़ किया, “मैं तो स्क्र स्क्रकर बोलता हूँ। फ़िरौन किस तरह मेरी बात मानेगा?”

7

- 1 लेकिन रब ने कहा, “देख, मेरे कहने पर तू फ़िरौन के लिए अल्लाह की हैसियत रखेगा और तेरा भाई हारून तेरा पैग़ंबर होगा।
 2 जो भी हुक्म मैं तुझे दूँगा उसे तू हारून को बता दे। फिर वह सब कुछ फ़िरौन को बताए ताकि वह इसराईलियों को अपने मुल्क से जाने दे।
 3 लेकिन मैं फ़िरौन को अड जाने दूँगा। अगरचे मैं मिसर में बहुत-से निशानों और मोज़िज़ों से अपनी कुदरत का मुज़ाहरा करूँगा
 4 तो भी फ़िरौन तुम्हारी नहीं सुनेगा। तब मिसरियों पर मेरा हाथ भारी हो जाएगा, और मैं उनको सख़्त सज़ा देकर अपनी क़ौम इसराईल को ख़ानदानों की तरतीब के मुताबिक़ मिसर से निकाल लाऊँगा।

5 जब मैं मिसर के खिलाफ अपनी कुदरत का इजहार करके इसराईलियों को वहाँ से निकालूँगा तो मिसरी जान लेंगे कि मैं रब हूँ।”

6 मूसा और हासून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने उन्हें हुक्म दिया।

7 फिरौन से बात करते वक़्त मूसा 80 साल का और हासून 83 साल का था।

मूसा की लाठी साँप बन जाती है

8 रब ने मूसा और हासून से कहा,

9 “जब फिरौन तुम्हें मोजिज़ा दिखाने को कहेगा तो मूसा हासून से कहे कि अपनी लाठी ज़मीन पर डाल दे। इस पर वह साँप बन जाएगी।”

10 मूसा और हासून ने फिरौन के पास जाकर ऐसा ही किया। हासून ने अपनी लाठी फिरौन और उसके ओहदेदारों के सामने डाल दी तो वह साँप बन गई।

11 यह देखकर फिरौन ने अपने आलिमों और जादूगरों को बुलाया। जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा ही किया।

12 हर एक ने अपनी लाठी ज़मीन पर फेंकी तो वह साँप बन गई। लेकिन हासून की लाठी ने उनकी लाठियों को निगल लिया।

13 ताहम फिरौन इससे मुतअस्सिर न हुआ। उसने मूसा और हासून की बात सुनने से इनकार किया। वैसा ही हुआ जैसा रब ने कहा था।

पानी खून में बदल जाता है

14 फिर रब ने मूसा से कहा, “फिरौन अड़ गया है। वह मेरी क्रौम को मिसर छोड़ने से रोकता है।

15 कल सुबह-सवेरे जब वह दरियाए-नील पर आएगा तो उससे मिलने के लिए दरिया के किनारे पर खड़े हो जाना। उस लाठी को थामे रखना जो साँप बन गई थी।

16 जब वह वहाँ पहुँचे तो उससे कहना, ‘रब इबरानियों के खुदा ने मुझे आपको यह बताने के लिए भेजा है कि मेरी क्रौम को मेरी इबादत करने के लिए रेगिस्तान में जाने दे। लेकिन आपने अभी तक उस की नहीं सुनी।

17 चुनौचे अब आप जान लेंगे कि वह रब है। मैं इस लाठी को जो मेरे हाथ में है लेकर दरियाए-नील के पानी को मारूँगा। फिर वह खून में बदल जाएगा।

18 दरियाए-नील की मछलियाँ मर जाएँगी, दरिया से बदबू उठेगी और मिसरी दरिया का पानी नहीं पी सकेंगे।”

19 रब ने मूसा से कहा, “हारून को बता देना कि वह अपनी लाठी लेकर अपना हाथ उन तमाम जगहों की तरफ बढ़ाए जहाँ पानी जमा होता है। तब मिसर की तमाम नदियों, नहरों, जोहड़ों और तालाबों का पानी खून में बदल जाएगा। पूरे मुल्क में खून ही खून होगा, यहाँ तक कि लकड़ी और पत्थर के बरतनों का पानी भी खून में बदल जाएगा।”

20 चुनौचे मूसा और हारून ने फिरौन और उसके ओहदेदारों के सामने अपनी लाठी उठाकर दरियाए-नील के पानी पर मारी। इस पर दरिया का सारा पानी खून में बदल गया।

21 दरिया की मछलियाँ मर गईं, और उससे इतनी बदबू उठने लगी कि मिसरी उसका पानी न पी सके। मिसर में चारों तरफ खून ही खून था।

22 लेकिन जादूगरों ने भी अपने जादू के ज़रीए ऐसा ही किया। इसलिए फिरौन अड़ गया और मूसा और हारून की बात न मानी। वैसा ही हुआ जैसा रब ने कहा था।

23 फिरौन पलटकर अपने घर वापस चला गया। उसे उस की परवा नहीं थी जो मूसा और हारून ने किया था।

24 लेकिन मिसरी दरिया से पानी न पी सके, और उन्होंने पीने का पानी हासिल करने के लिए दरिया के किनारे किनारे गढे खोदे।

25 पानी के बदल जाने के बाद सात दिन गुज़र गए।

8

मेंढक

1 फिर रब ने मूसा से कहा, “फिरौन के पास जाकर उसे बता देना कि रब फरमाता है, ‘मेरी क्रौम को मेरी इबादत करने के लिए जाने दे,

2 वरना मैं पूरे मिसर को मेंढकों से सज़ा दूँगा।

3 दरियाए-नील मेंढकों से इतना भर जाएगा कि वह दरिया से निकलकर तेरे महल, तेरे सोने के कमरे और तेरे बिस्तर में जा घुसेंगे। वह तेरे ओहदेदारों और तेरी रिआया के घरों में आएँगे बल्कि तेरे तनूरों और आटा गूँधने के बरतनों में भी फुदकते फिरेंगे।

4 मेंढक तुझ पर, तेरी क्रौम पर और तेरे ओहदेदारों पर चढ़ जाएँगे।”

5 रब ने मूसा से कहा, “हासून को बता देना कि वह अपनी लाठी को हाथ में लेकर उसे दरियाओं, नहरों और जोहड़ों के ऊपर उठाए ताकि मेंढक बाहर निकलकर मिसर के मुल्क में फैल जाएँ।”

6 हासून ने मुल्के-मिसर के पानी के ऊपर अपनी लाठी उठाई तो मेंढकों के गोल पानी से निकलकर पूरे मुल्क पर छा गए।

7 लेकिन जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा ही किया। वह भी दरिया से मेंढक निकाल लाए।

8 फिरौन ने मूसा और हासून को बुलाकर कहा, “रब से दुआ करो कि वह मुझसे और मेरी क्रौम से मेंढकों को दूर करे। फिर मैं तुम्हारी क्रौम को जाने दूँगा ताकि वह रब को कुरबानियाँ पेश करें।”

9 मूसा ने जवाब दिया, “वह वक्त मुकर्रर करें जब मैं आपके ओहदेदारों और आपकी क्रौम के लिए दुआ करूँ। फिर जो मेंढक आपके पास और आपके घरों में हैं उसी वक्त खत्म हो जाएंगे। मेंढक सिर्फ दरिया में पाए जाएंगे।”

10 फिरौन ने कहा, “ठीक है, कल उन्हें खत्म करो।” मूसा ने कहा, “जैसा आप कहते हैं वैसा ही होगा। इस तरह आपको मालूम होगा कि हमारे खुदा की मानिंद कोई नहीं है।

11 मेंढक आप, आपके घरों, आपके ओहदेदारों और आपकी क्रौम को छोड़कर सिर्फ दरिया में रह जाएंगे।”

12 मूसा और हासून फिरौन के पास से चले गए, और मूसा ने रब से मिन्नत की कि वह मेंढकों के वह गोल दूर करे जो उसने फिरौन के खिलाफ भेजे थे।

13 रब ने उस की दुआ सुनी। घरों, सहनों और खेतों में मेंढक मर गए।

14 लोगों ने उन्हें जमा करके उनके ढेर लगा दिए। उनकी बदबू पूरे मुल्क में फैल गई।

15 लेकिन जब फिरौन ने देखा कि मसला हल हो गया है तो वह फिर अकड़ गया और उनकी न सुनी। यों रब की बात दुस्त निकली।

जुँ

16 फिर रब ने मूसा से कहा, “हासून से कहना कि वह अपनी लाठी से ज़मीन की गर्द को मारे। जब वह ऐसा करेगा तो पूरे मिसर की गर्द जुओं में बदल जाएगी।”

17 उन्होंने ऐसा ही किया। हासून ने अपनी लाठी से ज़मीन की गर्द को मारा तो पूरे मुल्क की गर्द जुओं में बदल गई। उनके गोल जानवरों और आदमियों पर छा गए।

18 जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा करने की कोशिश की, लेकिन वह गर्द से जुएँ न बना सके। जुएँ आदमियों और जानवरों पर छा गईं।

19 जादूगरों ने फिरौन से कहा, “अल्लाह की कुदरत ने यह किया है।” लेकिन फिरौन ने उनकी न सुनी। यों रब की बात दुस्त निकली।

काटनेवाली मक्खियाँ

20 फिर रब ने मूसा से कहा, “जब फिरौन सुबह-सवेरे दरिया पर जाए तो तू उसके रास्ते में खड़ा हो जाना। उसे कहना कि रब फरमाता है, ‘मेरी क्रौम को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत कर सकें।’

21 वरना मैं तेरे और तेरे ओहदेदारों के पास, तेरी क्रौम के पास और तेरे घरों में काटनेवाली मक्खियाँ भेज दूँगा। मिसरियों के घर मक्खियों से भर जाएंगे बल्कि जिस ज़मीन पर वह खड़े हैं वह भी मक्खियों से ढाँकी जाएगी।

22 लेकिन उस वक्त मैं अपनी क्रौम के साथ जो जुशन में रहती है फरक सुलूक करूँगा। वहाँ एक भी काटनेवाली मक्खी नहीं होगी। इस तरह तुझे पता लगेगा कि इस मुल्क में मैं ही रब हूँ।

23 मैं अपनी क्रौम और तेरी क्रौम में इम्तियाज़ करूँगा। कल ही मेरी कुदरत का इज़हार होगा।”

24 रब ने ऐसा ही किया। काटनेवाली मक्खियों के गोल फिरौन के महल, उसके ओहदेदारों के घरों और पूरे मिसर में फैल गए। मुल्क का सत्यानास हो गया।

25 फिर फिरौन ने मूसा और हासून को बुलाकर कहा, “चलो, इसी मुल्क में अपने खुदा को कुरबानियाँ पेश करो।”

26 लेकिन मूसा ने कहा, “यह मुनासिब नहीं है। जो कुरबानियाँ हम रब अपने खुदा को पेश करेंगे वह मिसरियों की नज़र में धिनौनी हैं। अगर हम यहाँ ऐसा करें तो क्या वह हमें संगसार नहीं करेंगे?”

27 इसलिए लाज़िम है कि हम तीन दिन का सफ़र करके रेगिस्तान में ही रब अपने खुदा को कुरबानियाँ पेश करें जिस तरह उसने हमें हुक्म भी दिया है।”

28 फिरौन ने जवाब दिया, “ठीक है, मैं तुम्हें जाने दूँगा ताकि तुम रेगिस्तान में रब अपने खुदा को कुरबानियाँ पेश करो। लेकिन तुम्हें ज्यादा दूर नहीं जाना है। और मेरे लिए भी दुआ करना।”

29 मूसा ने कहा, “ठीक, मैं जाते ही रब से दुआ करूँगा। कल ही मक्खियाँ फिरौन, उसके ओहदेदारों और उस की क्रौम से दूर हो जाएँगी। लेकिन हमें दुबारा फरेब न देना बल्कि हमें जाने देना ताकि हम रब को कुरबानियाँ पेश कर सकें।”

30 फिर मूसा फिरौन के पास से चला गया और रब से दुआ की।

31 रब ने मूसा की दुआ सुनी। काटनेवाली मक्खियाँ फिरौन, उसके ओहदेदारों और उस की क्रौम से दूर हो गईं। एक भी मक्खी न रही।

32 लेकिन फिरौन फिर अकड़ गया। उसने इसराइलियों को जाने न दिया।

9

मवेशियों में वबा

1 फिर रब ने मूसा से कहा, “फिरौन के पास जाकर उसे बता कि रब इबरानियों का खुदा फरमाता है, ‘मेरी क्रौम को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत कर सकें।’

2 अगर आप इनकार करें और उन्हें रोकते रहें

3 तो रब अपनी कुदरत का इज़हार करके आपके मवेशियों में भयानक वबा फैला देगा जो आपके घोड़ों, गधों, ऊँटों, गाय-बैलों, भेड़-बकरियों और मेंढों में फैल जाएगी।

4 लेकिन रब इसराइल और मिसर के मवेशियों में इम्तियाज़ करेगा। इसराइलियों का एक भी जानवर नहीं मरेगा।

5 रब ने फैसला कर लिया है कि वह कल ही ऐसा करेगा।”

6 अगले दिन रब ने ऐसा ही किया। मिसर के तमाम मवेशी मर गए, लेकिन इसराइलियों का एक भी जानवर न मरा।

7 फिरौन ने कुछ लोगों को उनके पास भेज दिया तो पता चला कि एक भी जानवर नहीं मरा। ताहम फिरौन अड़ा रहा। उसने इसराइलियों को जाने न दिया।

फोड़े-फुंसियाँ

8 फिर रब ने मूसा और हारून से कहा, “अपनी मुठियाँ किसी भट्टी की राख से भरकर फिरौन के पास जाओ। फिर मूसा फिरौन के सामने यह राख हवा में उड़ा दे।

9 यह राख बारीक धूल का बादल बन जाएगी जो पूरे मुल्क पर छा जाएगा। उसके असर से लोगों और जानवरों के जिस्मों पर फोड़े-फुंसियाँ फूट निकलेंगी।”

10 मूसा और हारून ने ऐसा ही किया। वह किसी भट्टी से राख लेकर फिरौन के सामने खड़े हो गए। मूसा ने राख को हवा में उड़ा दिया तो इनसानों और जानवरों के जिस्मों पर फोड़े-फुंसियाँ निकल आए।

11 इस मरतबा जादूगर मूसा के सामने खड़े भी न हो सके क्योंकि उनके जिस्मों पर भी फोड़े निकल आए थे। तमाम मिसरियों का यही हाल था।

12 लेकिन रब ने फिरौन को जिद्दी बनाए रखा, इसलिए उसने मूसा और हारून की न सुनी। यों वैसा ही हुआ जैसा रब ने मूसा को बताया था।

ओले

13 इसके बाद रब ने मूसा से कहा, “सुबह-सवेरे उठ और फिरौन के सामने खड़े होकर उसे बता कि रब इबरानियों का खुदा फरमाता है, ‘मेरी क्रौम को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत कर सकें।

14 वरना मैं अपनी तमाम आफतें तुझ पर, तेरे ओहदेदारों पर और तेरी क्रौम पर आने दूँगा। फिर तू जान लेगा कि तमाम दुनिया में मुझ जैसा कोई नहीं है।

15 अगर मैं चाहता तो अपनी कुदरत से ऐसी वबा फैला सकता कि तुझे और तेरी क्रौम को दुनिया से मिटा दिया जाता।

16 लेकिन मैंने तुझे इसलिए बरपा किया है कि तुझ पर अपनी कुदरत का इज़हार करूँ और यों तमाम दुनिया में मेरे नाम का प्रचार किया जाए।

17 तू अभी तक अपने आपको सरफराज़ करके मेरी क्रौम के खिलाफ है और उन्हें जाने नहीं देता।

18 इसलिए कल मैं इसी वक़्त भयानक किस्म के ओलों का तूफान भेज दूँगा। मिसरी क्रौम की इब्तिदा से लेकर आज तक मिसर में ओलों का ऐसा तूफान कभी नहीं आया होगा।

19 अपने बंदों को अभी भेजना ताकि वह तेरे मवेशियों को और खेतों में पड़े तेरे माल को लाकर महफूज़ कर लें। क्योंकि जो भी खुले मैदान में रहेगा वह ओलों से मर जाएगा, खाह इनसान हो या हैवान’।”

20 फिरौन के कुछ ओहदेदार रब का पैगाम सुनकर डर गए और भागकर अपने जानवरों और गुलामों को घरों में ले आए।

21 लेकिन दूसरों ने रब के पैगाम की परवा न की। उनके जानवर और गुलाम बाहर खुले मैदान में रहे।

22 रब ने मूसा से कहा, “अपना हाथ आसमान की तरफ बढ़ा दे। फिर मिसर के तमाम इनसानों, जानवरों और खेतों के पौदों पर ओले पड़ेंगे।”

23 मूसा ने अपनी लाठी आसमान की तरफ उठाई तो रब ने एक ज़बरदस्त तूफान भेज दिया। ओले पड़े, बिजली गिरी और बादल गरजते रहे।

24 ओले पड़ते रहे और बिजली चमकती रही। मिसरी क्रौम की इब्टिदा से लेकर अब तक ऐसे खतरनाक ओले कभी नहीं पड़े थे।

25 इनसानों से लेकर हैवानों तक खेतों में सब कुछ बरबाद हो गया। ओलों ने खेतों में तमाम पौदे और दरख्त भी तोड़ दिए।

26 वह सिर्फ़ जुशन के इलाक़े में न पड़े जहाँ इसराईली आबाद थे।

27 तब फिरौन ने मूसा और हारून को बुलाया। उसने कहा, “इस मरतबा मैंने गुनाह किया है। रब हक़ पर है। मुझसे और मेरी क्रौम से गलती हुई है।

28 ओले और अल्लाह की गरजती आवाज़ें हद से ज्यादा हैं। रब से दुआ करो ताकि ओले स्क जाएँ। अब मैं तुम्हें जाने दूँगा। अब से तुम्हें यहाँ रहना नहीं पड़ेगा।”

29 मूसा ने फिरौन से कहा, “मैं शहर से निकलकर दोनों हाथ रब की तरफ़ उठाकर दुआ करूँगा। फिर गरज और ओले स्क जाएंगे और आप जान लेंगे कि पूरी दुनिया रब की है।

30 लेकिन मैं जानता हूँ कि आप और आपके ओहदेदार अभी तक रब खुदा का ख़ौफ़ नहीं मानते।”

31 उस वक़्त सन के फूल निकल चुके थे और जौ की बालें लग गई थीं। इसलिए यह फ़सलें तबाह हो गईं।

32 लेकिन गेहूँ और एक और किस्म की गंदुम जो बाद में पकती है बरबाद न हुईं।

33 मूसा फिरौन को छोड़कर शहर से निकला। उसने रब की तरफ़ अपने हाथ उठाए तो गरज, ओले और बारिश का तूफान स्क गया।

34 जब फिरौन ने देखा कि तूफान खत्म हो गया है तो वह और उसके ओहदेदार दुबारा गुनाह करके अकड़ गए।

35 फिरौन अड़ा रहा और इसराईलियों को जाने न दिया। वैसा ही हुआ जैसा रब ने मूसा से कहा था।

10

टिट्टियाँ

1 फिर रब ने मूसा से कहा, “फिरौन के पास जा, क्योंकि मैंने उसका और उसके दरबारियों का दिल सख्त कर दिया है ताकि उनके दरमियान अपने मोजिज़ों और अपनी कुदरत का इज़हार कर सकूँ

2 और तुम अपने बेटे-बेटियों और पोते-पोतियों को सुना सको कि मैंने मिसरियों के साथ क्या सुलूक किया है और उनके दरमियान किस तरह के मोजिज़े करके अपनी कुदरत का इज़हार किया है। यों तुम जान लोगे कि मैं रब हूँ।”

3 मूसा और हारून फिरौन के पास गए। उन्होंने उससे कहा, “रब इबरानियों के खुदा का फ़रमान है, ‘तू कब तक मेरे सामने हथियार डालने से इनकार करेगा? मेरी क्रौम को मेरी इबादत करने के लिए जाने दे,

4 वरना मैं कल तेरे मुल्क में टिट्टियाँ लाऊँगा।

5 उनके गोल ज़मीन पर यों छा जाएंगे कि ज़मीन नज़र ही नहीं आएगी। जो कुछ ओलों ने तबाह नहीं किया उसे वह चट कर जाएँगी। बचे हुए दरख्तों के पत्ते भी खत्म हो जाएंगे।

6 तेरे महल, तेरे ओहदेदारों और बाक़ी लोगों के घर उनसे भर जाएंगे। जब से मिसरी इस मुल्क में आबाद हुए हैं तुमने कभी टिट्टियों का ऐसा सख्त हमला नहीं देखा होगा।” यह कहकर मूसा पलटकर वहाँ से चला गया।

7 इस पर दरबारियों ने फिरौन से बात की, “हम कब तक इस मर्द के जाल में फँसे रहें? इसराईलियों को रब अपने खुदा की इबादत करने के लिए जाने दें। क्या आपको अभी तक मालूम नहीं कि मिसर बरबाद हो गया है?”

8 तब मूसा और हारून को फिरौन के पास बुलाया गया। उसने उनसे कहा, “जाओ, अपने खुदा की इबादत करो। लेकिन यह बताओ कि कौन कौन साथ जाएगा?”

9 मूसा ने जवाब दिया, “हमारे जवान और बूढ़े साथ जाएंगे। हम अपने बेटे-बेटियों, भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को भी साथ लेकर जाएंगे। हम सबके सब जाएंगे, क्योंकि हमें रब की ईद मनानी है।”

10 फिरौन ने तंज़न कहा, “ठीक है, जाओ और रब तुम्हारे साथ हो। नहीं, मैं किस तरह तुम सबको बाल-बच्चों समेत जाने दे सकता हूँ? तुमने कोई बुरा मनसूबा बनाया है।

11 नहीं, सिर्फ मर्द जाकर रब की इबादत कर सकते हैं। तुमने तो यही दरखास्त की थी।” तब मूसा और हारून को फिरौन के सामने से निकाल दिया गया।

12 फिर रब ने मूसा से कहा, “मिसर पर अपना हाथ उठा ताकि टिट्टियाँ आकर मिसर की सरज़मीन पर फैल जाएँ। जो कुछ भी खेतों में ओलों से बच गया है उसे वह खा जाएँगी।”

13 मूसा ने अपनी लाठी मिसर पर उठाई तो रब ने मशरिक से आँधी चलाई जो सारा दिन और सारी रात चलती रही और अगली सुबह तक मिसर में टिट्टियाँ पहुँचाईं।

14 बेशुमार टिट्टियाँ पूरे मुल्क पर हमला करके हर जगह बैठ गईं। इससे पहले या बाद में कभी भी टिट्टियों का इतना सख्त हमला न हुआ था।

15 उन्होंने ज़मीन को यों ढाँक लिया कि वह काली नज़र आने लगी। जो कुछ भी ओलों से बच गया था चाहे खेतों के पौदे या दरख्तों के फल थे उन्होंने खा लिया। मिसर में एक भी दरख्त या पौदा न रहा जिसके पत्ते बच गए हों।

16 तब फिरौन ने मूसा और हारून को जल्दी से बुलवाया। उसने कहा, “मैंने तुम्हारे ख़ुदा का और तुम्हारा गुनाह किया है।

17 अब एक और मरतबा मेरा गुनाह मुआफ़ करो और रब अपने ख़ुदा से दुआ करो ताकि मौत की यह हालत मुझसे दूर हो जाए।”

18 मूसा ने महल से निकलकर रब से दुआ की।

19 जवाब में रब ने हवा का सूख बदल दिया। उसने मगरिब से तेज़ आँधी चलाई जिसने टिट्टियों को उड़ाकर बहरे-कुलज़ुम में डाल दिया। मिसर में एक भी टिट्टी न रही।

20 लेकिन रब ने होने दिया कि फिरौन फिर अड़ गया। उसने इसराईलियों को जाने न दिया।

अंधेरा

21 इसके बाद रब ने मूसा से कहा, “अपना हाथ आसमान की तरफ़ उठा तो मिसर पर अंधेरा छा जाएगा। इतना अंधेरा होगा कि बंदा उसे छू सकेगा।”

22 मूसा ने अपना हाथ आसमान की तरफ़ उठाया तो तीन दिन तक मिसर पर गहरा अंधेरा छाया रहा।

23 तीन दिन तक लोग न एक दूसरे को देख सके, न कहीं जा सके। लेकिन जहाँ इसराईली रहते थे वहाँ रौशनी थी।

24 तब फिरौन ने मूसा को फिर बुलवाया और कहा, “जाओ, रब की इबादत करो! तुम अपने साथ बाल-बच्चों को भी ले जा सकते हो। सिर्फ अपनी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल पीछे छोड़ देना।”

25 मूसा ने जवाब दिया, “क्या आप ही हमें कुरबानियों के लिए जानवर देंगे ताकि उन्हें रब अपने खुदा को पेश करें?”

26 यक़ीनन नहीं। इसलिए लाज़िम है कि हम अपने जानवरों को साथ लेकर जाएँ। एक खुर भी पीछे नहीं छोड़ा जाएगा, क्योंकि अभी तक हमें मालूम नहीं कि रब की इबादत के लिए किन किन जानवरों की ज़रूरत होगी। यह उस वक़्त ही पता चलेगा जब हम मनज़िले-मक़सूद पर पहुँचेंगे। इसलिए ज़रूरी है कि हम सबको अपने साथ लेकर जाएँ।”

27 लेकिन रब की मरज़ी के मुताबिक़ फिरौन अड गया। उसने उन्हें जाने न दिया।

28 उसने मूसा से कहा, “दफ़ा हो जा। ख़बरदार! फिर कभी अपनी शक़्त न दिखाना, वरना तुझे मौत के हवाले कर दिया जाएगा।”

29 मूसा ने कहा, “ठीक है, आपकी मरज़ी। मैं फिर कभी आपके सामने नहीं आऊँगा।”

11

आखिरी सज़ा का एलान

1 तब रब ने मूसा से कहा, “अब मैं फिरौन और मिसर पर आखिरी आफ़त लाने को हूँ। इसके बाद वह तुम्हें जाने देगा बल्कि तुम्हें ज़बरदस्ती निकाल देगा।

2 इसराईलियों को बता देना कि हर मर्द अपने पड़ोसी और हर औरत अपनी पड़ोसन से सोने-चाँदी की चीज़ें माँग ले।”

3 (रब ने मिसरियों के दिल इसराईलियों की तरफ़ मायल कर दिए थे। वह फिरौन के ओहदेदारों समेत ख़ासकर मूसा की बड़ी इज़्ज़त करते थे)।

4 मूसा ने कहा, “रब फ़रमाता है, ‘आज आधी रात के वक़्त मैं मिसर में से गुज़रूँगा।’

5 तब बादशाह के पहलौठे से लेकर चक्की पीसनेवाली नौकरानी के पहलौठे तक मिसरियों का हर पहलौठा मर जाएगा। चौपाइयों के पहलौठे भी मर जाएंगे।

6 मिसर की सरज़मीन पर ऐसा रोना पीटना होगा कि न माज़ी में कभी हुआ, न मुस्तक़बिल में कभी होगा।

7 लेकिन इसराईली और उनके जानवर बचे रहेंगे। कुत्ता भी उन पर नहीं भौकेंगा। इस तरह तुम जान लोगे कि रब इसराईलियों की निसबत मिसरियों से फरक सुलूक करता है।”

8 मूसा ने यह कुछ फिरौन को बताया फिर कहा, “उस वक्त आपके तमाम ओहदेदार आकर मेरे सामने झुक जाएंगे और मिन्नत करेंगे, ‘अपने पैरोकारों के साथ चले जाएँ।’ तब मैं चला ही जाऊँगा।” यह कहकर मूसा फिरौन के पास से चला गया। वह बड़े गुस्से में था।

9 रब ने मूसा से कहा था, “फिरौन तुम्हारी नहीं सुनेगा। क्योंकि लाज़िम है कि मैं मिसर में अपनी कुदरत का मज़ीद इज़हार करूँ।”

10 गो मूसा और हासून ने फिरौन के सामने यह तमाम मोजिज़े दिखाए, लेकिन रब ने फिरौन को ज़िद्दी बनाए रखा, इसलिए उसने इसराईलियों को मुल्क छोड़ने न दिया।

12

फ़सह की ईद

1 फिर रब ने मिसर में मूसा और हासून से कहा,

2 “अब से यह महीना तुम्हारे लिए साल का पहला महीना हो।”

3 इसराईल की पूरी जमात को बताना कि इस महीने के दसवें दिन हर खानदान का सरपरस्त अपने घराने के लिए लेला यानी भेड़ या बकरी का बच्चा हासिल करे।

4 अगर घराने के अफ़राद पूरा जानवर खाने के लिए कम हों तो वह अपने सबसे करीबी पड़ोसी के साथ मिलकर लेला हासिल करें। इतने लोग उसमें से खाएँ कि सबके लिए काफ़ी हो और पूरा जानवर खाया जाए।

5 इसके लिए एक साल का नर बच्चा चुन लेना जिसमें नुक्स न हो। वह भेड़ या बकरी का बच्चा हो सकता है।

6 महीने के 14वें दिन तक उस की देख-भाल करो। उस दिन तमाम इसराईली सूरज के गुस्ब होते वक्त अपने लेले ज़बह करें।

7 हर खानदान अपने जानवर का कुछ खून जमा करके उसे उस घर के दरवाज़े की चौखट पर लगाए जहाँ लेला खाया जाएगा। यह खून चौखट के ऊपरवाले हिस्से और दाँए बाँए के बाज़ुओं पर लगाया जाए।

8 लाज़िम है कि लोग जानवर को भूनकर उसी रात खाएँ। साथ ही वह कड़वा साग-पात और बेखमीरी रोटियाँ भी खाएँ।

9 लेले का गोशत कच्चा न खाना, न उसे पानी में उबालना बल्कि पूरे जानवर को सर, पैरों और अंदरूनी हिस्सों समेत आग पर भूनना।

10 लाज़िम है कि पूरा गोशत उसी रात खाया जाए। अगर कुछ सुबह तक बच जाए तो उसे जलाना है।

11 खाना खाते वक़्त ऐसा लिबास पहनना जैसे तुम सफ़र पर जा रहे हो। अपने जूते पहने रखना और हाथ में सफ़र के लिए लाठी लिए हुए तुम उसे जल्दी जल्दी खाना। रब के फ़सह की ईद यों मनाना।

12 मैं आज रात मिसर में से गुज़रूँगा और हर पहलौठे को जान से मार दूँगा, खाह इनसान का हो या हैवान का। यों मैं जो रब हूँ मिसर के तमाम देवताओं की अदालत करूँगा।

13 लेकिन तुम्हारे घरों पर लगा हुआ खून तुम्हारा खास निशान होगा। जिस जिस घर के दरवाज़े पर मैं वह खून देखूँगा उसे छोड़ता जाऊँगा। जब मैं मिसर पर हमला करूँगा तो मोहलक वबा तुम तक नहीं पहुँचेगी।

14 आज की रात को हमेशा याद रखना। इसे नसल-दर-नसल और हर साल रब की खास ईद के तौर पर मनाना।

बेखमीरी रोटी की ईद

15 सात दिन तक बेखमीरी रोटी खाना है। पहले दिन अपने घरों से तमाम खमीर निकाल देना। अगर कोई इन सात दिनों के दौरान खमीर खाए तो उसे क्रौम में से मिटाया जाए।

16 इस ईद के पहले और आखिरी दिन मुक़द्दस इजतिमा मुनअकिद करना। इन तमाम दिनों के दौरान काम न करना। सिर्फ़ एक काम की इजाज़त है और वह है अपना खाना तैयार करना।

17 बेखमीरी रोटी की ईद मनाना लाज़िम है, क्योंकि उस दिन मैं तुम्हारे मुतअद्दिद खानदानों को मिसर से निकाल लाया। इसलिए यह दिन नसल-दर-नसल हर साल याद रखना।

18 पहले महीने के 14वें दिन की शाम से लेकर 21वें दिन की शाम तक सिर्फ़ बेखमीरी रोटी खाना।

19 सात दिन तक तुम्हारे घरों में खमीर न पाया जाए। जो भी इस दौरान खमीर खाए उसे इसराईल की जमात में से मिटाया जाए, खाव वह इसराईली शहरी हो या अजनबी।

20 गरज, इस ईद के दौरान खमीर न खाना। जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ बेखमीरी रोटी ही खाना है।

पहलौठों की हलाकत

21 फिर मूसा ने तमाम इसराईली बुजुर्गों को बुलाकर उनसे कहा, “जाओ, अपने खानदानों के लिए भेड़ या बकरी के बच्चे चुनकर उन्हें फसह की ईद के लिए ज़बह करो।

22 जूफे का गुच्छा लेकर उसे खून से भरे हुए बासन में डुबो देना। फिर उसे लेकर खून को चौखट के ऊपरवाले हिस्से और दाएँ बाएँ के बाजूओं पर लगा देना। सुबह तक कोई अपने घर से न निकले।

23 जब रब मिसरियों को मार डालने के लिए मुल्क में से गुजरेगा तो वह चौखट के ऊपरवाले हिस्से और दाएँ बाएँ के बाजूओं पर लगा हुआ खून देखकर उन घरों को छोड़ देगा। वह हलाक करनेवाले फरिश्ते को इजाज़त नहीं देगा कि वह तुम्हारे घरों में जाकर तुम्हें हलाक करे।

24 तुम अपनी औलाद समेत हमेशा इन हिदायात पर अमल करना।

25 यह रस्म उस वक्त भी अदा करना जब तुम उस मुल्क में पहुँचोगे जो रब तुम्हें देगा।

26 और जब तुम्हारे बच्चे तुमसे पूछें कि हम यह ईद क्यों मनाते हैं

27 तो उनसे कहो, ‘यह फसह की क़ुरबानी है जो हम रब को पेश करते हैं। क्योंकि जब रब मिसरियों को हलाक कर रहा था तो उसने हमारे घरों को छोड़ दिया था’।”

यह सुनकर इसराईलियों ने अल्लाह को सिजदा किया।

28 फिर उन्होंने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा और हारून को बताया था।

29 आधी रात को रब ने बादशाह के पहलौठे से लेकर जेल के कैदी के पहलौठे तक मिसरियों के तमाम पहलौठों को जान से मार दिया। चौपाइयों के पहलौठे भी मर गए।

30 उस रात मिसर के हर घर में कोई न कोई मर गया। फिरौन, उसके ओहदेदार और मिसर के तमाम लोग जाग उठे और ज़ोर ज़ोर से रोने और चीखने लगे।

इसराईलियों की हिजरत

31 अभी रात थी कि फिरौन ने मूसा और हारून को बुलाकर कहा, “अब तुम और बाकी इसराईली मेरी कौम में से निकल जाओ। अपनी दरखास्त के मुताबिक रब की इबादत करो।

32 जिस तरह तुम चाहते हो अपनी भेड़-बकरियों को भी अपने साथ ले जाओ। और मुझे भी बरकत देना।”

33 बाकी मिसरियों ने भी इसराईलियों पर जोर देकर कहा, “जल्दी जल्दी मुल्क से निकल जाओ, वरना हम सब मर जाएंगे।”

34 इसराईलियों के गूँधे हुए आटे में खमीर नहीं था। उन्होंने उसे गूँधने के बरतनों में रखकर अपने कपड़ों में लपेट लिया और सफर करते वक़्त अपने कंधों पर रख लिया।

35 इसराईली मूसा की हिदायत पर अमल करके अपने मिसरी पड़ोसियों के पास गए और उनसे कपड़े और सोने-चाँदी की चीज़ें माँगीं।

36 रब ने मिसरियों के दिलों को इसराईलियों की तरफ़ मायल कर दिया था, इसलिए उन्होंने उनकी हर दरखास्त पूरी की। यों इसराईलियों ने मिसरियों को लूट लिया।

37 इसराईली रामसीस से रवाना होकर सुक्कात पहुँच गए। औरतों और बच्चों को छोड़कर उनके 6 लाख मर्द थे।

38 वह अपने भेड़-बकरियों और गाय-बैलों के बड़े बड़े रेवड़ भी साथ ले गए। बहुत-से ऐसे लोग भी उनके साथ निकले जो इसराईली नहीं थे।

39 रास्ते में उन्होंने उस बेखमीरी आटे से रोटियाँ बनाई जो वह साथ लेकर निकले थे। आटे में इसलिए खमीर नहीं था कि उन्हें इतनी जल्दी से मिसर से निकाल दिया गया था कि खाना तैयार करने का वक़्त ही न मिला था।

40 इसराईली 430 साल तक मिसर में रहे थे।

41 430 साल के ऐन बाद, उसी दिन रब के यह तमाम खानदान मिसर से निकले।

42 उस खास रात रब ने खुद पहरा दिया ताकि इसराईली मिसर से निकल सकें। इसलिए तमाम इसराईलियों के लिए लाज़िम है कि वह नसल-दर-नसल इस रात रब की ताज़ीम में जागते रहें, वह भी और उनके बाद की औलाद भी।

फ़सह की ईद की हिदायात

43 रब ने मूसा और हारून से कहा, “फ़सह की ईद के यह उसूल हैं :

किसी भी परदेसी को फ़सह की ईद का खाना खाने की इजाज़त नहीं है।

44 अगर तुमने किसी गुलाम को ख़रीदकर उसका ख़तना किया है तो वह फ़सह का खाना खा सकता है।

45 लेकिन ग़ैरशहरी या मज़दूर को फ़सह का खाना खाने की इजाज़त नहीं है।

46 यह खाना एक ही घर के अंदर खाना है। न गोशत घर से बाहर ले जाना, न लेले की किसी हड्डी को तोड़ना।

47 लाज़िम है कि इसराईल की पूरी जमात यह ईद मनाए।

48 अगर कोई परदेसी तुम्हारे साथ रहता है जो फ़सह की ईद में शिरकत करना चाहे तो लाज़िम है कि पहले उसके घराने के हर मर्द का ख़तना किया जाए। तब वह इसराईली की तरह खाने में शरीक हो सकता है। लेकिन जिसका ख़तना न हुआ उसे फ़सह का खाना खाने की इजाज़त नहीं है।

49 यही उमूल हर एक पर लागू होगा, खाह वह इसराईली हो या परदेसी।”

50 तमाम इसराईलियों ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा और हारून से कहा था।

51 उसी दिन रब तमाम इसराईलियों को खानदानों की तरतीब के मुताबिक़ मिसर से निकाल लाया।

13

यह ईद नजात की याद दिलाती है

1 रब ने मूसा से कहा,

2 “इसराईलियों के हर पहलौठे को मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करना है। हर पहला नर बच्चा मेरा ही है, खाह इनसान का हो या हैवान का।”

3 फिर मूसा ने लोगों से कहा, “इस दिन को याद रखो जब तुम रब की अज़ीम कुदरत के बाइस मिसर की गुलामी से निकले। इस दिन कोई चीज़ न खाना जिसमें ख़मीर हो।

4 आज ही अबीब के महीने * में तुम मिसर से रवाना हो रहे हो।

5 रब ने तुम्हारे बापदादा से क़सम खाकर वादा किया है कि वह तुमको कनानी, हिती, अमोरी, हिवी और यबूसी कौमों का मुल्क देगा, एक ऐसा मुल्क जिसमें दूध और शहद की कसरत है। जब रब तुम्हें उस मुल्क में पहुँचा देगा तो लाज़िम है कि तुम इसी महीने में यह रस्म मनाओ।

* 13:4 मार्च ता अप्रैल।

6 सात दिन बेखमीरी रोटी खाओ। सातवें दिन रब की ताज़ीम में ईद मनाओ।

7 सात दिन खमीरी रोटी न खाना। कहीं भी खमीर न पाया जाए। पूरे मुल्क में खमीर का नामो-निशान तक न हो।

8 उस दिन अपने बेटे से यह कहो, “मैं यह ईद उस काम की खुशी में मनाता हूँ जो रब ने मेरे लिए किया जब मैं मिसर से निकला।”

9 यह ईद तुम्हारे हाथ या पेशानी पर निशान की मारिंद हो जो तुम्हें याद दिलाए कि रब की शरीअत को तुम्हारे होंटों पर रहना है। क्योंकि रब तुम्हें अपनी अज़ीम कुदरत से मिसर से निकाल लाया।

10 इस दिन की याद हर साल ठीक वक़्त पर मनाना।

पहलौठों की मखसूसियत

11 रब तुम्हें कनानियों के उस मुल्क में ले जाएगा जिसका वादा उसने कसम खाकर तुम और तुम्हारे बापदादा से किया है।

12 लाज़िम है कि वहाँ पहुँचकर तुम अपने तमाम पहलौठों को रब के लिए मखसूस करो। तुम्हारे मवेशियों के तमाम पहलौठे भी रब की मिलकियत हैं।

13 अगर तुम अपना पहलौठा गधा खुद रखना चाहो तो रब को उसके बदले भेड़ या बकरी का बच्चा पेश करो। लेकिन अगर तुम उसे रखना नहीं चाहते तो उस की गरदन तोड़ डालो। लेकिन इनसान के पहलौठों के लिए हर सूरत में एवज़ी देना है।

14 आनेवाले दिनों में जब तुम्हारा बेटा पूछे कि इसका क्या मतलब है तो उसे जवाब देना, ‘रब अपनी अज़ीम कुदरत से हमें मिसर की गुलामी से निकाल लाया।’

15 जब फिरौन ने अकड़कर हमें जाने न दिया तो रब ने मिसर के तमाम इनसानों और हैवानों के पहलौठों को मार डाला। इस वजह से मैं अपने जानवरों का हर पहला बच्चा रब को कुरबान करता और अपने हर पहलौठे के लिए एवज़ी देता हूँ।

16 यह दस्तूर तुम्हारे हाथ और पेशानी पर निशान की मारिंद हो जो तुम्हें याद दिलाए कि रब हमें अपनी कुदरत से मिसर से निकाल लाया।”

मिसर से निकलने का रास्ता

17 जब फिरौन ने इसराईली क्रौम को जाने दिया तो अल्लाह उन्हें फ़िलिस्तियों के इलाक़े में से गुज़रनेवाले रास्ते से लेकर न गया, अगरचे उस पर चलते हुए वह जल्द ही मुल्के-कनान पहुँच जाते। बल्कि रब ने कहा, “अगर उस रास्ते पर चलेंगे

तो उन्हें दूसरों से लड़ना पड़ेगा। ऐसा न हो कि वह इस वजह से अपना इरादा बदलकर मिसर लौट जाएँ।”

18 इसलिए अल्लाह उन्हें दूसरे रास्ते से लेकर गया, और वह रेगिस्तान के रास्ते से बहरे-कुलजुम की तरफ बढ़े। मिसर से निकलते वक्त मर्द मुसल्लह थे।

19 मूसा यूसुफ का ताबूत भी अपने साथ ले गया, क्योंकि यूसुफ ने इसराईलियों को कसम दिलाकर कहा था, “अल्लाह यकीनन तुम्हारी देख-भाल करके वहाँ ले जाएगा। उस वक्त मेरी हड्डियों को भी उठाकर साथ ले जाना।”

20 इसराईलियों ने सुक्कात को छोड़कर एताम में अपने खैमे लगाए। एताम रेगिस्तान के किनारे पर था।

21 रब उनके आगे आगे चलता गया, दिन के वक्त बादल के सतून में ताकि उन्हें रास्ते का पता लगे और रात के वक्त आग के सतून में ताकि उन्हें रौशनी मिले। यों वह दिन और रात सफर कर सकते थे।

22 दिन के वक्त बादल का सतून और रात के वक्त आग का सतून उनके सामने रहा। वह कभी भी अपनी जगह से न हटा।

14

इसराईल समुंदर में से गुजरता है

1 तब रब ने मूसा से कहा,

2 “इसराईलियों को कह देना कि वह पीछे मुड़कर मिजदाल और समुंदर के बीच यानी फ्री-हखीरोत के नज्दीक स्क जाएँ। वह बाल-सफोन के मुक्काबिल साहिल पर अपने खैमे लगाएँ।

3 यह देखकर फिरौन समझेगा कि इसराईली रास्ता भूलकर आवारा फिर रहे हैं और कि रेगिस्तान ने चारों तरफ उन्हें घेर रखा है।

4 फिर मैं फिरौन को दुबारा अड़ जाने दूँगा, और वह इसराईलियों का पीछा करेगा। लेकिन मैं फिरौन और उस की पूरी फौज पर अपना जलाल जाहिर करूँगा। मिसरी जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।” इसराईलियों ने ऐसा ही किया।

5 जब मिसर के बादशाह को इत्तला दी गई कि इसराईली हिजरत कर गए हैं तो उसने और उसके दरबारियों ने अपना खयाल बदलकर कहा, “हमने क्या किया है? हमने उन्हें जाने दिया है, और अब हम उनकी खिदमत से महरूम हो गए हैं।”

6 चुनौचे बादशाह ने अपना जंगी रथ तैयार करवाया और अपनी फौज को लेकर निकला।

7 वह 600 बेहतरीन क्रिस्म के रथ और मिसर के बाक्री तमाम रथों को साथ ले गया। तमाम रथों पर अफसरान मुकर्रर थे।

8 रब ने मिसर के बादशाह फिरौन को दुबारा अड जाने दिया था, इसलिए जब इसराईली बड़े इख्तियार के साथ निकल रहे थे तो वह उनका ताक्कुब करने लगा।

9 इसराईलियों का पीछा करते करते फिरौन के तमाम घोड़े, रथ, सवार और फौजी उनके करीब पहुँचे। इसराईली बहरे-कुलजुम के साहिल पर बाल-सफोन के मुकाबिल फ्री-हखीरोत के नजदीक खैमे लगा चुके थे।

10 जब इसराईलियों ने फिरौन और उस की फौज को अपनी तरफ बढ़ते देखा तो वह सख्त घबरा गए और मदद के लिए रब के सामने चीखने-चिल्लाने लगे।

11 उन्होंने मूसा से कहा, “क्या मिसर में कब्रों की कमी थी कि आप हमें रेगिस्तान में ले आए हैं? हमें मिसर से निकालकर आपने हमारे साथ क्या किया है?”

12 क्या हमने मिसर में आपसे दरखास्त नहीं की थी कि मेहरबानी करके हमें छोड़ दें, हमें मिसरियों की खिदमत करने दें? यहाँ आकर रेगिस्तान में मर जाने की निसबत बेहतर होता कि हम मिसरियों के गुलाम रहते।”

13 लेकिन मूसा ने जवाब दिया, “मत घबराओ। आराम से खड़े रहो और देखो कि रब तुम्हें आज किस तरह बचाएगा। आज के बाद तुम इन मिसरियों को फिर कभी नहीं देखोगे।

14 रब तुम्हारे लिए लड़ेगा। तुम्हें बस, चुप रहना है।”

15 फिर रब ने मूसा से कहा, “तू मेरे सामने क्यों चीख रहा है? इसराईलियों को आगे बढ़ने का हुक्म दे।

16 अपनी लाठी को पकड़कर उसे समुंदर के ऊपर उठा तो वह दो हिस्सों में बट जाएगा। इसराईली खुश्क जमीन पर समुंदर में से गुजरेंगे।

17 मैं मिसरियों को अड़े रहने दूँगा ताकि वह इसराईलियों का पीछा करें। फिर मैं फिरौन, उस की सारी फौज, उसके रथों और उसके सवारों पर अपना जलाल जाहिर करूँगा।

18 जब मैं फिरौन, उसके रथों और उसके सवारों पर अपना जलाल जाहिर करूँगा तो मिसरी जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

19 अल्लाह का फ़रिश्ता इसराईली लशकर के आगे आगे चल रहा था। अब वह वहाँ से हटकर उनके पीछे खड़ा हो गया। बादल का सतून भी लोगों के आगे से हटकर उनके पीछे जा खड़ा हुआ।

20 इस तरह बादल मिसरियों और इसराईलियों के लशकरो के दरमियान आ गया। पूरी रात मिसरियों की तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा था जबकि इसराईलियों की तरफ़ रौशनी थी। इसलिए मिसरी पूरी रात के दौरान इसराईलियों के करीब न आ सके।

21 मूसा ने अपना हाथ समुंदर के ऊपर उठाया तो रब ने मशरिक से तेज़ आँधी चलाई। आँधी तमाम रात चलती रही। उसने समुंदर को पीछे हटाकर उस की तह खुशक कर दी। समुंदर दो हिस्सों में बट गया

22 तो इसराईली समुंदर में से खुशक ज़मीन पर चलते हुए गुज़र गए। उनके दाईं और बाईं तरफ़ पानी दीवार की तरह खड़ा रहा।

23 जब मिसरियों को पता चला तो फिरौन के तमाम घोड़े, रथ और घुड़सवार भी उनके पीछे पीछे समुंदर में चले गए।

24 सुबह-सवेरे ही रब ने बादल और आग के सतून से मिसर की फ़ौज पर निगाह की और उसमें अबतरी पैदा कर दी।

25 उनके रथों के पहिये निकल गए तो उन पर क़ाबू पाना मुश्किल हो गया। मिसरियों ने कहा, “आओ, हम इसराईलियों से भाग जाएँ, क्योंकि रब उनके साथ है। वही मिसर का मुक़ाबला कर रहा है।”

26 तब रब ने मूसा से कहा, “अपना हाथ समुंदर के ऊपर उठा। फिर पानी वापस आकर मिसरियों, उनके रथों और घुड़सवारों को डुबो देगा।”

27 मूसा ने अपना हाथ समुंदर के ऊपर उठाया तो दिन निकलते वक़्त पानी मामूल के मुताबिक़ बहने लगा, और जिस तरफ़ मिसरी भाग रहे थे वहाँ पानी ही पानी था। यों रब ने उन्हें समुंदर में बहाकर गरक़ कर दिया।

28 पानी वापस आ गया। उसने रथों और घुड़सवारों को ढाँक लिया। फिरौन की पूरी फ़ौज जो इसराईलियों का ताक्क़ुब कर रही थी डूबकर तबाह हो गई। उनमें से एक भी न बचा।

29 लेकिन इसराईली खुशक ज़मीन पर समुंदर में से गुज़रे। उनके दाईं और बाईं तरफ़ पानी दीवार की तरह खड़ा रहा।

30 उस दिन रब ने इसराईलियों को मिसरियों से बचाया। मिसरियों की लाशें उन्हें साहिल पर नज़र आईं।

31 जब इसराईलियों ने रब की यह अजीम कुदरत देखी जो उसने मिसरियों पर जाहिर की थी तो रब का खौफ उन पर छा गया। वह उस पर और उसके खादिम मूसा पर एतमाद करने लगे।

15

मूसा का गीत

1 तब मूसा और इसराईलियों ने रब के लिए यह गीत गाया,
 “मैं रब की तमजीद में गीत गाऊँगा, क्योंकि वह निहायत अजीम है। घोड़े और उसके सवार को उसने समुंदर में पटख दिया है।

2 रब मेरी कुव्वत और मेरा गीत है, वह मेरी नजात बन गया है। वही मेरा खुदा है, और मैं उस की तारीफ करूँगा। वही मेरे बाप का खुदा है, और मैं उस की ताजीम करूँगा।

3 रब सूरमा है, रब उसका नाम है।

4 फिरौन के रथों और फ़ौज को उसने समुंदर में पटख दिया तो बादशाह के बेहतरीन अफसरान बहरे-कुलजुम में डूब गए।

5 गहरे पानी ने उन्हें ढाँक लिया, और वह पत्थर की तरह समुंदर की तह तक उतर गए।

6 ऐ रब, तेरे दहने हाथ का जलाल बड़ी कुदरत से जाहिर होता है। ऐ रब, तेरा दहना हाथ दुश्मन को चकनाचूर कर देता है।

7 जो तेरे खिलाफ उठ खड़े होते हैं उन्हें तू अपनी अज़मत का इज़हार करके ज़मीन पर पटख देता है। तेरा गज़ब उन पर आन पड़ता है तो वह आग में भूसे की तरह जल जाते हैं।

8 तूने गुस्से में आकर फूँक मारी तो पानी ढेर की सूरत में जमा हो गया। बहता पानी ठोस दीवार बन गया, समुंदर गहराई तक जम गया।

9 दुश्मन ने डींग मारकर कहा, “मैं उनका पीछा करके उन्हें पकड़ लूँगा, मैं उनका लूटा हुआ माल तकसीम करूँगा। मेरी लालची जान उनसे सेर हो जाएगी, मैं अपनी तलवार खींचकर उन्हें हलाक करूँगा।”

10 लेकिन तूने उन पर फूँक मारी तो समुंदर ने उन्हें ढाँक लिया, और वह सीसे की तरह जोरदार मौजों में डूब गए।

11 ऐ रब, कौन-सा माबूद तेरी मानिंद है? कौन तेरी तरह जलाली और कुदूस है? कौन तेरी तरह हैरतअंगेज़ काम करता और अज़ीम मोजिज़े दिखाता है? कोई भी नहीं।

12 तूने अपना दहना हाथ उठाया तो ज़मीन हमारे दुश्मनों को निगल गई।

13 अपनी शफ़क़त से तूने एवज़ाना देकर अपनी क्रौम को छुटकारा दिया और उस की राहनुमाई की है, अपनी कुदरत से तूने उसे अपनी मुक़दस सुकूनतगाह तक पहुँचाया है।

14 यह सुनकर दीगर क्रौमें काँप उठीं, फ़िलिस्ती डर के मारे पेचो-ताब खाने लगे।

15 अदोम के रईस सहम गए, मोआब के राहनुमाओं पर कपकपी तारी हो गई, और कनान के तमाम बाशिदे हिम्मत हार गए।

16 दहशत और खौफ़ उन पर छा गया। तेरी अज़ीम कुदरत के बाइस वह पत्थर की तरह जम गए। ऐ रब, वह न हिले जब तक तेरी क्रौम गुज़र न गईं। वह बेहिसो-हरकत रहे जब तक तेरी ख़रीदी हुई क्रौम गुज़र न गईं।

17 ऐ रब, तू अपने लोगों को लेकर पौदों की तरह अपने मौस्सी पहाड़ पर लगाएगा, उस जगह पर जो तूने अपनी सुकूनत के लिए चुन ली है, जहाँ तूने अपने हाथों से अपना मक़दिस तैयार किया है।

18 रब अबद तक बादशाह है!”

19 जब फ़िरौन के घोड़े, रथ और घुडसवार समुंदर में चले गए तो रब ने उन्हें समुंदर के पानी से ढाँक लिया। लेकिन इसराईली खुशक ज़मीन पर समुंदर में से गुज़र गए।

20 तब हासून की बहन मरियम जो नबिया थी ने दफ़ लिया, और बाक़ी तमाम औरतें भी दफ़ लेकर उसके पीछे हो लीं। सब गाने और नाचने लगीं। मरियम ने यह गाकर उनकी राहनुमाई की,

21 “रब की तमज़ीद में गीत गाओ, क्योंकि वह निहायत अज़ीम है। घोड़े और उसके सवार को उसने समुंदर में पटर दिया है।”

मारा और एलीम के चश्मे

22 मूसा के कहने पर इसराईली बहरे-कुलज़ुम से रवाना होकर दशते-शूर में चले गए। वहाँ वह तीन दिन तक सफ़र करते रहे। इस दौरान उन्हें पानी न मिला।

23 आखिरकार वह मारा पहुँचे जहाँ पानी दस्तयाब था। लेकिन वह कड़वा था, इसलिए मकाम का नाम मारा यानी कड़वाहट पड़ गया।

24 यह देखकर लोग मूसा के खिलाफ बुड़बुडाकर कहने लगे, “हम क्या पिँएँ?”

25 मूसा ने मदद के लिए रब से इल्तिजा की तो उसने उसे लकड़ी का एक टुकड़ा दिखाया। जब मूसा ने यह लकड़ी पानी में डाली तो पानी की कड़वाहट खत्म हो गई।

मारा में रब ने अपनी क्रौम को क्वानीन दिए। वहाँ उसने उन्हें आजमाया भी।

26 उसने कहा, “गौर से रब अपने खुदा की आवाज़ सुनो! जो कुछ उस की नज़र में दुस्त है वही करो। उसके अहकाम पर ध्यान दो और उस की तमाम हिदायात पर अमल करो। फिर मैं तुम पर वह बीमारियाँ नहीं लाऊँगा जो मिसरियों पर लाया था, क्योंकि मैं रब हूँ जो तुझे शफा देता हूँ।”

27 फिर इसराईली रवाना होकर एलीम पहुँचे जहाँ 12 चश्मे और खजूर के 70 दरख्त थे। वहाँ उन्होंने पानी के करीब अपने खैमे लगाए।

16

मन और बटेरें

1 इसके बाद इसराईल की पूरी जमात एलीम से सफ़र करके सीन के रेगिस्तान में पहुँची जो एलीम और सीना के दरमियान है। वह मिसर से निकलने के बाद दूसरे महीने के 15वें दिन पहुँचे।

2 रेगिस्तान में तमाम लोग फिर मूसा और हारून के खिलाफ बुड़बुडाने लगे।

3 उन्होंने कहा, “काश रब हमें मिसर में ही मार डालता! वहाँ हम कम अज़ कम जी भरकर गोश्त और रोटी तो खा सकते थे। आप हमें सिर्फ़ इसलिए रेगिस्तान में ले आए हैं कि हम सब भूके मर जाएँ।”

4 तब रब ने मूसा से कहा, “मैं आसमान से तुम्हारे लिए रोटी बरसाऊँगा। हर रोज़ लोग बाहर जाकर उसी दिन की ज़रूरत के मुताबिक़ खाना जमा करें। इससे मैं उन्हें आजमाकर देखूँगा कि आया वह मेरी सुनते हैं कि नहीं।

5 हर रोज़ वह सिर्फ़ उतना खाना जमा करें जितना कि एक दिन के लिए काफ़ी हो। लेकिन छठे दिन जब वह खाना तैयार करेंगे तो वह अगले दिन के लिए भी काफ़ी होगा।”

6 मूसा और हासून ने इसराईलियों से कहा, “आज शाम को तुम जान लोगे कि रब ही तुम्हें मिसर से निकाल लाया है।

7 और कल सुबह तुम रब का जलाल देखोगे। उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं, क्योंकि असल में तुम हमारे खिलाफ नहीं बल्कि रब के खिलाफ बुड़बुड़ा रहे हो।

8 फिर भी रब तुमको शाम के वक्त गोश्त और सुबह के वक्त वाफिर रोटी देगा, क्योंकि उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं। तुम्हारी शिकायतें हमारे खिलाफ नहीं बल्कि रब के खिलाफ हैं।”

9 मूसा ने हासून से कहा, “इसराईलियों को बताना, ‘रब के सामने हाज़िर हो जाओ, क्योंकि उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं।’”

10 जब हासून पूरी जमात के सामने बात करने लगा तो लोगों ने पलटकर रेगिस्तान की तरफ देखा। वहाँ रब का जलाल बादल में जाहिर हुआ।

11 रब ने मूसा से कहा,

12 “मैंने इसराईलियों की शिकायत सुन ली है। उन्हें बता, ‘आज जब सूरज गुरूब होने लगेगा तो तुम गोश्त खाओगे और कल सुबह पेट भरकर रोटी। फिर तुम जान लोगे कि मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।’”

13 उसी शाम बटेरों के गोल आए जो पूरी खैमागाह पर छा गए। और अगली सुबह खैमे के चारों तरफ ओस पड़ी थी।

14 जब ओस सूख गई तो बर्फ के गालों जैसे पतले दाने पाले की तरह जमीन पर पड़े थे।

15 जब इसराईलियों ने उसे देखा तो एक दूसरे से पूछने लगे, “मन ह?” यानी “यह क्या है?” क्योंकि वह नहीं जानते थे कि यह क्या चीज़ है। मूसा ने उनको समझाया, “यह वह रोटी है जो रब ने तुम्हें खाने के लिए दी है।

16 रब का हुक्म है कि हर एक उतना जमा करे जितना उसके खानदान को ज़रूरत हो। अपने खानदान के हर फ़रद के लिए दो लिटर जमा करो।”

17 इसराईलियों ने ऐसा ही किया। बाज़ ने ज़्यादा और बाज़ ने कम जमा किया।

18 लेकिन जब उसे नापा गया तो हर एक आदमी के लिए काफ़ी था। जिसने ज़्यादा जमा किया था उसके पास कुछ न बचा। लेकिन जिसने कम जमा किया था उसके पास भी काफ़ी था।

19 मूसा ने हुक्म दिया, “अगले दिन के लिए खाना न बचाना।”

20 लेकिन लोगों ने मूसा की बात न मानी बल्कि बाज़ ने खाना बचा लिया। लेकिन अगली सुबह मालूम हुआ कि बचे हुए खाने में कीड़े पड़ गए हैं और उससे बहुत बदबू आ रही है। यह सुनकर मूसा उनसे नाराज़ हुआ।

21 हर सुबह हर कोई उतना जमा कर लेता जितनी उसे ज़रूरत होती थी। जब धूप तेज़ होती तो जो कुछ ज़मीन पर रह जाता वह पिघलकर ख़त्म हो जाता था।

22 छठे दिन जब लोग यह ख़ुराक जमा करते तो वह मिक्कदार में दुगनी होती थी यानी हर फ़रद के लिए चार लिटर। जब जमात के बुज़ुर्गों ने मूसा के पास आकर उसे इतला दी

23 तो उसने उनसे कहा, “रब का फ़रमान है कि कल आराम का दिन है, मुक़द्स सबत का दिन जो अल्लाह की ताज़ीम में मनाना है। आज तुम जो तनूर में पकाना चाहते हो पका लो और जो उबालना चाहते हो उबाल लो। जो बच जाए उसे कल के लिए महफूज़ रखो।”

24 लोगों ने मूसा के हुक्म के मुताबिक़ अगले दिन के लिए खाना महफूज़ कर लिया तो न खाने से बदबू आई, न उसमें कीड़े पड़े।

25 मूसा ने कहा, “आज यही बचा हुआ खाना खाओ, क्योंकि आज सबत का दिन है, रब की ताज़ीम में आराम का दिन। आज तुम्हें रेगिस्तान में कुछ नहीं मिलेगा।

26 छः दिन के दौरान यह ख़ुराक जमा करना है, लेकिन सातवाँ दिन आराम का दिन है। उस दिन ज़मीन पर खाने के लिए कुछ नहीं होगा।”

27 तो भी कुछ लोग हफ़ते को खाना जमा करने के लिए निकले, लेकिन उन्हें कुछ न मिला।

28 तब रब ने मूसा से कहा, “तुम लोग कब तक मेरे अहकाम और हिदायात पर अमल करने से इनकार करोगे?”

29 देखो, रब ने तुम्हारे लिए मुक़र्रर किया है कि सबत का दिन आराम का दिन है। इसलिए वह तुम्हें जुमे को दो दिन के लिए ख़ुराक देता है। हफ़ते को सबको अपने ख़ैमों में रहना है। कोई भी अपने घर से बाहर न निकले।”

30 चुनाँचे लोग सबत के दिन आराम करते थे।

31 इसराईलियों ने इस ख़ुराक का नाम ‘मन’ रखा। उसके दाने धनिये की मानिंद सफ़ेद थे, और उसका ज़ायका शहद से बने केक की मानिंद था।

32 मूसा ने कहा, “रब फरमाता है, ‘दो लिटर मन एक मरतबान में रखकर उसे आनेवाली नसलों के लिए महफूज़ रखना। फिर वह देख सकेंगे कि मैं तुम्हें क्या खाना खिलाता रहा जब तुम्हें मिसर से निकाल लाया’।”

33 मूसा ने हारून से कहा, “एक मरतबान लो और उसे दो लिटर मन से भरकर रब के सामने रखो ताकि वह आनेवाली नसलों के लिए महफूज़ रहे।”

34 हारून ने ऐसा ही किया। उसने मन के इस मरतबान को अहद के संदूक के सामने रखा ताकि वह महफूज़ रहे।

35 इसराईलियों को 40 साल तक मन मिलता रहा। वह उस वक़्त तक मन खाते रहे जब तक रेगिस्तान से निकलकर कनान की सरहद पर न पहुँचे।

36 (जो पैमाना इसराईली मन के लिए इस्तेमाल करते थे वह दो लिटर का एक बरतन था जिसका नाम ओमर था।)

17

चट्टान से पानी

1 फिर इसराईल की पूरी जमात सीन के रेगिस्तान से निकली। रब जिस तरह हुक्म देता रहा वह एक जगह से दूसरी जगह सफ़र करते रहे। रफीदीम में उन्होंने ख़ैमे लगाए। वहाँ पीने के लिए पानी न मिला।

2 इसलिए वह मूसा के साथ यह कहकर झगड़ने लगे, “हमें पीने के लिए पानी दो।” मूसा ने जवाब दिया, “तुम मुझसे क्यों झगड़ रहे हो? रब को क्यों आजमा रहे हो?”

3 लेकिन लोग बहुत प्यासे थे। वह मूसा के खिलाफ़ बुडबुडाने से बाज़ न आए बल्कि कहा, “आप हमें मिसर से क्यों लाए हैं? क्या इसलिए कि हम अपने बच्चों और रेवडों समेत प्यासे मर जाएँ?”

4 तब मूसा ने रब के हुज़ूर फ़रियाद की, “मैं इन लोगों के साथ क्या करूँ? हालात ज़रा भी और बिगड़ जाएँ तो वह मुझे संगसार कर देंगे।”

5 रब ने मूसा से कहा, “कुछ बुजुर्ग साथ लेकर लोगों के आगे आगे चल। वह लाठी भी साथ ले जा जिससे तूने दरियाए-नील को मारा था।

6 मैं होरिब यानी सीना पहाड़ की एक चट्टान पर तेरे सामने खड़ा हूँगा। लाठी से चट्टान को मारना तो उससे पानी निकलेगा और लोग पी सकेंगे।”

मूसा ने इसराईल के बुजुर्गों के सामने ऐसा ही किया।

7 उसने उस जगह का नाम मस्सा और मरीबा यानी 'आज़माना और झगडना' रखा, क्योंकि वहाँ इसराईली बुड़बुडाए और यह पूछकर रब को आजमाया कि क्या रब हमारे दरमियान है कि नहीं?

अमालीकियों की शिकस्त

8 रफीदीम वह जगह भी थी जहाँ अमालीकी इसराईलियों से लड़ने आए।

9 मूसा ने यशुअ से कहा, "लड़ने के काबिल आदमियों को चुन लो और निकलकर अमालीकियों का मुकाबला करो। कल मैं अल्लाह की लाठी पकड़े हुए पहाड़ की चोटी पर खड़ा हो जाऊँगा।"

10 यशुअ मूसा की हिदायत के मुताबिक अमालीकियों से लड़ने गया जबकि मूसा, हारून और हर पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए।

11 और यों हुआ कि जब मूसा के हाथ उठाए हुए थे तो इसराईली जीतते रहे, और जब वह नीचे थे तो अमालीकी जीतते रहे।

12 कुछ देर के बाद मूसा के बाजू थक गए। इसलिए हारून और हर एक चट्टान ले आए ताकि वह उस पर बैठ जाए। फिर उन्होंने उसके दाईं और बाईं तरफ खड़े होकर उसके बाजूओं को ऊपर उठाए रखा। सूरज के गुरूब होने तक उन्होंने यों मूसा की मदद की।

13 इस तरह यशुअ ने अमालीकियों से लड़ते लड़ते उन्हें शिकस्त दी।

14 तब रब ने मूसा से कहा, "यह वाकिया यादगारी के लिए किताब में लिख ले। लाज़िम है कि यह सब कुछ यशुअ की याद में रहे, क्योंकि मैं दुनिया से अमालीकियों का नामो-निशान मिटा दूँगा।"

15 उस वक़्त मूसा ने कुरबानगाह बनाकर उसका नाम 'रब मेरा झंडा है' रखा।

16 उसने कहा, "रब के तख़्त के खिलाफ हाथ उठाया गया है, इसलिए रब की अमालीकियों से हमेशा तक जंग रहेगी।"

18

यितरो से मुलाकात

1 मूसा का सुसर यितरो अब तक मिदियान में इमाम था। जब उसने सब कुछ सुना जो अल्लाह ने मूसा और अपनी क्रौम के लिए किया है, कि वह उन्हें मिसर से निकाल लाया है

2 तो वह मूसा के पास आया। वह उस की बीवी सफ़फ़ूरा को अपने साथ लाया, क्योंकि मूसा ने उसे अपने बेटों समेत मैके भेज दिया था।

3 यितरो मूसा के दोनों बेटों को भी साथ लाया। पहले बेटे का नाम जैरसोम यानी 'अजनबी मुल्क में परदेसी' था, क्योंकि जब वह पैदा हुआ तो मूसा ने कहा था, "मैं अजनबी मुल्क में परदेसी हूँ।"

4 दूसरे बेटे का नाम इलियज़र यानी 'मेरा खुदा मददगार है' था, क्योंकि जब वह पैदा हुआ तो मूसा ने कहा था, "मेरे बाप के खुदा ने मेरी मदद करके मुझे फ़िरौन की तलवार से बचाया है।"

5 यितरो मूसा की बीवी और बेटे साथ लेकर उस वक़्त मूसा के पास पहुँचा जब उसने रेगिस्तान में अल्लाह के पहाड़ यानी सीना के करीब ख़ैमा लगाया हुआ था।

6 उसने मूसा को पैग़ाम भेजा था, "मैं, आपका सुसर यितरो आपकी बीवी और दो बेटों को साथ लेकर आपके पास आ रहा हूँ।"

7 मूसा अपने सुसर के इस्तक़बाल के लिए बाहर निकला, उसके सामने झुका और उसे बोसा दिया। दोनों ने एक दूसरे का हाल पूछा, फिर ख़ैमे में चले गए।

8 मूसा ने यितरो को तफ़सील से बताया कि रब ने इसराईलियों की खातिर फ़िरौन और मिसरियों के साथ क्या कुछ किया है। उसने रास्ते में पेश आई तमाम मुश्किलात का ज़िक्र भी किया कि रब ने हमें किस तरह उनसे बचाया है।

9 यितरो उन सारे अच्छे कामों के बारे में सुनकर खुश हुआ जो रब ने इसराईलियों के लिए किए थे जब उसने उन्हें मिसरियों के हाथ से बचाया था।

10 उसने कहा, "रब की तमज़ीद हो जिसने आपको मिसरियों और फ़िरौन के कब्ज़े से नजात दिलाई है। उसी ने क्रौम को गुलामी से छुड़ाया है।"

11 अब मैंने जान लिया है कि रब तमाम माबूदों से अज़ीम है, क्योंकि उसने यह सब कुछ उन लोगों के साथ किया जिन्होंने अपने गुस्से में इसराईलियों के साथ बुरा सुलूक किया था।"

12 फिर यितरो ने अल्लाह को भस्म होनेवाली कुरबानी और दीगर कई कुरबानियाँ पेश कीं। तब हारून और तमाम बुजुर्ग मूसा के सुसर यितरो के साथ अल्लाह के हज़ूर खाना खाने बैठे।

70 बुजुर्गों को मुकर्रर किया जाता है

13 अगले दिन मूसा लोगों का इनसाफ करने के लिए बैठ गया। उनकी तादाद इतनी ज़्यादा थी कि वह सुबह से लेकर शाम तक मूसा के सामने खड़े रहे।

14 जब यितरो ने यह सब कुछ देखा तो उसने पूछा, “यह क्या है जो आप लोगों के साथ कर रहे हैं? सारा दिन वह आपको घेरे रहते और आप उनकी अदालत करते रहते हैं। आप यह सब कुछ अकेले ही क्यों कर रहे हैं?”

15 मूसा ने जवाब दिया, “लोग मेरे पास आकर अल्लाह की मरज़ी मालूम करते हैं।

16 जब कभी कोई तनाज़ा या झगड़ा होता है तो दोनों पार्टियाँ मेरे पास आती हैं। मैं फैसला करके उन्हें अल्लाह के अहकाम और हिदायात बताता हूँ।”

17 मूसा के सुसर ने उससे कहा, “आपका तरीका अच्छा नहीं है।

18 काम इतना वसी है कि आप उसे अकेले नहीं सँभाल सकते। इससे आप और वह लोग जो आपके पास आते हैं बुरी तरह थक जाते हैं।

19 मेरी बात सुनें! मैं आपको एक मशवरा देता हूँ। अल्लाह उसमें आपकी मदद करे। लाज़िम है कि आप अल्लाह के सामने क़ौम के नुमाइंदे रहें और उनके मामलात उसके सामने पेश करें।

20 यह भी ज़रूरी है कि आप उन्हें अल्लाह के अहकाम और हिदायात सिखाएँ, कि वह किस तरह ज़िंदगी गुज़ारें और क्या क्या करें।

21 लेकिन साथ साथ क़ौम में से काबिले-एतमाद आदमी चुनें। वह ऐसे लोग हों जो अल्लाह का ख़ौफ़ मानते हों, रास्तदिल हों और रिश्वत से नफ़रत करते हों। उन्हें हज़ार हज़ार, सौ सौ, पचास पचास और दस दस आदमियों पर मुक़र्रर करें।

22 उन आदमियों की ज़िम्मादारी यह होगी कि वह हर वक़्त लोगों का इनसाफ़ करें। अगर कोई बहुत ही पेचीदा मामला हो तो वह फैसले के लिए आपके पास आएँ, लेकिन दीगर मामलों का फैसला वह खुद करें। यों वह काम में आपका हाथ बटाएँगे और आपका बोझ हलका हो जाएगा।

23 अगर मेरा यह मशवरा अल्लाह की मरज़ी के मुताबिक़ हो और आप ऐसा करें तो आप अपनी ज़िम्मादारी निभा सकेंगे और यह तमाम लोग इनसाफ़ के मिलने पर सलामती के साथ अपने अपने घर जा सकेंगे।”

24 मूसा ने अपने सुसर का मशवरा मान लिया और ऐसा ही किया।

25 उसने इसराईलियों में से काबिले-एतमाद आदमी चुने और उन्हें हज़ार हज़ार, सौ सौ, पचास पचास और दस दस आदमियों पर मुक़र्रर किया।

26 यह मर्द काजी बनकर मुस्तकिल तौर पर लोगों का इनसाफ करने लगे। आसान मसलों का फ़ैसला वह ख़ुद करते और मुश्किल मामलों को मूसा के पास ले आते थे।

27 कुछ अरसे बाद मूसा ने अपने सुसर को सूखसत किया तो यितरो अपने वतन वापस चला गया।

19

कोहे-सीना

1 इसराईलियों को मिसर से सफ़र करते हुए दो महीने हो गए थे। तीसरे महीने के पहले ही दिन वह सीना के रेगिस्तान में पहुँचे।

2 उस दिन वह रफ़ीदीम को छोड़कर दशते-सीना में आ पहुँचे। वहाँ उन्होंने रेगिस्तान में पहाड़ के करीब डेरें डाले।

3 तब मूसा पहाड़ पर चढ़कर अल्लाह के पास गया। अल्लाह ने पहाड़ पर से मूसा को पुकारकर कहा, “याकूब के घराने बनी इसराईल को बता,

4 ‘तुमने देखा है कि मैंने मिसरियों के साथ क्या कुछ किया, और कि मैं तुमको उक्काब के परों पर उठाकर यहाँ अपने पास लाया हूँ।

5 चुनाँचे अगर तुम मेरी सुनो और मेरे अहद के मुताबिक चलो तो फिर तमाम क़ौमों में से मेरी ख़ास मिलकियत होगे। गो पूरी दुनिया मेरी ही है,

6 लेकिन तुम मेरे लिए मख़सूस इमामों की बादशाही और मुक़द्दस क़ौम होगे।’ अब जाकर यह सारी बातें इसराईलियों को बता।”

7 मूसा ने पहाड़ से उतरकर और क़ौम के बुजुर्गों को बुलाकर उन्हें वह तमाम बातें बताईं जो कहने के लिए रब ने उसे हुक्म दिया था।

8 जवाब में पूरी क़ौम ने मिलकर कहा, “हम रब की हर बात पूरी करेंगे जो उसने फ़रमाई है।” मूसा ने पहाड़ पर लौटकर रब को क़ौम का जवाब बताया।

9 जब वह पहुँचा तो रब ने मूसा से कहा, “मैं घने बादल में तेरे पास आऊँगा ताकि लोग मुझे तुझसे हमकलाम होते हुए सुनें। फिर वह हमेशा तुझ पर भरोसा रखेंगे।” तब मूसा ने रब को वह तमाम बातें बताईं जो लोगों ने की थीं।

10 रब ने मूसा से कहा, “अब लोगों के पास लौटकर आज और कल उन्हें मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस कर। वह अपने लिबास धोकर

11 तीसरे दिन के लिए तैयार हो जाँ, क्योंकि उस दिन रब लोगों के देखते देखते कोहे-सीना पर उतरेगा।

12 लोगों की हिफाजत के लिए चारों तरफ पहाड़ की हड्डें मुकर्रर कर। उन्हें खबरदार कर कि हदूद को पार न करो। न पहाड़ पर चढ़ो, न उसके दामन को छुओ। जो भी उसे छुए वह जरूर मारा जाए।

13 और उसे हाथ से छूकर नहीं मारना है बल्कि पत्थरों या तीरों से। खाह इनसान हो या हैवान, वह जिंदा नहीं रह सकता। जब तक नरसिंगा देर तक फूँका न जाए उस वक़्त तक लोगों को पहाड़ पर चढ़ने की इजाज़त नहीं है।”

14 मूसा ने पहाड़ से उतरकर लोगों को अल्लाह के लिए मखसूसो-मुकद्दस किया। उन्होंने अपने लिबास भी धोए।

15 उसने उनसे कहा, “तीसरे दिन के लिए तैयार हो जाओ। मर्द औरतों से हमबिसतर न हों।”

16 तीसरे दिन सुबह पहाड़ पर घना बादल छा गया। बिजली चमकने लगी, बादल गरजने लगा और नरसिंगे की निहायत जोरदार आवाज़ सुनाई दी। खैमागाह में लोग लरज़ उठे।

17 तब मूसा लोगों को अल्लाह से मिलने के लिए खैमागाह से बाहर पहाड़ की तरफ ले गया, और वह पहाड़ के दामन में खड़े हुए।

18 सीना पहाड़ धुँए से ढका हुआ था, क्योंकि रब आग में उस पर उतर आया। पहाड़ से धुँआँ इस तरह उठ रहा था जैसे किसी भट्टे से उठता है। पूरा पहाड़ शिदत से लरज़ने लगा।

19 नरसिंगे की आवाज़ तेज़ से तेज़तर होती गई। मूसा बोलने लगा और अल्लाह उसे ऊँची आवाज़ में जवाब देता रहा।

20 रब सीना पहाड़ की चोटी पर उतरा और मूसा को ऊपर आने के लिए कहा। मूसा ऊपर चढ़ा।

21 रब ने मूसा से कहा, “फ़ौरन नीचे उतरकर लोगों को खबरदार कर कि वह मुझे देखने के लिए पहाड़ की हदूद में ज़बरदस्ती दाखिल न हों। अगर वह ऐसा करें तो बहुत-से हलाक हो जाएंगे।

22 इमाम भी जो रब के हुज़ूर आते हैं अपने आपको मखसूसो-मुकद्दस करें, वरना मेरा गज़ब उन पर टूट पड़ेगा।”

23 लेकिन मूसा ने रब से कहा, “लोग पहाड़ पर नहीं आ सकते, क्योंकि तूने खुद ही हमें खबरदार किया कि हम पहाड़ की हड्डें मुकर्रर करके उसे मखसूसो-मुकद्दस करें।”

24 रब ने जवाब दिया, “तो भी उतर जा और हारून को साथ लेकर वापस आ। लेकिन इमामों और लोगों को मत आने दे। अगर वह ज़बरदस्ती मेरे पास आएँ तो मेरा गज़ब उन पर टूट पड़ेगा।”

25 मूसा ने लोगों के पास उतरकर उन्हें यह बातें बता दीं।

20

दस अहकाम

- 1 तब अल्लाह ने यह तमाम बातें फ़रमाईं,
- 2 “मैं रब तेरा खुदा हूँ जो तुझे मुल्के-मिसर की गुलामी से निकाल लाया।
- 3 मेरे सिवा किसी और माबूद की परस्तिश न करना।
- 4 अपने लिए बुत न बनाना। किसी भी चीज़ की मूरत न बनाना, चाहे वह आसमान में, ज़मीन पर या समुंदर में हो।
- 5 न बुतों की परस्तिश, न उनकी खिदमत करना, क्योंकि मैं तेरा रब गयूर खुदा हूँ। जो मुझसे नफ़रत करते हैं उन्हें मैं तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा दूँगा।
- 6 लेकिन जो मुझसे मुहब्बत रखते और मेरे अहकाम पूरे करते हैं उन पर मैं हज़ार पुश्तों तक मेहरबानी करूँगा।
- 7 रब अपने खुदा का नाम बेमक़सद या ग़लत मक़सद के लिए इस्तेमाल न करना। जो भी ऐसा करता है उसे रब सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ेगा।
- 8 सबत के दिन का ख़याल रखना। उसे इस तरह मनाना कि वह मख़सूसो-मुक़द्दस हो।
- 9 हफ़ते के पहले छः दिन अपना काम-काज कर,
- 10 लेकिन सातवाँ दिन रब तेरे खुदा का आराम का दिन है। उस दिन किसी तरह का काम न करना। न तू, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा नौकर, न तेरी नौकरानी और न तेरे मवेशी। जो परदेसी तेरे दरमियान रहता है वह भी काम न करे।
- 11 क्योंकि रब ने पहले छः दिन में आसमानो-ज़मीन, समुंदर और जो कुछ उनमें है बनाया लेकिन सातवें दिन आराम किया। इसलिए रब ने सबत के दिन को बरकत देकर मुकर्रर किया कि वह मख़सूस और मुक़द्दस हो।
- 12 अपने बाप और अपनी माँ की इज़ज़त करना। फिर तू उस मुल्क में जो रब तेरा खुदा तुझे देनेवाला है देर तक जीता रहेगा।
- 13 क़त्ल न करना।
- 14 ज़िना न करना।

15 चोरी न करना।

16 अपने पड़ोसी के बारे में झूठी गवाही न देना।

17 अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना। न उस की बीबी का, न उसके नौकर का, न उस की नौकरानी का, न उसके बैल और न उसके गधे का बल्कि उस की किसी भी चीज़ का लालच न करना।”

लोग घबरा जाते हैं

18 जब बाकी तमाम लोगों ने बादल की गरज और नरसिंग की आवाज़ सुनी और बिजली की चमक और पहाड़ से उठते हुए धुँएँ को देखा तो वह खौफ के मारे काँपने लगे और पहाड़ से दूर खड़े हो गए।

19 उन्होंने मूसा से कहा, “आप ही हमसे बात करें तो हम सुनेंगे। लेकिन अल्लाह को हमसे बात न करने दें वरना हम मर जाएंगे।”

20 लेकिन मूसा ने उनसे कहा, “मत डरो, क्योंकि रब तुम्हें जाँचने के लिए आया है, ताकि उसका खौफ तुम्हारी आँखों के सामने रहे और तुम गुनाह न करो।”

21 लोग दूर ही रहे जबकि मूसा उस गहरी तारीकी के करीब गया जहाँ अल्लाह था।

22 तब रब ने मूसा से कहा, “इसराईलियों को बता, ‘तुमने खुद देखा कि मैंने आसमान पर से तुम्हारे साथ बातें की हैं।’

23 चुनाँचे मेरी परस्तिश के साथ साथ अपने लिए सोने या चाँदी के बुत न बनाओ।

24 मेरे लिए मिट्टी की कुरबानगाह बनाकर उस पर अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों की भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ चढ़ाना। मैं तुझे वह जगहें दिखाऊँगा जहाँ मेरे नाम की ताज़ीम में कुरबानियाँ पेश करनी हैं। ऐसी तमाम जगहों पर मैं तेरे पास आकर तुझे बरकत दूँगा।

25 अगर तू मेरे लिए कुरबानगाह बनाने की खातिर पत्थर इस्तेमाल करना चाहे तो तराशे हुए पत्थर इस्तेमाल न करना। क्योंकि तू तराशने के लिए इस्तेमाल होनेवाले औज़ार से उस की बेहुरमती करेगा।

26 कुरबानगाह को सीढियों के बगैर बनाना है ताकि उस पर चढ़ने से तेरे लिबास के नीचे से तेरा नंगापन नज़र न आए।’

21

1 इसराईलियों को यह अहकाम बता,

इब्रानी गुलाम के हुकूक

2 'अगर तू इब्रानी गुलाम खरीदे तो वह छः साल तेरा गुलाम रहे। इसके बाद लाज़िम है कि उसे आज़ाद कर दिया जाए। आज़ाद होने के लिए उसे पैसे देने की ज़रूरत नहीं होगी।

3 अगर गुलाम ग़ैरशादीशुदा हालत में मालिक के घर आया हो तो वह आज़ाद होकर अकेला ही चला जाए। अगर वह शादीशुदा हालत में आया हो तो लाज़िम है कि वह अपनी बीवी समेत आज़ाद होकर जाए।

4 अगर मालिक ने गुलाम की शादी कराई और बच्चे पैदा हुए हैं तो उस की बीवी और बच्चे मालिक की मिलकियत होंगे। छः साल के बाद जब गुलाम आज़ाद होकर जाए तो उस की बीवी और बच्चे मालिक ही के पास रहें।

5 अगर गुलाम कहे, "मैं अपने मालिक और अपने बीवी बच्चों से मुहब्बत रखता हूँ, मैं आज़ाद नहीं होना चाहता"

6 तो गुलाम का मालिक उसे अल्लाह के सामने लाए। वह उसे दरवाज़े या उस की चौखट के पास ले जाए और सुताली यानी तेज़ औज़ार से उसके कान की लौ छेद दे। तब वह ज़िंदगी-भर उसका गुलाम बना रहेगा।

7 अगर कोई अपनी बेटी को गुलामी में बेच डाले तो उसके लिए आज़ादी मिलने की शरायत मर्द से फ़रक़ हैं।

8 अगर उसके मालिक ने उसे मुंतख़ब किया कि वह उस की बीवी बन जाए, लेकिन बाद में वह उसे पसंद न आए तो लाज़िम है कि वह मुनासिब मुआवज़ा लेकर उसे उसके रिश्तेदारों को वापस कर दे। उसे औरत को ग़ैरमुल्कियों के हाथ बेचने का इख़्तियार नहीं है, क्योंकि उसने उसके साथ बेवफ़ा सुलूक किया है।

9 अगर लौंडी का मालिक उस की अपने बेटे के साथ शादी कराए तो औरत को बेटी के हुकूक हासिल होंगे।

10 अगर मालिक ने उससे शादी करके बाद में दूसरी औरत से भी शादी की तो लाज़िम है कि वह पहली को भी खाना और कपड़े देता रहे। इसके अलावा उसके साथ हमबिसतर होने का फ़र्ज़ भी अदा करना है।

11 अगर वह यह तीन फ़रायज़ अदा न करे तो उसे औरत को आज़ाद करना पड़ेगा। इस सूत में उसे मुफ़्त आज़ाद करना होगा।

ज़ख़मी करने की सज़ा

12 जो किसी को जान-बूझकर इतना सख्त मारता हो कि वह मर जाए तो उसे ज़रूर सज़ाए-मौत देना है।

13 लेकिन अगर उसने उसे जान-बूझकर न मारा बल्कि यह इतफ़ाक़ से हुआ और अल्लाह ने यह होने दिया, तो मारनेवाला एक ऐसी जगह पनाह ले सकता है जो मैं मुक़र्रर करूँगा। वहाँ उसे क़त्ल किए जाने की इजाज़त नहीं होगी।

14 लेकिन जो दीदा-दानिस्ता और चालाकी से किसी को मार डालता है उसे मेरी क़ुरबानगाह से भी छीनकर सज़ाए-मौत देना है।

15 जो अपने बाप या अपनी माँ को मारता पीटता है उसे सज़ाए-मौत दी जाए।

16 जिसने किसी को इग़वा कर लिया है उसे सज़ाए-मौत दी जाए, चाहे वह उसे गुलाम बनाकर बेच चुका हो या उसे अब तक अपने पास रखा हुआ हो।

17 जो अपने बाप या माँ पर लानत करे उसे सज़ाए-मौत दी जाए।

18 हो सकता है कि आदमी झगड़ें और एक शख्स दूसरे को पत्थर या मुक्के से इतना ज़ख़मी कर दे कि गो वह बच जाए वह बिस्तर से उठ न सकता हो।

19 अगर बाद में मरीज़ यहाँ तक शफ़ा पाए कि द्बारा उठकर लाठी के सहारे चल-फिर सके तो चोट पहुँचानेवाले को सज़ा नहीं मिलेगी। उसे सिर्फ़ उस वक़्त के लिए मुआवज़ा देना पड़ेगा जब तक मरीज़ पैसे न कमा सके। साथ ही उसे उसका पूरा इलाज करवाना है।

20 जो अपने गुलाम या लौंडी को लाठी से यों मारे कि वह मर जाए उसे सज़ा दी जाए।

21 लेकिन अगर गुलाम या लौंडी पिटाई के बाद एक या दो दिन जिंदा रहे तो मालिक को सज़ा न दी जाए। क्योंकि जो रक़म उसने उसके लिए दी थी उसका नुक़सान उसे ख़ुद उठाना पड़ेगा।

22 हो सकता है कि लोग आपस में लड़ रहे हों और लड़ते लड़ते किसी हामिला औरत से यों टकरा जाएँ कि उसका बच्चा ज़ाय़ा हो जाए। अगर कोई और नुक़सान न हुआ हो तो ज़रब पहुँचानेवाले को ज़ुरमाना देना पड़ेगा। औरत का शौहर यह ज़ुरमाना मुक़र्रर करे, और अदालत में इसकी तसदीक़ हो।

23 लेकिन अगर उस औरत को और नुक़सान भी पहुँचा हो तो फिर ज़रब पहुँचानेवाले को इस उसूल के मुताबिक़ सज़ा दी जाए कि जान के बदले जान,

24 आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ के बदले हाथ, पाँव के बदले पाँव,

25 जलने के ज़ख़म के बदले जलने का ज़ख़म, मार के बदले मार, काट के बदले काट।

26 अगर कोई मालिक अपने गुलाम की आँख पर यों मारे कि वह ज़ाया हो जाए तो उसे गुलाम को आँख के बदले आज़ाद करना पड़ेगा, चाहे गुलाम मर्द हो या औरत।

27 अगर मालिक के पीटने से गुलाम का दाँत टूट जाए तो उसे गुलाम को दाँत के बदले आज़ाद करना पड़ेगा, चाहे गुलाम मर्द हो या औरत।

नुक़सान का मुआवज़ा

28 अगर कोई बैल किसी मर्द या औरत को ऐसा मारे कि वह मर जाए तो उस बैल को संगसार किया जाए। उसका गोशत खाने की इजाज़त नहीं है। इस सूत में बैल के मालिक को सज़ा न दी जाए।

29 लेकिन हो सकता है कि मालिक को पहले आगाह किया गया था कि बैल लोगों को मारता है, तो भी उसने बैल को खुला छोड़ा था जिसके नतीजे में उसने किसी को मार डाला। ऐसी सूत में न सिर्फ़ बैल को बल्कि उसके मालिक को भी संगसार करना है।

30 लेकिन अगर फ़ैसला किया जाए कि वह अपनी जान का फ़िघा दे तो जितना मुआवज़ा भी मुकर्रर किया जाए उसे देना पड़ेगा।

31 सज़ा में कोई फ़रक़ नहीं है, चाहे बेटे को मारा जाए या बेटी को।

32 लेकिन अगर बैल किसी गुलाम या लौंडी को मार दे तो उसका मालिक गुलाम के मालिक को चाँदी के 30 सिक्के दे और बैल को संगसार किया जाए।

33 हो सकता है कि किसी ने अपने हौज़ को खुला रहने दिया या हौज़ बनाने के लिए गढा खोदकर उसे खुला रहने दिया और कोई बैल या गधा उसमें गिरकर मर गया।

34 ऐसी सूत में हौज़ का मालिक मुरदा जानवर के लिए पैसे दे। वह जानवर के मालिक को उस की पूरी कीमत अदा करे और मुरदा जानवर ख़ुद ले ले।

35 अगर किसी का बैल किसी दूसरे के बैल को ऐसे मारे कि वह मर जाए तो दोनों मालिक ज़िंदा बैल को बेचकर उसके पैसे आपस में बराबर बाँट लें। इसी तरह वह मुरदा बैल को भी बराबर तकसीम करें।

36 लेकिन हो सकता है कि मालिक को मालूम था कि मेरा बैल दूसरे जानवरों पर हमला करता है, इसके बावजूद उसने उसे आज़ाद छोड़ दिया था। ऐसी सूत में

उसे मुरदा बैल के एवज़ उसके मालिक को नया बैल देना पड़ेगा, और वह मुरदा बैल खुद ले ले।

22

मिलकियत की हिफ़ाज़त

1 जिसने कोई बैल या भेड़ चोरी करके उसे ज़बह किया या बेच डाला है उसे हर चोरी के बैल के एवज़ पाँच बैल और हर चोरी की भेड़ के एवज़ चार भेड़ें वापस करना है।

2 हो सकता है कि कोई चोर नक़ब लगा रहा हो और लोग उसे पकड़कर यहाँ तक मारते पीटते रहें कि वह मर जाए। अगर रात के वक़्त ऐसा हुआ हो तो वह उसके खून के ज़िम्मादार नहीं ठहर सकते।

3 लेकिन अगर सूरज के तुलू होने के बाद ऐसा हुआ हो तो जिसने उसे मारा वह कातिल ठहरेगा।

चोर को हर चुराई हुई चीज़ का एवज़ाना देना है। अगर उसके पास देने के लिए कुछ न हो तो उसे गुलाम बनाकर बेचना है। जो पैसे उसे बेचने के एवज़ मिलें वह चुराई हुई चीज़ों के बदले में दिए जाएँ।

4 अगर चोरी का जानवर चोर के पास ज़िंदा पाया जाए तो उसे हर जानवर के एवज़ दो देने पड़ेंगे, चाहे वह बैल, भेड़, बकरी या गधा हो।

5 हो सकता है कि कोई अपने मवेशी को अपने खेत या अंगूर के बाग़ में छोड़कर चरने दे और होते होते वह किसी दूसरे के खेत या अंगूर के बाग़ में जाकर चरने लगे। ऐसी सूरत में लाज़िम है कि मवेशी का मालिक नुक़सान के एवज़ अपने अंगूर के बाग़ और खेत की बेहतरीन पैदावार में से दे।

6 हो सकता है कि किसी ने आग जलाई हो और वह काँटेदार झाड़ियों के ज़रीए पड़ोसी के खेत तक फैलकर उसके अनाज के पूलों को, उस की पकी हुई फ़सल को या खेत की किसी और पैदावार को बरबाद कर दे। ऐसी सूरत में जिसने आग जलाई हो उसे उस की पूरी क़ीमत अदा करनी है।

7 हो सकता है कि किसी ने कुछ पैसे या कोई और माल अपने किसी वाक्किफ़कार के सुपर्द कर दिया हो ताकि वह उसे महफूज़ रखे। अगर यह चीज़ें उसके घर से चोरी हो जाएँ और बाद में चोर को पकड़ा जाए तो चोर को उस की दुगनी क़ीमत अदा करनी पड़ेगी।

8 लेकिन अगर चोर पकड़ा न जाए तो लाज़िम है कि उस घर का मालिक जिसके सुपर्द यह चीज़ें की गई थीं अल्लाह के हुज़ूर खड़ा हो ताकि मालूम किया जाए कि उसने खुद यह माल चोरी किया है या नहीं।

9 हो सकता है कि दो लोगों का आपस में झगड़ा हो, और दोनों किसी चीज़ के बारे में दावा करते हों कि यह मेरी है। अगर कोई क़ीमती चीज़ हो मसलन बैल, गधा, भेड़, बकरी, कपड़े या कोई खोई हुई चीज़ तो मामला अल्लाह के हुज़ूर लाया जाए। जिसे अल्लाह कुसूरवार करार दे उसे दूसरे को ज़ेरे-बहस चीज़ की दुगनी क़ीमत अदा करनी है।

10 हो सकता है कि किसी ने अपना कोई गधा, बैल, भेड़, बकरी या कोई और जानवर किसी वाक्किफ़कार के सुपर्द कर दिया ताकि वह उसे महफूज़ रखे। वहाँ जानवर मर जाए या ज़ख़मी हो जाए, या कोई उस पर क़ब्ज़ा करके उसे उस वक़्त ले जाए जब कोई न देख रहा हो।

11 यह मामला यों हल किया जाए कि जिसके सुपर्द जानवर किया गया था वह रब के हुज़ूर क़सम खाकर कहे कि मैंने अपने वाक्किफ़कार के जानवर के लालच में यह काम नहीं किया। जानवर के मालिक को यह क़बूल करना पड़ेगा, और दूसरे को इसके बदले कुछ नहीं देना होगा।

12 लेकिन अगर वाकई जानवर को चोरी किया गया है तो जिसके सुपर्द जानवर किया गया था उसे उस की क़ीमत अदा करनी पड़ेगी।

13 अगर किसी जंगली जानवर ने उसे फाड़ डाला हो तो वह सबूत के तौर पर फाड़ी हुई लाश को ले आए। फिर उसे उस की क़ीमत अदा नहीं करनी पड़ेगी।

14 हो सकता है कि कोई अपने वाक्किफ़कार से इजाज़त लेकर उसका जानवर इस्तेमाल करे। अगर जानवर को मालिक की ग़ैरमौजूदगी में चोट लगे या वह मर जाए तो उस शख्स को जिसके पास जानवर उस वक़्त था उसका मुआवज़ा देना पड़ेगा।

15 लेकिन अगर जानवर का मालिक उस वक़्त साथ था तो दूसरे को मुआवज़ा देने की ज़रूरत नहीं होगी। अगर उसने जानवर को किराए पर लिया हो तो उसका नुक़सान किराए से पूरा हो जाएगा।

लड़की को वरगलाने का जुर्म

16 अगर किसी कुंवारी की मँगनी नहीं हुई और कोई मर्द उसे वरगलाकर उससे हमबिसतर हो जाए तो वह महर देकर उससे शादी करे।

17 लेकिन अगर लड़की का बाप उस की उस मर्द के साथ शादी करने से इनकार करे, इस सूरत में भी मर्द को कुँवारी के लिए मुकर्ररा रकम देनी पड़ेगी।

सज़ाए-मौत के लायक ज़रायम

18 जादूगरनी को जीने न देना।

19 जो शरख़ किसी जानवर के साथ जिंसी ताल्लुकात रखता हो उसे सज़ाए-मौत दी जाए।

20 जो न सिर्फ़ रब को कुरबानियाँ पेश करे बल्कि दीगर माबूदों को भी उसे क्रौम से निकालकर हलाक किया जाए।

कमज़ोरों की हिफ़ाज़त के लिए अहकाम

21 जो परदेसी तैरे मुल्क में मेहमान है उसे न दबाना और न उससे बुरा सुलूक करना, क्योंकि तुम भी मिसर में परदेसी थे।

22 किसी बेवा या यतीम से बुरा सुलूक न करना।

23 अगर तू ऐसा करे और वह चिल्लाकर मुझसे फ़रियाद करे तो मैं ज़रूर उनकी सुनूँगा।

24 मैं बड़े गुस्से में आकर तुम्हें तलवार से मार डालूँगा। फिर तुम्हारी बीवियाँ खुद बेवाएँ और तुम्हारे बच्चे खुद यतीम बन जाएंगे।

25 अगर तूने मेरी क्रौम के किसी ग़रीब को क़र्ज़ दिया है तो उससे सूद न लेना।

26 अगर तुझे किसी से उस की चादर गिरवी के तौर पर मिली हो तो उसे सूरज डूबने से पहले ही वापस कर देना है,

27 क्योंकि इसी को वह सोने के लिए इस्तेमाल करता है। वरना वह क्या चीज़ ओढ़कर सोएगा? अगर तू चादर वापस न करे और वह शरख़ चिल्लाकर मुझसे फ़रियाद करे तो मैं उस की सुनूँगा, क्योंकि मैं मेहरबान हूँ।

अल्लाह से मुताल्लिक़ फ़रायज़

28 अल्लाह को न कोसना, न अपनी क्रौम के किसी सरदार पर लानत करना।

29 मुझे वक़्त पर अपने खेत और कोल्हूओं की पैदावार में से नज़राने पेश करना। अपने पहलौठे मुझे देना।

30 अपने बैलों, भेड़ों और बकरियों के पहलौठों को भी मुझे देना। जानवर का पहलौठा पहले सात दिन अपनी माँ के साथ रहे। आठवें दिन वह मुझे दिया जाए।

31 अपने आपको मेरे लिए मखसूसो-मुकद्दस रखना। इसलिए ऐसे जानवर का गोशत मत खाना जिसे किसी जंगली जानवर ने फाड़ डाला है। ऐसे गोशत को कुत्तों को खाने देना।

23

अदालत में इनसाफ़ और दूसरों से मुहब्बत

1 गलत अफ़वाहें न फैलाना। किसी शरीर आदमी का साथ देकर झूटी गवाही देना मना है।

2 अगर अकसरियत गलत काम कर रही हो तो उसके पीछे न हो लेना। अदालत में गवाही देते वक़्त अकसरियत के साथ मिलकर ऐसी बात न करना जिससे गलत फैसला किया जाए।

3 लेकिन अदालत में किसी गरीब की तरफ़दारी भी न करना।

4 अगर तुझे तैरे दुश्मन का बैल या गधा आवारा फिरता हुआ नज़र आए तो उसे हर सूरत में वापस कर देना।

5 अगर तुझसे नफ़रत करनेवाले का गधा बोझ तले गिर गया हो और तुझे पता लगे तो उसे न छोड़ना बल्कि ज़रूर उस की मदद करना।

6 अदालत में गरीब के हुकूक न मारना।

7 ऐसे मामले से दूर रहना जिसमें लोग झूट बोलते हैं। जो बेगुनाह और हक़ पर है उसे सज़ाए-मौत न देना, क्योंकि मैं कुसूरवार को हक़-बजानिब नहीं ठहराऊँगा।

8 रिश्वत न लेना, क्योंकि रिश्वत देखनेवाले को अंधा कर देती है और उस की बात बनने नहीं देती जो हक़ पर है।

9 जो परदेसी तैरे मुल्क में मेहमान है उस पर दबाव न डालना। तुम ऐसे लोगों की हालत से ख़ूब वाकिफ़ हो, क्योंकि तुम खुद मिसर में परदेसी रहे हो।

सबत का साल और सबत

10 छः साल तक अपनी ज़मीन में बीज बोकर उस की पैदावार जमा करना।

11 लेकिन सातवें साल ज़मीन को इस्तेमाल न करना बल्कि उसे पड़े रहने देना। जो कुछ भी उगे वह क़ौम के गरीब लोग खाएँ। जो उनसे बच जाए उसे जंगली जानवर खाएँ। अपने अंगूर और जैतून के बाग़ों के साथ भी ऐसा ही करना है।

12 छः दिन अपना काम-काज करना, लेकिन सातवें दिन आराम करना। फिर तेरा बैल और तेरा गधा भी आराम कर सकेंगे, तेरी लौंडी का बेटा और तेरे साथ रहनेवाला परदेसी भी ताजादम हो जाएंगे।

13 जो भी हिदायत मैंने दी है उस पर अमल कर। दीगर माबूदों की परस्तिश न करना। मैं तेरे मुँह से उनके नामों तक का ज़िक्र न सुनूँ।

तीन खास ईदें

14 साल में तीन दफ़ा मेरी ताज़ीम में ईद मनाना।

15 पहले, बेखमीरी रोटी की ईद मनाना। अबीब के महीने * में सात दिन तक तेरी रोटी में खमीर न हो जिस तरह मैंने हुक्म दिया है, क्योंकि इस महीने में तू मिसर से निकला। इन दिनों में कोई मेरे हुज़ूर खाली हाथ न आए।

16 दूसरे, फ़सलकटाई की ईद उस वक़्त मनाना जब तू अपने खेत में बोई हुई पहली फ़सल काटेगा। तीसरे, जमा करने की ईद फ़सल की कटाई के इख़िताम † पर मनाना है जब तूने अंगूर और बाकी बाग़ों के फल जमा किए होंगे।

17 यों तेरे तमाम मर्द तीन मरतबा रब कादिरे-मुतलक के हुज़ूर हाज़िर हुआ करें।

18 जब तू किसी जानवर को ज़बह करके कुरबानी के तौर पर पेश करे तो उसके खून के साथ ऐसी रोटी पेश न करना जिसमें खमीर हो। और जो जानवर तू मेरी ईदों पर चढाए उनकी चरबी अगली सुबह तक बाकी न रहे।

19 अपनी ज़मीन की पहली पैदावार का बेहतरीन हिस्सा रब अपने खुदा के घर में लाना।

भेड़ या बकरी के बच्चे को उस की माँ के दूध में न पकाना।

रब का फ़रिश्ता राहनुमाई करेगा

20 मैं तेरे आगे आगे फ़रिश्ता भेजता हूँ जो रास्ते में तेरी हिफ़ाज़त करेगा और तुझे उस जगह तक ले जाएगा जो मैंने तेरे लिए तैयार की है।

21 उस की मौजूदगी में एहतियात बरतना। उस की सुनना, और उस की खिलाफ़रज़ी न करना। अगर तू सरकश हो जाए तो वह तुझे मुआफ़ नहीं करेगा, क्योंकि मेरा नाम उसमें हाज़िर होगा।

22 लेकिन अगर तू उस की सुने और सब कुछ करे जो मैं तुझे बताता हूँ तो मैं तेरे दुश्मनों का दुश्मन और तेरे मुखालिफ़ों का मुखालिफ़ हूँगा।

* 23:15 मार्च ता अप्रैल। † 23:16 सितंबर ता अक्टूबर।

23 क्योंकि मेरा फ़रिश्ता तेरे आगे आगे चलेगा और तुझे मुल्के-कनान तक पहुँचा देगा जहाँ अमोरी, हिती, फ़रिज़्जी, कनानी, हिब्वी और यबूसी आबाद हैं। तब मैं उन्हें स्प-ज़मीन पर से मिटा दूँगा।

24 उनके माबूदों को सिजदा न करना, न उनकी खिदमत करना। उनके रस्मो-रिवाज भी न अपनाना बल्कि उनके बुतों को तबाह कर देना। जिन सत्तुनों के सामने वह इबादत करते हैं उनको भी टुकड़े टुकड़े कर डालना।

25 रब अपने ख़ुदा की खिदमत करना। फिर मैं तेरी ख़ुराक और पानी को बरकत देकर तमाम बीमारियाँ तुझसे दूर करूँगा।

26 फिर तेरे मुल्क में न किसी का बच्चा ज़ाया होगा, न कोई बाँझ होगी। साथ ही मैं तुझे तवील ज़िंदगी अता करूँगा।

27 मैं तेरे आगे आगे दहशत फैलाऊँगा। जहाँ भी तू जाएगा वहाँ मैं तमाम कौमों में अबतरी पैदा करूँगा। मेरे सबब से तेरे सारे दुश्मन पलटकर भाग जाएंगे।

28 मैं तेरे आगे जंबूर भेज दूँगा जो हिब्वी, कनानी और हिती को मुल्क छोड़ने पर मजबूर करेंगे।

29 लेकिन जब तू वहाँ पहुँचेगा तो मैं उन्हें एक ही साल में मुल्क से नहीं निकालूँगा। वरना पूरा मुल्क वीरान हो जाएगा और जंगली जानवर फैलकर तेरे लिए नुक़सान का बाइस बन जाएंगे।

30 इसलिए मैं तेरे पहुँचने पर मुल्क के बाशिंदों को थोड़ा थोड़ा करके निकालता जाऊँगा। इतने में तेरी तादाद बढ़ेगी और तू रफ़ता रफ़ता मुल्क पर क़ब्ज़ा कर सकेगा।

31 मैं तेरी सरहदें मुक़रर करूँगा। बहरे-कुलज़ुम एक हद होगी और फ़िलिस्तियों का समुंदर दूसरी, जुनूब का रेगिस्तान एक होगी और दरियाए-फ़ुरात दूसरी। मैं मुल्क के बाशिंदों को तेरे क़ब्ज़े में कर दूँगा, और तू उन्हें अपने आगे आगे मुल्क से दूर करता जाएगा।

32 लाज़िम है कि तू उनके साथ या उनके माबूदों के साथ अहद न बाँधे।

33 उनका तेरे मुल्क में रहना मना है, वरना तू उनके सबब से मेरा गुनाह करेगा। अगर तू उनके माबूदों की इबादत करेगा तो यह तेरे लिए फंदा बन जाएगा।”

24

रब इसराईल से अहद बाँधता है

1 रब ने मूसा से कहा, “तू, हास्न, नदब, अबीह और इसराईल के 70 बुजुर्ग मेरे पास ऊपर आँ। कुछ फ़ासले पर खड़े होकर मुझे सिजदा करो।

2 सिर्फ़ तू अकेला ही मेरे करीब आ, दूसरे दूर रहें। और क़ौम के बाकी लोग तेरे साथ पहाड़ पर न चढ़ें।”

3 तब मूसा ने क़ौम के पास जाकर रब की तमाम बातें और अहकाम पेश किए। जवाब में सबने मिलकर कहा, “हम रब की इन तमाम बातों पर अमल करेंगे।”

4 तब मूसा ने रब की तमाम बातें लिख लीं। अगले दिन वह सुबह-सवेरे उठा और पहाड़ के पास गया। उसके दामन में उसने कुरबानगाह बनाई। साथ ही उसने इसराईल के हर एक कबीले के लिए एक एक पत्थर का सतून खड़ा किया।

5 फिर उसने कुछ इसराईली नौजवानों को कुरबानी पेश करने के लिए बुलाया ताकि वह रब की ताज़ीम में भस्म होनेवाली कुरबानियाँ चढ़ाएँ और जवान बैलों को सलामती की कुरबानी के तौर पर पेश करें।

6 मूसा ने कुरबानियों का खून जमा किया। उसका आधा हिस्सा उसने बासनों में डाल दिया और आधा हिस्सा कुरबानगाह पर छिड़क दिया।

7 फिर उसने वह किताब ली जिसमें रब के साथ अहद की तमाम शरायत दर्ज थीं और उसे क़ौम को पढ़कर सुनाया। जवाब में उन्होंने कहा, “हम रब की इन तमाम बातों पर अमल करेंगे। हम उस की सुनेंगे।”

8 इस पर मूसा ने बासनों में से खून लेकर उसे लोगों पर छिड़का और कहा, “यह खून उस अहद की तसदीक़ करता है जो रब ने तुम्हारे साथ किया है और जो उस की तमाम बातों पर मबनी है।”

9 इसके बाद मूसा, हास्न, नदब, अबीह और इसराईल के 70 बुजुर्ग सीना पहाड़ पर चढ़े।

10 वहाँ उन्होंने इसराईल के ख़ुदा को देखा। लगता था कि उसके पाँवों के नीचे संगे-लाजवर्द का-सा तख़्ता था। वह आसमान की मानिंद साफ़ो-शफ़फ़ाफ़ था।

11 अगरचे इसराईल के राहनुमाओं ने यह सब कुछ देखा तो भी रब ने उन्हें हलाक न किया, बल्कि वह अल्लाह को देखते रहे और उसके हुज़ूर अहद का खाना खाते और पीते रहे।

पत्थर की तख़्तियाँ

12 पहाड़ से उतरने के बाद रब ने मूसा से कहा, “मेरे पास पहाड़ पर आकर कुछ देर के लिए ठहरे रहना। मैं तुझे पत्थर की तख़्तियाँ दूँगा जिन पर मैंने अपनी

शरीअत और अहकाम लिखे हैं और जो इसराईल की तालीमो-तरबियत के लिए ज़रूरी हैं।”

13 मूसा अपने मददगार यशुअ के साथ चल पड़ा और अल्लाह के पहाड़ पर चढ़ गया।

14 पहले उसने बुजुर्गों से कहा, “हमारी वापसी के इंतज़ार में यहाँ ठहरे रहो। हासून और हर तुम्हारे पास रहेंगे। कोई भी मामला हो तो लोग उन्हीं के पास जाएँ।”

मूसा रब से मिलता है

15 जब मूसा चढ़ने लगा तो पहाड़ पर बादल छा गया।

16 रब का जलाल कोहे-सीना पर उतर आया। छः दिन तक बादल उस पर छाया रहा। सातवें दिन रब ने बादल में से मूसा को बुलाया।

17 रब का जलाल इसराईलियों को भी नज़र आता था। उन्हें यों लगा जैसा कि पहाड़ की चोटी पर तेज़ आग भड़क रही हो।

18 चढते चढते मूसा बादल में दाखिल हुआ। वहाँ वह चालीस दिन और चालीस रात रहा।

25

मुलाकात का खैमा बनाने के लिए हदिये

1 रब ने मूसा से कहा,

2 “इसराईलियों को बता कि वह हदिये लाकर मुझे उठानेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करें। लेकिन सिर्फ़ उनसे हदिये कबूल करो जो दिली खुशी से दें।

3 उनसे यह चीज़ें हदिये के तौर पर कबूल करो : सोना, चाँदी, पीतल;

4 नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग का धागा, बारीक कतान, बकरी के बाल,

5 मेंढों की सुर्ख रँगी हुई खालें, तख़स * की खालें, कीकर की लकड़ी,

6 शमादान के लिए जैतून का तेल, मसह करने के लिए तेल और खुशबूदार बखूर के लिए मसाले,

7 अक्रीके-अहमर और दीगर जवाहर जो इमामे-आज़म के बालापोश और सीने के कीसे में जड़े जाएँगे।

8 इन चीज़ों से लोग मेरे लिए मक़दिस बनाएँ ताकि मैं उनके दरमियान रहूँ।

* 25:5 गालिबन इस मतस्क इब्रानी लफज़ से मुराद कोई समुंदरी जानवर है।

9 मैं तुझे मकदिस और उसके तमाम सामान का नमूना दिखाऊँगा, क्योंकि तुम्हें सब कुछ ऐन उसी के मुताबिक बनाना है।

अहद का संदूक

10-12 लोग कीकर की लकड़ी का संदूक बनाएँ। उस की लंबाई पौने चार फुट हो जबकि उस की चौड़ाई और ऊँचाई सवा दो दो फुट हो। पूरे संदूक पर अंदर और बाहर से खालिस सोना चढ़ाना। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द सोने की झालर लगाना। संदूक को उठाने के लिए सोने के चार कड़े ढालकर उन्हें संदूक के चारपाइयों पर लगाना। दोनों तरफ दो दो कड़े हों।

13 फिर कीकर की दो लकड़ियाँ संदूक को उठाने के लिए तैयार करना। उन पर सोना चढ़ाकर

14 उनको दोनों तरफ के कड़ों में डालना ताकि उनसे संदूक को उठाया जाए।

15 यह लकड़ियाँ संदूक के इन कड़ों में पड़ी रहें। उन्हें कभी भी दूर न किया जाए।

16 संदूक में शरीअत की वह दो तख्तियाँ रखना जो मैं तुझे दूँगा।

17 संदूक का ढकना खालिस सोने का बनाना। उस की लंबाई पौने चार फुट और चौड़ाई सवा दो फुट हो। उसका नाम कफफारे का ढकना है।

18-19 सोने से घड़कर दो कर्बूबी फरिशते बनाए जाएँ जो ढकने के दोनों सिरों पर खड़े हों। यह दो फरिशते और ढकना एक ही टुकड़े से बनाने हैं।

20 फरिशतों के पर यों ऊपर की तरफ फैले हुए हों कि वह ढकने को पनाह दें। उनके मुँह एक दूसरे की तरफ किए हुए हों, और वह ढकने की तरफ देखें।

21 ढकने को संदूक पर लगा, और संदूक में शरीअत की वह दो तख्तियाँ रख जो मैं तुझे दूँगा।

22 वहाँ ढकने के ऊपर दोनों फरिशतों के दरमियान से मैं अपने आपको तुझ पर ज़ाहिर करके तुझसे हमकलाम हूँगा और तुझे इसराईलियों के लिए तमाम अहकाम दूँगा।

मखसूस रोटियों की मेज़

23 कीकर की लकड़ी की मेज़ बनाना। उस की लंबाई तीन फुट, चौड़ाई डेढ़ फुट और ऊँचाई सवा दो फुट हो।

24 उस पर खालिस सोना चढ़ाना, और उसके इर्दगिर्द सोने की झालर लगाना।

25 मेज़ की ऊपर की सतह पर चौखटा लगाना जिसकी ऊँचाई तीन इंच हो और जिस पर सोने की झालर लगी हो।

26 सोने के चार कड़े ढालकर उन्हें चारों कोनों पर लगाना जहाँ मेज़ के पाए लगे हैं।

27 यह कड़े मेज़ की सतह पर लगे चौखटे के नीचे लगाए जाएँ। उनमें वह लकड़ियाँ डालनी हैं जिनसे मेज़ को उठाया जाएगा।

28 यह लकड़ियाँ भी कीकर की हों और उन पर सोना चढ़ाया जाए। उनसे मेज़ को उठाना है।

29 उसके थाल, प्याले, मरतबान और मै की नज़रें पेश करने के बरतन ख़ालिस सोने से बनाना है।

30 मेज़ पर वह रोटियाँ हर वक़्त मेरे हज़ूर पड़ी रहें जो मेरे लिए मख़सूस हैं।

शमादान

31 ख़ालिस सोने का शमादान भी बनाना। उसका पाया और डंडी घड़कर बनाना है। उस की प्यालियाँ जो फूलों और कलियों की शक़ल की होंगी पाए और डंडी के साथ एक ही टुकड़ा हों।

32 डंडी से दाईं और बाईं तरफ़ तीन तीन शाखें निकलें।

33 हर शाख पर तीन प्यालियाँ लगी हों जो बादाम की कलियों और फूलों की शक़ल की हों।

34 शमादान की डंडी पर भी इस क्रिस्म की प्यालियाँ लगी हों, लेकिन तादाद में चार।

35 इनमें से तीन प्यालियाँ दाएँ बाएँ की छः शाखों के नीचे लगी हों। वह यों लगी हों कि हर प्याली से दो शाखें निकलें।

36 शाखें और प्यालियाँ बल्कि पूरा शमादान ख़ालिस सोने के एक ही टुकड़े से घड़कर बनाना है।

37 शमादान के लिए सात चराग बनाकर उन्हें यों शाखों पर रखना कि वह सामने की जगह रौशन करें।

38 बत्ती कतरने की कैंचियाँ और जलते कोयले के लिए छोटे बरतन भी ख़ालिस सोने से बनाए जाएँ।

39 शमादान और उस सारे सामान के लिए पूरे 34 किलोग्राम ख़ालिस सोना इस्तेमाल किया जाए।

40 गौर कर कि सब कुछ ऐन उस नमूने के मुताबिक बनाया जाए जो मैं तुझे यहाँ पहाड़ पर दिखाता हूँ।

26

मुलाकात का खैमा

1 मुकद्दस खैमे के लिए दस परदे बनाना। उनके लिए बारीक कतान और नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग का धागा इस्तेमाल करना। परदों में किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से कस्बी फ़रिशतों का डिजायन बनवाना।

2 हर परदे की लंबाई 42 फ़ुट और चौड़ाई 6 फ़ुट हो।

3 पाँच परदों के लंबे हाशिये एक दूसरे के साथ जोड़े जाएँ और इसी तरह बाक़ी पाँच भी। यों दो बड़े टुकड़े बन जाएंगे।

4 दोनों टुकड़ों को एक दूसरे के साथ मिलाने के लिए नीले धागे के हलके बनाना। यह हलके हर टुकड़े के 42 फ़ुटवाले एक किनारे पर लगाए जाएँ,

5 एक टुकड़े के हाशिये पर 50 हलके और दूसरे पर भी उतने ही हलके। इन दो हाशियों के हलके एक दूसरे के आमने-सामने हों।

6 फिर सोने की 50 हुकें बनाकर उनसे आमने-सामने के हलके एक दूसरे के साथ मिलाना। यों दोनों टुकड़े जुड़कर खैमे का काम देंगे।

7 बक़री के बालों से भी 11 परदे बनाना जिन्हें कपड़ेवाले खैमे के ऊपर रखा जाए।

8 हर परदे की लंबाई 45 फ़ुट और चौड़ाई 6 फ़ुट हो।

9 पाँच परदों के लंबे हाशिये एक दूसरे के साथ जोड़े जाएँ और इसी तरह बाक़ी छः भी। इन छः परदों के छटे परदे को एक दफ़ा तह करना। यह सामनेवाले हिस्से से लटके।

10 बक़री के बाल के इन दोनों टुकड़ों को भी मिलाना है। इसके लिए हर टुकड़े के 45 फ़ुटवाले एक किनारे पर पचास पचास हलके लगाना।

11 फिर पीतल की 50 हुकें बनाकर उनसे दोनों हिस्से मिलाना।

12 जब बक़रियों के बालों का यह खैमा कपड़े के खैमे के ऊपर लगाया जाएगा तो आधा परदा बाक़ी रहेगा। वह खैमे की पिछली तरफ़ लटका रहे।

13 खैमे के दाईं और बाईं तरफ बकरी के बालों का खैमा कपड़े के खैमे की निसबत डेढ़ डेढ़ फुट लंबा होगा। यों वह दोनों तरफ लटके हुए कपड़े के खैमे को महफूज़ रखेगा।

14 एक दूसरे के ऊपर के इन दोनों खैमों की हिफ़ाज़त के लिए दो गिलाफ़ बनाने हैं। बकरी के बालों के खैमे पर मेंढों की सुर्ख रँगी हुई खालें जोड़कर रखी जाएँ और उन पर तख़स की खालें मिलाकर रखी जाएँ।

15 कीकर की लकड़ी के तख़ते बनाना जो खड़े किए जाएँ ताकि खैमे की दीवारों का काम दें।

16 हर तख़ते की ऊँचाई 15 फुट हो और चौड़ाई सवा दो फुट।

17 हर तख़ते के नीचे दो दो चूलें हों। यह चूलें हर तख़ते को उसके पाइयों के साथ जोड़ेंगी ताकि तख़ता खड़ा रहे।

18 खैमे की जुनूबी दीवार के लिए 20 तख़तों की ज़रूरत है

19 और साथ ही चाँदी के 40 पाइयों की। उन पर तख़ते खड़े किए जाएंगे। हर तख़ते के नीचे दो पाए होंगे, और हर पाए में एक चूल लगेगी।

20 इसी तरह खैमे की शिमाली दीवार के लिए भी 20 तख़तों की ज़रूरत है

21 और साथ ही चाँदी के 40 पाइयों की। वह भी तख़तों को खड़ा करने के लिए हैं। हर तख़ते के नीचे दो पाए होंगे।

22 खैमे की पिछली यानी मगरिबी दीवार के लिए छः तख़ते बनाना।

23 इस दीवार को शिमाली और जुनूबी दीवारों के साथ जोड़ने के लिए कोनेवाले दो तख़ते बनाना।

24 इन दो तख़तों में नीचे से लेकर ऊपर तक कोना हो ताकि एक से शिमाली दीवार मगरिबी दीवार के साथ जुड़ जाए और दूसरे से जुनूबी दीवार मगरिबी दीवार के साथ। इनके ऊपर के सिरे कड़ों से मज़बूत किए जाएँ।

25 यों पिछले यानी मगरिबी तख़तों की पूरी तादाद 8 होगी और इनके लिए चाँदी के पाइयों की तादाद 16, हर तख़ते के नीचे दो दो पाए होंगे।

26-27 इसके अलावा कीकर की लकड़ी के शहतीर बनाना, तीनों दीवारों के लिए पाँच पाँच शहतीर। वह हर दीवार के तख़तों पर यों लगाए जाएँ कि वह उन्हें एक दूसरे के साथ मिलाएँ।

28 दरमियानी शहतीर दीवार की आधी ऊँचाई पर दीवार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लगाया जाए।

29 शहतीरों को तख्तों के साथ लगाने के लिए सोने के कड़े बनाकर तख्तों में लगाना। तमाम तख्तों और शहतीरों पर सोना चढ़ाना।

30 पूरे मुकद्दस खैमे को उसी नमूने के मुताबिक बनाना जो मैं तुझे पहाड पर दिखाता हूँ।

मुकद्दस खैमे के परदे

31 अब एक और परदा बनाना। इसके लिए भी बारीक कतान और नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग का धागा इस्तेमाल करना। उस पर भी किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से कर्बूबी फ़रिशतों का डिजायन बनवाना।

32 इसे सोने की हुकों से कीकर की लकड़ी के चार सतूनों से लटकाना। इन सतूनों पर सोना चढ़ाया जाए और वह चाँदी के पाइयों पर खड़े हों।

33 यह परदा मुकद्दस कमरे को मुकद्दसतरीन कमरे से अलग करेगा जिसमें अहद का संदूक पड़ा रहेगा। परदे को लटकाने के बाद उसके पीछे मुकद्दसतरीन कमरे में अहद का संदूक रखना।

34 फिर अहद के संदूक पर कफ़फ़ारे का ढकना रखना।

35 जिस मेज़ पर मेरे लिए मख़सूस की गई रोटियाँ पड़ी रहती हैं वह परदे के बाहर मुकद्दस कमरे में शिमाल की तरफ़ रखी जाए। उसके मुकाबिल जुनूब की तरफ़ शमादान रखा जाए।

36 फिर खैमे के दरवाज़े के लिए भी परदा बनाया जाए। इसके लिए भी बारीक कतान और नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग का धागा इस्तेमाल किया जाए। इस पर कढ़ाई का काम किया जाए।

37 इस परदे को सोने की हुकों से कीकर की लकड़ी के पाँच सतूनों से लटकाना। इन सतूनों पर भी सोना चढ़ाया जाए, और वह पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

27

जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह

1 कीकर की लकड़ी की कुरबानगाह बनाना। उस की ऊँचाई साढे चार फुट हो जबकि उस की लंबाई और चौड़ाई साढे सात सात फुट हो।

2 उसके ऊपर चारों कोनों में से एक एक सींग निकले। सींग और कुरबानगाह एक ही टुकड़े के हों। सब पर पीतल चढ़ाना।

3 उसका तमाम साजो-सामान और बरतन भी पीतल के हों यानी राख को उठाकर ले जाने की बालटियाँ, बेलचे, काँटे, जलते हुए कोयले के लिए बरतन और छिड़काव के कटोरे।

4 कुरबानगाह को उठाने के लिए पीतल का जंगला बनाना जो ऊपर से खुला हो। जंगले के चारों कोनों पर कड़े लगाए जाएँ।

5 कुरबानगाह की आधी ऊँचाई पर किनारा लगाना, और कुरबानगाह को जंगले में इस किनारे तक रखा जाए।

6 उसे उठाने के लिए कीकर की दो लकड़ियाँ बनाना जिन पर पीतल चढ़ाना है।

7 उनको कुरबानगाह के दोनों तरफ के कड़ों में डाल देना।

8 पूरी कुरबानगाह लकड़ी की हो, लेकिन अंदर से खोखली हो। उसे ऐन उस नमूने के मुताबिक बनाना जो मैं तुझे पहाड़ पर दिखाता हूँ।

खैमे का सहन

9 मुकद्दस खैमे के लिए सहन बनाना। उस की चारदीवारी बारीक कतान के कपड़े से बनाई जाए। चारदीवारी की लंबाई जुनूब की तरफ 150 फुट हो।

10 कपड़े को चाँदी की हुकों और पट्टियों से लकड़ी के 20 खंबों के साथ लगाया जाए। हर खंबा पीतल के पाए पर खड़ा हो।

11 चारदीवारी शिमाल की तरफ भी इसी की मानिद हो।

12 खैमे के पीछे मगरिब की तरफ चारदीवारी की चौड़ाई 75 फुट हो और कपड़ा लकड़ी के 10 खंबों के साथ लगाया जाए। यह खंबे भी पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

13 सामने, मशरिफ़ की तरफ जहाँ से सूरज तुलू होता है चारदीवारी की चौड़ाई भी 75 फुट हो।

14-15 यहाँ चारदीवारी का दरवाज़ा हो। कपड़ा दरवाज़े के दाईं तरफ साढे 22 फुट चौड़ा हो और उसके बाईं तरफ भी उतना ही चौड़ा। उसे दोनों तरफ़ तीन तीन लकड़ी के खंबों के साथ लगाया जाए जो पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

16 दरवाज़े का परदा 30 फुट चौड़ा बनाना। वह नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से बनाया जाए, और उस पर कढाई का काम हो। यह कपड़ा लकड़ी के चार खंबों के साथ लगाया जाए। वह भी पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

17 तमाम खंबे पीतल के पाइयों पर खड़े हों और कपड़ा चाँदी की हुकों और पट्टियों से हर खंबे के साथ लगाया जाए।

18 चारदीवारी की लंबाई 150 फुट, चौड़ाई 75 फुट और ऊँचाई साढ़े 7 फुट हो। खंबों के तमाम पाए पीतल के हों।

19 जो भी साज़ो-सामान मुकद्दस ख़ैमे में इस्तेमाल किया जाता है वह सब पीतल का हो। ख़ैमे और चारदीवारी की मेखें भी पीतल की हों।

शमादान का तेल

20 इसराइलियों को हुक्म देना कि वह तेरे पास कूटे हुए ज़ैतूनों का ख़ालिस तेल लाएँ ताकि मुकद्दस कमरे के शमादान के चराग़ मुतवातिर जलते रहें।

21 हासून और उसके बेटे शमादान को मुलाकात के ख़ैमे के मुकद्दस कमरे में रखें, उस परदे के सामने जिसके पीछे अहद का संदूक है। उसमें वह तेल डालते रहें ताकि वह रब के सामने शाम से लेकर सुबह तक जलता रहे। इसराइलियों का यह उसूल अबद तक कायम रहे।

28

इमामों के लिबास

1 अपने भाई हासून और उसके बेटों नदब, अबीहू, इलियज़र और इतमर को बुला। मैंने उन्हें इसराइलियों में से चुन लिया है ताकि वह इमामों की हैसियत से मेरी खिदमत करें।

2 अपने भाई हासून के लिए मुकद्दस लिबास बनवाना जो पुरवकार और शानदार हों।

3 लिबास बनाने की ज़िम्मादारी उन तमाम लोगों को देना जो ऐसे कामों में माहिर हैं और जिनको मैंने हिकमत की रूह से भर दिया है। क्योंकि जब हासून को मखसूस किया जाएगा और वह मुकद्दस ख़ैमे की खिदमत सरंजाम देगा तो उसे इन कपड़ों की ज़रूरत होगी।

4 उसके लिए यह लिबास बनाने हैं : सीने का कीसा, बालापोश, चोगा, बुना हुआ ज़ेरजामा, पगड़ी और कमरबंद। यह कपड़े अपने भाई हासून और उसके बेटों के लिए बनवाने हैं ताकि वह इमाम के तौर पर खिदमत कर सकें।

5 इन कपड़ों के लिए सोना और नीले, अरग़वानी और किरमिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल किया जाए।

हासून का बालापोश

6 बालापोश को भी सोने और नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से बनाना है। उस पर किसी माहिर कारीगर से कढ़ाई का काम करवाया जाए।

7 उस की दो पट्टियाँ हों जो कंधों पर रखकर सामने और पीछे से बालापोश के साथ लगी हों।

8 इसके अलावा एक पटका बुनना है जिससे बालापोश को बाँधा जाए और जो बालापोश के साथ एक टुकड़ा हो। उसके लिए भी सोना, नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल किया जाए।

9 फिर अक्कीके-अहमर के दो पत्थर चुनकर उन पर इसराईल के बारह बेटों के नाम कंदा करना।

10 हर जौहर पर छः छः नाम उनकी पैदाइश की तरतीब के मुताबिक कंदा किए जाएँ।

11 यह नाम उस तरह जौहरों पर कंदा किए जाएँ जिस तरह मुहर कंदा की जाती है। फिर दोनों जौहर सोने के खानों में जड़कर

12 बालापोश की दो पट्टियों पर ऐसे लगाना कि कंधों पर आ जाएँ। जब हासून मेरे हुज़ूर आएगा तो जौहरों पर के यह नाम उसके कंधों पर होंगे और मुझे इसराईलियों की याद दिलाएँगे।

13 सोने के खाने बनाना

14 और खालिस सोने की दो जंजीरें जो डोरी की तरह गुंधी हुई हों। फिर इन दो जंजीरों को सोने के खानों के साथ लगाना।

सीने का कीसा

15 सीने के लिए कीसा बनाना। उसमें वह कुरे पड़े रहें जिनकी मारिफत मेरी मरज़ी मालूम की जाएगी। माहिर कारीगर उसे उन्हीं चीज़ों से बनाए जिनसे हासून का बालापोश बनाया गया है यानी सोने और नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से।

16 जब कपड़े को एक दफ़ा तह किया गया हो तो कीसे की लंबाई और चौड़ाई नौ नौ इंच हो।

17 उस पर चार क्रतारों में जवाहर जड़ना। हर क्रतार में तीन तीन जौहर हों। पहली क्रतार में लाल, * ज़बरजद † और जुमुरद।

18 दूसरी में फ़ीरोज़ा, संगे-लाजवर्द ‡ और हज़रूल-कमर। §

19 तीसरी में ज़रक्रोन, * अक्रीक † और याकूते-अरगवानी। ‡

20 चौथी में पुखराज, § अक्रीके-अहमर * और यशब। † हर जौहर सोने के खाने में जड़ा हुआ हो।

21 यह बारह जवाहर इसराईल के बारह कबीलों की नुमाइंदगी करते हैं। एक एक जौहर पर एक कबीले का नाम कंदा किया जाए। यह नाम उस तरह कंदा किए जाएँ जिस तरह मुहर कंदा की जाती है।

22 सीने के कीसे पर खालिस सोने की दो जंजीरें लगाना जो डोरी की तरह गुंधी हुई हों।

23 उन्हें लगाने के लिए दो कड़े बनाकर कीसे के ऊपर के दो कोनों पर लगाना।

24 अब दोनों जंजीरें उन दो कड़ों से लगाना।

25 उनके दूसरे सिरे बालापोश की कंधोंवाली पट्टियों के दो खानों के साथ जोड़ देना, फिर सामने की तरफ़ लगाना।

26 कीसे के निचले दो कोनों पर भी सोने के दो कड़े लगाना। वह अंदर, बालापोश की तरफ़ लगे हों।

27 अब दो और कड़े बनाकर बालापोश की कंधोंवाली पट्टियों पर लगाना। यह भी सामने की तरफ़ लगे हों लेकिन नीचे, बालापोश के पटके के ऊपर ही।

28 सीने के कीसे के निचले कड़े नीली डोरी से बालापोश के इन निचले कड़ों के साथ बाँधे जाएँ। यों कीसा पटके के ऊपर अच्छी तरह सीने के साथ लगा रहेगा।

29 जब भी हासून मक़दिस में दाखिल होकर रब के हुज़ूर आएगा वह इसराईली कबीलों के नाम अपने दिल पर सीने के कीसे की सूत में साथ ले जाएगा। यों वह कौम की याद दिलाता रहेगा।

30 सीने के कीसे में दोनों कुरे बनाम ऊरीम और तुम्मीम रखे जाएँ। वह भी मक़दिस में रब के सामने आते वक़्त हासून के दिल पर हों। यों जब हासून रब के

* 28:17 या एक क्रिस्म का सुर्ख अक्रीक। याद रहे कि चूँकि कदीम ज़माने के अकसर जवाहरात के नाम मतस्क हैं या उनका मतलब बदल गया है, इसलिए उनका मुख्तलिफ़ तरज़ुमा हो सकता है। † 28:17 peridot ‡ 28:18 lapis lazuli § 28:18 moonstone * 28:19 hyacinth † 28:19 agate ‡ 28:19 amethyst § 28:20 topas * 28:20 carnelian † 28:20 jasper

हज़ूर होगा तो रब की मरज़ी पूछने का वसीला हमेशा उसके दिल पर होगा।

हारून का चोगा

31 चोगा भी बुनना। वह पूरी तरह नीले धागे से बनाया जाए। चोगे को बालापोश से पहले पहना जाए।

32 उसके गेबान को बुने हुए कालर से मज़बूत किया जाए ताकि वह न फटे।

33 नीले, अरगवानी और क्रिमिज़ी रंग के धागे से अनार बनाकर उन्हें चोगे के दामन में लगा देना। उनके दरमियान सोने की घंटियाँ लगाना।

34 दामन में अनार और घंटियाँ बारी बारी लगाना।

35 हारून खिदमत करते वक़्त हमेशा चोगा पहने। जब वह मक़दिस में रब के हज़ूर आएगा और वहाँ से निकलेगा तो घंटियाँ सुनाई देंगी। फिर वह नहीं मरेगा।

माथे पर छोटी तख़्ती, ज़ेरजामा और पगड़ी

36 ख़ालिस सोने की तख़्ती बनाकर उस पर यह अलफ़ाज़ कंदा करना, 'रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस' यह अलफ़ाज़ यों कंदा किए जाएँ जिस तरह मुहर कंदा की जाती है।

37 उसे नीली डोरी से पगड़ी के सामनेवाले हिस्से से लगाया जाए

38 ताकि वह हारून के माथे पर पड़ी रहे। जब भी वह मक़दिस में जाए तो यह तख़्ती साथ हो। जब इसराईली अपने नज़राने लाकर रब के लिए मख़सूस करें लेकिन किसी ग़लती के बाइस कुसूरवार हों तो उनका यह कुसूर हारून पर मुंतकिल होगा। इसलिए यह तख़्ती हर वक़्त उसके माथे पर हो ताकि रब इसराईलियों को कबूल कर ले।

39 ज़ेरजामे को बारीक कतान से बुनना और इस तरह पगड़ी भी। फिर कमरबंद बनाना। उस पर कढ़ाई का काम किया जाए।

बाक़ी लिबास

40 हारून के बेटों के लिए भी ज़ेरजामे, कमरबंद और पगड़ियाँ बनाना ताकि वह पुरवकार और शानदार नज़र आएँ।

41 यह सब अपने भाई हारून और उसके बेटों को पहनाना। उनके सरों पर तेल उंडेलकर उन्हें मसह करना। यों उन्हें उनके ओहदे पर मुक़र्रर करके मेरी खिदमत के लिए मख़सूस करना।

42 उनके लिए कतान के पाजामे भी बनाना ताकि वह ज़ेरजामे के नीचे नंगे न हों। उनकी लंबाई कमर से रान तक हो।

43 जब भी हासून और उसके बेटे मुलाकात के खैमे में दाखिल हों तो उन्हें यह पाजामे पहनने हैं। इसी तरह जब उन्हें मुकद्दस कमरे में खिदमत करने के लिए कुरबानगाह के पास आना होता है तो वह यह पहनें, वरना वह कुसूरवार ठहरकर मर जाएंगे। यह हासून और उस की औलाद के लिए एक अबदी उसूल है।

29

इमामों की मखसूसियत

- 1 इमामों को मकदिस में मेरी खिदमत के लिए मखसूस करने का यह तरीका है :
 एक जवान बैल और दो बेऐब मेंढे चुन लेना।
- 2 बेहतररीन मैदे से तीन क्रिस्म की चीजें पकाना जिनमें खमीर न हो। पहले, सादा रोटी। दूसरे, रोटी जिसमें तेल डाला गया हो। तीसरे, रोटी जिस पर तेल लगाया गया हो।
- 3 यह चीजें टोकरी में रखकर जवान बैल और दो मेंढों के साथ रब को पेश करना।
- 4 फिर हासून और उसके बेटों को मुलाकात के खैमे के दरवाजे पर लाकर गुस्ल कराना।
- 5 इसके बाद जेरजामा, चोगा, बालापोश और सीने का कीसा लेकर हासून को पहनाना। बालापोश को उसके महारत से बुने हुए पटके के जरीए बाँधना।
- 6 उसके सर पर पगड़ी बाँधकर उस पर सोने की मुकद्दस तख्ती लगाना।
- 7 हासून के सर पर मसह का तेल उंडेलकर उसे मसह करना।
- 8 फिर उसके बेटों को आगे लाकर जेरजामा पहनाना।
- 9 उनके पगडियाँ और कमरबंद बाँधना। यों तू हासून और उसके बेटों को उनके मंसब पर मुकरर करना। सिर्फ वह और उनकी औलाद हमेशा तक मकदिस में मेरी खिदमत करते रहें।
- 10 बैल को मुलाकात के खैमे के सामने लाना। हासून और उसके बेटे उसके सर पर अपने हाथ रखें।
- 11 उसे खैमे के दरवाजे के सामने रब के हुज़ूर जबह करना।
- 12 बैल के खून में से कुछ लेकर अपनी उँगली से कुरबानगाह के सीगों पर लगाना और बाकी खून कुरबानगाह के पाए पर उंडेल देना।

13 अंतड़ियों पर की तमाम चरबी, जोड़कलेजी और दोनों गुरदे उनकी चरबी समेत लेकर कुरबानगाह पर जला देना।

14 लेकिन बैल के गोशत, खाल और अंतड़ियों के गोबर को खैमागाह के बाहर जला देना। यह गुनाह की कुरबानी है।

15 इसके बाद पहले मेंढे को ले आना। हासून और उसके बेटे अपने हाथ मेंढे के सर पर रखें।

16 उसे ज़बह करके उसका खून कुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कना।

17 मेंढे को टुकड़े टुकड़े करके उस की अंतड़ियों और पिंडलियों को धोना। फिर उन्हें सर और बाकी टुकड़ों के साथ मिलाकर

18 पूरे मेंढे को कुरबानगाह पर जला देना। जलनेवाली यह कुरबानी रब के लिए भस्म होनेवाली कुरबानी है, और उस की ख़ुशबू रब को पसंद है।

19 अब दूसरे मेंढे को ले आना। हासून और उसके बेटे अपने हाथ मेंढे के सर पर रखें।

20 उसको ज़बह करना। उसके खून में से कुछ लेकर हासून और उसके बेटों के दहने कान की लौ पर लगाना। इसी तरह खून को उनके दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर भी लगाना। बाकी खून कुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कना।

21 जो खून कुरबानगाह पर पड़ा है उसमें से कुछ लेकर और मसह के तेल के साथ मिलाकर हासून और उसके कपड़ों पर छिड़कना। इसी तरह उसके बेटों और उनके कपड़ों पर भी छिड़कना। यों वह और उसके बेटे खिदमत के लिए मखसूसो-मुक़दस हो जाएंगे।

22 इस मेंढे का खास मक़सद यह है कि हासून और उसके बेटों को मक़दिस में खिदमत करने का इख़्तियार और ओहदा दिया जाए। मेंढे की चरबी, दुम, अंतड़ियों पर की सारी चरबी, जोड़कलेजी, दोनों गुरदे उनकी चरबी समेत और दहनी रान अलग करनी है।

23 उस टोकरी में से जो रब के हज़ूर यानी ख़ैमे के दरवाज़े पर पड़ी है एक सादा रोटी, एक रोटी जिसमें तेल डाला गया हो और एक रोटी जिस पर तेल लगाया गया हो निकालना।

24 मेंढे से अलग की गई चीज़ें और बेखमीरी रोटी की टोकरी की यह चीज़ें लेकर हासून और उसके बेटों के हाथों में देना, और वह उन्हें हिलानेवाली कुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाएँ।

25 फिर यह चीज़ें उनसे वापस लेकर भस्म होनेवाली कुरबानी के साथ कुरबानगाह पर जला देना। यह रब के लिए जलनेवाली कुरबानी है, और उस की खुर्रबू रब को पसंद है।

26 अब उस मेंढे का सीना लेना जिसकी मारिफत हास्न को इमामे-आज़म का इख्तियार दिया जाता है। सीने को भी हिलानेवाली कुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाना। यह सीना कुरबानी का तेरा हिस्सा होगा।

27 यों तुझे हास्न और उसके बेटों की मखसूसियत के लिए मुस्तामल मेंढे के टुकड़े मखसूसो-मुकद्दस करने हैं। उसके सीने को रब के सामने हिलानेवाली कुरबानी के तौर पर हिलाया जाए और उस की रान को उठानेवाली कुरबानी के तौर पर उठाया जाए।

28 हास्न और उस की औलाद को इसराईलियों की तरफ से हमेशा तक यह मिलने का हक है। जब भी इसराईली रब को अपनी सलामती की कुरबानियाँ पेश करें तो इमामों को यह दो टुकड़े मिलेंगे।

29 जब हास्न फ़ौत हो जाएगा तो उसके मुकद्दस लिबास उस की औलाद में से उस मर्द को देने हैं जिसे मसह करके हास्न की जगह मुक़र्रर किया जाएगा।

30 जो बेटा उस की जगह मुक़र्रर किया जाएगा और मक़दिस में ख़िदमत करने के लिए मुलाक्रात के ख़ैमे में आएगा वह यह लिबास सात दिन तक पहने रहे।

31 जो मेंढा हास्न और उसके बेटों की मखसूसियत के लिए ज़बह किया गया है उसे मुक़दस जगह पर उबालना है।

32 फिर हास्न और उसके बेटे मुलाक्रात के ख़ैमे के दरवाज़े पर मेंढे का गोशत और टोकरी की बेख़मीरी रोटियाँ खाँँ।

33 वह यह चीज़ें खाँँ जिनसे उन्हें गुनाहों का कफ़फ़ारा और इमाम का ओहदा मिला है। लेकिन कोई और यह न खाए, क्योंकि यह मखसूसो-मुक़दस हैं।

34 और अगर अगली सुबह तक इस गोशत या रोटी में से कुछ बच जाए तो उसे जलाया जाए। उसे खाना मना है, क्योंकि वह मुक़दस है।

35 जब तू हास्न और उसके बेटों को इमाम मुक़र्रर करेगा तो ऐन मेरी हिदायत पर अमल करना। यह तकरीब सात दिन तक मनाई जाए।

36 इसके दौरान गुनाह की कुरबानी के तौर पर रोज़ाना एक जवान बैल ज़बह करना। इससे तू कुरबानगाह का कफ़फ़ारा देकर उसे हर तरह की नापाकी से पाक

करेगा। इसके अलावा उस पर मसह का तेल उंडेलना। इससे वह मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस हो जाएगा।

37 सात दिन तक क़ुरबानगाह का कफ़फ़ारा देकर उसे पाक-साफ़ करना और उसे तेल से मख़सूसो-मुक़द्दस करना। फिर क़ुरबानगाह निहायत मुक़द्दस होगी। जो भी उसे छुएगा वह भी मख़सूसो-मुक़द्दस हो जाएगा।

रोज़मर्रा की क़ुरबानियाँ

38 रोज़ाना एक एक साल के दो भेड़ के नर बच्चे क़ुरबानगाह पर जला देना,

39 एक को सुबह के वक़्त, दूसरे को सूरज के ग़रूब होने के ऐन बाद।

40 पहले जानवर के साथ डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा पेश किया जाए जो कूटे हुए जैतूनों के एक लिटर तेल के साथ मिलाया गया हो। मै की नज़र के तौर पर एक लिटर मै भी क़ुरबानगाह पर उंडेलना।

41 दूसरे जानवर के साथ भी ग़ल्ला और मै की यह दो नज़रें पेश की जाएँ। ऐसी क़ुरबानी की ख़ुशबू रब को पसंद है।

42 लाज़िम है कि आनेवाली तमाम नसलें भस्म होनेवाली यह क़ुरबानी बाकायदगी से मुक़द्दस ख़ैमे के दरवाज़े पर रब के हुज़ूर चढाएँ। वहाँ मैं तुमसे मिला करूँगा और तुमसे हमकलाम हूँगा।

43 वहाँ मैं इसराईलियों से भी मिला करूँगा, और वह जगह मेरे जलाल से मख़सूसो-मुक़द्दस हो जाएगी।

44 यों मैं मुलाक़ात के ख़ैमे और क़ुरबानगाह को मख़सूस करूँगा और हासून और उसके बेटों को मख़सूस करूँगा ताकि वह इमामों की हैसियत से मेरी ख़िदमत करें।

45 तब मैं इसराईलियों के दरमियान रहूँगा और उनका ख़ुदा हूँगा।

46 वह जान लेंगे कि मैं रब उनका ख़ुदा हूँ, कि मैं उन्हें मिसर से निकाल लाया ताकि उनके दरमियान सुकूनत करूँ। मैं रब उनका ख़ुदा हूँ।

30

बख़ूर जलाने की क़ुरबानगाह

1 कीकर की लकड़ी की क़ुरबानगाह बनाना जिस पर बख़ूर जलाया जाए।

2 वह डेढ़ फुट लंबी, इतनी ही चौड़ी और तीन फुट ऊँची हो। उसके चारों कोनों में से सींग निकलें जो कुरबानगाह के साथ एक ही टुकड़े से बनाए गए हों।

3 उस की ऊपर की सतह, उसके चार पहलुओं और उसके सींगों पर खालिस सोना चढ़ाना। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द सोने की झालर हो।

4 सोने के दो कड़े बनाकर इन्हें उस झालर के नीचे एक दूसरे के मुक़ाबिल पहलुओं पर लगाना। इन कड़ों में कुरबानगाह को उठाने की लकड़ियाँ डाली जाएँगी।

5 यह लकड़ियाँ कीकर की हों, और उन पर भी सोना चढ़ाना।

6 इस कुरबानगाह को खैमे के मुक़द्दस कमरे में उस परदे के सामने रखना जिसके पीछे अहद का संदूक और उसका ढकना होंगे, वह ढकना जहाँ मैं तुझसे मिला करूँगा।

7 जब हासून हर सुबह शमादान के चराग तैयार करे उस वक़्त वह उस पर खुशबूदार बखूर जलाए।

8 सूरज के ग़रूब होने के बाद भी जब वह दुबारा चरागों की देख-भाल करेगा तो वह साथ साथ बखूर जलाए। यों रब के सामने बखूर मुतवातिर जलता रहे। लाज़िम है कि बाद की नसलें भी इस उसूल पर कायम रहें।

9 इस कुरबानगाह पर सिर्फ़ जायज़ बखूर इस्तेमाल किया जाए। इस पर न तो जानवरों की कुरबानियाँ चढ़ाई जाएँ, न ग़ल्ला या मै की नज़रें पेश की जाएँ।

10 हासून साल में एक दफ़ा उसका कफ़फ़ारा देकर उसे पाक करे। इसके लिए वह कफ़फ़ारे के दिन उस कुरबानी का कुछ खून सींगों पर लगाए। यह उसूल भी अबद तक कायम रहे। यह कुरबानगाह रब के लिए निहायत मुक़द्दस है।”

मर्दमशुमारी के पैसे

11 रब ने मूसा से कहा,

12 “जब भी तू इसराईलियों की मर्दमशुमारी करे तो लाज़िम है कि जिनका शुमार किया गया हो वह रब को अपनी जान का फ़िघा दें ताकि उनमें वबा न फैले।

13 जिस जिसका शुमार किया गया हो वह चाँदी के आधे सिक्के के बराबर रक़म उठानेवाली कुरबानी के तौर पर दे। सिक्के का वज़न मक़दिस के सिक्कों के बराबर हो। यानी चाँदी के सिक्के का वज़न 11 ग्राम हो, इसलिए छः ग्राम चाँदी देनी है।

14 जिसकी भी उम्र 20 साल या इससे ज़ायद हो वह रब को यह रकम उठानेवाली कुरबानी के तौर पर दे।

15 अमीर और ग़रीब दोनों इतना ही दें, क्योंकि यही नज़राना रब को पेश करने से तुम्हारी जान का कफ़फ़ारा दिया जाता है।

16 कफ़फ़ारे की यह रकम मुलाकात के ख़ैमे की ख़िदमत के लिए इस्तेमाल करना। फिर यह नज़राना रब को याद दिलाता रहेगा कि तुम्हारी जानों का कफ़फ़ारा दिया गया है।”

धोने का हौज़

17 रब ने मूसा से कहा,

18 “पीतल का ढाँचा बनाना जिस पर पीतल का हौज़ बनाकर रखना है। यह हौज़ धोने के लिए है। उसे सहन में मुलाकात के ख़ैमे और जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह के दरमियान रखकर पानी से भर देना।

19 हासून और उसके बेटे अपने हाथ-पाँव धोने के लिए उसका पानी इस्तेमाल करें।

20 मुलाकात के ख़ैमे में दाख़िल होने से पहले ही वह अपने आपको धोएँ वरना वह मर जाएंगे। इसी तरह जब भी वह ख़ैमे के बाहर की कुरबानगाह पर जानवरों की कुरबानियाँ चढ़ाएँ

21 तो लाज़िम है कि पहले हाथ-पाँव धो लें, वरना वह मर जाएंगे। यह उसूल हासून और उस की औलाद के लिए हमेशा तक कायम रहे।”

मसह का तेल

22 रब ने मूसा से कहा,

23 “मसह के तेल के लिए उम्दा क्रिस्म के मसाले इस्तेमाल करना। 6 किलोग्राम अबे-मुर, 3 किलोग्राम ख़ुशबूदार दारचीनी, 3 किलोग्राम ख़ुशबूदार बेद

24 और 6 किलोग्राम तेजपात। यह चीज़ें मक़दिस के बाटों के हिसाब से तोलकर चार लिटर ज़ैतून के तेल में डालना।

25 सब कुछ मिलाकर ख़ुशबूदार तेल तैयार करना। वह मुक़द्दस है और सिर्फ़ उस वक़्त इस्तेमाल किया जाए जब कोई चीज़ या शख्स मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस किया जाए।

26 यही तेल लेकर मुलाकात का ख़ैमा और उसका सारा सामान मसह करना यानी ख़ैमा, अहद का संदूक,

27 मेज़ और उसका सामान, शमादान और उसका सामान, बखूर जलाने की कुरबानगाह,

28 जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह और उसका सामान, धोने का हौज़ और उसका ढाँचा।

29 यों तू यह तमाम चीज़ें मखसूसो-मुकद्दस करेगा। इससे वह निहायत मुकद्दस हो जाएँगी। जो भी उन्हें छुएगा वह मुकद्दस हो जाएगा।

30 हासून और उसके बेटों को भी इस तेल से मसह करना ताकि वह मुकद्दस होकर मेरे लिए इमाम का काम संजाम दे सकें।

31 इसराईलियों को कह दे कि यह तेल हमेशा तक मेरे लिए मखसूसो-मुकद्दस है।

32 इसलिए इसे अपने लिए इस्तेमाल न करना और न इस तरकीब से अपने लिए तेल बनाना। यह तेल मखसूसो-मुकद्दस है और तुम्हें भी इसे यों ठहराना है।

33 जो इस तरकीब से आम इस्तेमाल के लिए तेल बनाता है या किसी आम शख्स पर लगाता है उसे उस की क्रौम में से मिटा डालना है।”

बखूर की कुरबानी

34 रब ने मूसा से कहा, “बखूर इस तरकीब से बनाना है : मस्तकी, ओनिका, * बिरिजा और खालिस लुबान बराबर के हिस्सों में

35 मिलाकर ख़ुशबूदार बखूर बनाना। इत्रसाज़ का यह काम नमकीन, ख़ालिस और मुकद्दस हो।

36 इसमें से कुछ पीसकर पौडर बनाना और मुलाकात के ख़ैमे में अहद के संदूक के सामने डालना जहाँ मैं तुझसे मिला करूँगा।

इस बखूर को मुकद्दसतरीन ठहराना।

37 इसी तरकीब के मुताबिक अपने लिए बखूर न बनाना। इसे रब के लिए मखसूसो-मुकद्दस ठहराना है।

38 जो भी अपने जाती इस्तेमाल के लिए इस किस्म का बखूर बनाए उसे उस की क्रौम में से मिटा डालना है।”

31

बज़लियेल और उहलियाब

* 30:34 onycha (unguis odoratus)

- 1 फिर रब ने मूसा से कहा,
 2 “मैंने यहदाह के कबीले के बज़लियेल बिन ऊरी बिन हर को चुन लिया है ताकि वह मुक़द्दस ख़ैमे की तामीर में राहनुमाई करे।
 3 मैंने उसे इलाही रूह से मामूर करके हिकमत, समझ और तामीर के हर काम के लिए दरकार इल्म दे दिया है।
 4 वह नक्शे बनाकर उनके मुताबिक सोने, चाँदी और पीतल की चीज़ें बना सकता है।
 5 वह जवाहर को काटकर जड़ने की काबिलियत रखता है। वह लकड़ी को तराशकर उससे मुख्तलिफ़ चीज़ें बना सकता है। वह बहुत सारे और कामों में भी महारत रखता है।
 6 साथ ही मैंने दान के कबीले के उहलियाब बिन अखी-समक को मुकर्रर किया है ताकि वह हर काम में उस की मदद करे। इसके अलावा मैंने तमाम समझदार कारीगरों को महारत दी है ताकि वह सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक बना सकें जो मैंने तुझे दी हैं।
 7 यानी मुलाकात का ख़ैमा, कफ़फारे के ढकने समेत अहद का संदूक और ख़ैमे का सारा दूसरा सामान,
 8 मेज़ और उसका सामान, ख़ालिस सोने का शमादान और उसका सामान, बखूर जलाने की कुरबानगाह,
 9 जानवरों को चढाने की कुरबानगाह और उसका सामान, धोने का हौज़ उस ढाँचे समेत जिस पर वह रखा जाता है,
 10 वह लिबास जो हारून और उसके बेटे मक़दिस में ख़िदमत करने के लिए पहनते हैं,
 11 मसह का तेल और मक़दिस के लिए ख़ुशबूदार बखूर। यह सब कुछ वह वैसे ही बनाएँ जैसे मैंने तुझे हुक्म दिया है।”

सबत यानी हफ़ते का दिन

- 12 रब ने मूसा से कहा,
 13 “इसराईलियों को बता कि हर सबत का दिन ज़रूर मनाओ। क्योंकि सबत का दिन एक नुमायाँ निशान है जिससे जान लिया जाएगा कि मैं रब हूँ जो तुम्हें मख़सुसो-मुक़द्दस करता हूँ। और यह निशान मेरे और तुम्हारे दरमियान नसल-दर-नसल कायम रहेगा।

14 सबत का दिन ज़रूर मनाना, क्योंकि वह तुम्हारे लिए मखसूसो-मुकद्दस है। जो भी उस की बेहुरमती करे वह ज़रूर जान से मारा जाए। जो भी इस दिन काम करे उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए।

15 छः दिन काम करना, लेकिन सातवाँ दिन आराम का दिन है। वह रब के लिए मखसूसो-मुकद्दस है।

16 इसराइलियों को हाल में और मुस्तक़बिल में सबत का दिन अबदी अहद समझकर मनाना है।

17 वह मेरे और इसराइलियों के दरमियान अबदी निशान होगा। क्योंकि रब ने छः दिन के दौरान आसमानो-ज़मीन को बनाया जबकि सातवें दिन उसने आराम किया और ताज़ादम हो गया।”

रब शरीअत की तख़्तियाँ देता है

18 यह सब कुछ मूसा को बताने के बाद रब ने उसे सीना पहाड़ पर शरीअत की दो तख़्तियाँ दीं। अल्लाह ने खुद पत्थर की इन तख़्तियों पर तमाम बातें लिखी थीं।

32

सोने का बछड़ा

1 पहाड़ के दामन में लोग मूसा के इंतज़ार में रहे, लेकिन बहुत देर हो गई। एक दिन वह हासून के गिर्द जमा होकर कहने लगे, “आएँ, हमारे लिए देवता बना दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें। क्योंकि क्या मालूम कि उस बंदे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिसर से निकाल लाया।”

2 जवाब में हासून ने कहा, “आपकी बीवियाँ, बेटे और बेटियाँ अपनी सोने की बालियाँ उतारकर मेरे पास ले आएँ।”

3 सब लोग अपनी बालियाँ उतार उतारकर हासून के पास ले आए

4 तो उसने यह ज़ेवरात लेकर बछड़ा ढाल दिया। बछड़े को देखकर लोग बोल उठे, “ऐ इसराइल, यह तेरे देवता हैं जो तुझे मिसर से निकाल लाए।”

5 जब हासून ने यह देखा तो उसने बछड़े के सामने कुरबानगाह बनाकर एलान किया, “कल हम रब की ताज़ीम में ईद मनाएँगे।”

6 अगले दिन लोग सुबह-सवेरे उठे और भस्म होनेवाली कुरबानियाँ और सलामती की कुरबानियाँ चढाई। वह खाने-पीने के लिए बैठ गए और फिर उठकर रंगरलियों में अपने दिल बहलाने लगे।

मूसा अपनी क्रौम की शफ़ाअत करता है

7 उस वक़्त रब ने मूसा से कहा, “पहाड से उतर जा। तेरे लोग जिन्हें तू मिसर से निकाल लाया बड़ी शरारतें कर रहे हैं।

8 वह कितनी जल्दी से उस रास्ते से हट गए हैं जिस पर चलने के लिए मैंने उन्हें हुक्म दिया था। उन्होंने अपने लिए ढाला हुआ बछड़ा बनाकर उसे सिजदा किया है। उन्होंने उसे कुरबानियाँ पेश करके कहा है, ‘ऐ इसराईल, यह तेरे देवता हैं। यही तुझे मिसर से निकाल लाए हैं’।”

9 अल्लाह ने मूसा से कहा, “मैंने देखा है कि यह क्रौम बड़ी हटधर्म है।

10 अब मुझे रोकने की कोशिश न कर। मैं उन पर अपना ग़ज़ब उंडेलकर उनको रूए-ज़मीन पर से मिटा दूँगा। उनकी जगह मैं तुझसे एक बड़ी क्रौम बना दूँगा।”

11 लेकिन मूसा ने कहा, “ऐ रब, तू अपनी क्रौम पर अपना गुस्सा क्यों उतारना चाहता है? तू खुद अपनी अज़ीम कुदरत से उसे मिसर से निकाल लाया है।

12 मिसरी क्यों कहें, ‘रब इसराईलियों को सिर्फ़ इस बुरे मकसद से हमारे मुल्क से निकाल ले गया है कि उन्हें पहाडी इलाके में मार डाले और यों उन्हें रूए-ज़मीन पर से मिटाए’? अपना गुस्सा ठंडा होने दे और अपनी क्रौम के साथ बुरा सुलूक करने से बाज़ रह।

13 याद रख कि तूने अपने खादिमों इब्राहीम, इसहाक और याकूब से अपनी ही कसम खाकर कहा था, ‘मैं तुम्हारी औलाद की तादाद यों बढ़ाऊँगा कि वह आसमान के सितारों के बराबर हो जाएगी। मैं उन्हें वह मुल्क दूँगा जिसका वादा मैंने किया है, और वह उसे हमेशा के लिए मीरास में पाएँगे’।”

14 मूसा के कहने पर रब ने वह नहीं किया जिसका एलान उसने कर दिया था बल्कि वह अपनी क्रौम से बुरा सुलूक करने से बाज़ रहा।

बुतपरस्ती के नतायज

15 मूसा मुडकर पहाड से उतरा। उसके हाथों में शरीअत की दोनों तख्तियाँ थीं। उन पर आगे पीछे लिखा गया था।

16 अल्लाह ने खुद तख्तियों को बनाकर उन पर अपने अहकाम कंदा किए थे।

17 उतरते उतरते यशुअ ने लोगों का शोर सुना और मूसा से कहा, “खैमागाह में जंग का शोर मच रहा है!”

18 मूसा ने जवाब दिया, “न तो यह फ़तहमंदों के नारे हैं, न शिकस्त खाए हुआ की चीख-पुकार। मुझे गानेवालों की आवाज़ सुनाई दे रही है।”

19 जब वह खैमागाह के नज़दीक पहुँचा तो उसने लोगों को सोने के बछड़े के सामने नाचते हुए देखा। बड़े गुस्से में आकर उसने तख्तियों को ज़मीन पर पटख दिया, और वह टुकड़े टुकड़े होकर पहाड़ के दामन में गिर गई।

20 मूसा ने इसराईलियों के बनाए हुए बछड़े को जला दिया। जो कुछ बच गया उसे उसने पीस पीसकर पौडर बना डाला और पौडर पानी पर छिड़ककर इसराईलियों को पिला दिया।

21 उसने हासून से पूछा, “इन लोगों ने तुम्हारे साथ क्या किया कि तुमने उन्हें ऐसे बड़े गुनाह में फँसा दिया?”

22 हासून ने कहा, “मेरे आक्रा। गुस्से न हों। आप खुद जानते हैं कि यह लोग बदी पर तुले रहते हैं।

23 उन्होंने मुझसे कहा, ‘हमारे लिए देवता बना दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें। क्योंकि क्या मालूम कि उस बंदे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिसर से निकाल लाया।’

24 इसलिए मैंने उनको बताया, ‘जिसके पास सोने के जेवरात हैं वह उन्हें उतार लाए।’ जो कुछ उन्होंने मुझे दिया उसे मैंने आग में फेंक दिया तो होते होते सोने का यह बछड़ा निकल आया।”

25 मूसा ने देखा कि लोग बेकाबू हो गए हैं। क्योंकि हासून ने उन्हें बेलगाम छोड़ दिया था, और यों वह इसराईल के दुश्मनों के लिए मज़ाक का निशाना बन गए थे।

26 मूसा खैमागाह के दरवाज़े पर खड़े होकर बोला, “जो भी रब का बंदा है वह मेरे पास आए।” जवाब में लावी के कबीले के तमाम लोग उसके पास जमा हो गए।

27 फिर मूसा ने उनसे कहा, “रब इसराईल का खुदा फ़रमाता है, ‘हर एक अपनी तलवार लेकर खैमागाह में से गुज़रे। एक सिरे के दरवाज़े से शुरू करके दूसरे सिरे के दरवाज़े तक चलते चलते हर मिलनेवाले को जान से मार दो, चाहे वह तुम्हारा भाई, दोस्त या रिश्तेदार ही क्यों न हो। फिर मुड़कर मारते मारते पहले दरवाज़े पर वापस आ जाओ।’”

28 लावियों ने मूसा की हिदायत पर अमल किया तो उस दिन तकरीबन 3,000 मर्द हलाक हुए।

29 यह देखकर मूसा ने लावियों से कहा, “आज अपने आपको मकदिस में रब की खिदमत करने के लिए मखसूसो-मुकद्दस करो, क्योंकि तुम अपने बेटों और भाइयों के खिलाफ लड़ने के लिए तैयार थे। इसलिए रब तुमको आज बरकत देगा।”

30 अगले दिन मूसा ने इसराईलियों से बात की, “तुमने निहायत संगीन गुनाह किया है। तो भी मैं अब रब के पास पहाड़ पर जा रहा हूँ। शायद मैं तुम्हारे गुनाह का कफ़ारा दे सकूँ।”

31 चुनौचे मूसा ने रब के पास वापस जाकर कहा, “हाय, इस क्रौम ने निहायत संगीन गुनाह किया है। उन्होंने अपने लिए सोने का देवता बना लिया।

32 मेहरबानी करके उन्हें मुआफ़ कर। लेकिन अगर तू उन्हें मुआफ़ न करे तो फिर मुझे भी अपनी उस किताब में से मिटा दे जिसमें तूने अपने लोगों के नाम दर्ज किए हैं।”

33 रब ने जवाब दिया, “मैं सिर्फ़ उसको अपनी किताब में से मिटाता हूँ जो मेरा गुनाह करता है।

34 अब जा, लोगों को उस जगह ले चल जिसका जिक्र मैंने किया है। मेरा फ़रिश्ता तेरे आगे आगे चलेगा। लेकिन जब सज़ा का मुकर्ररा दिन आएगा तब मैं उन्हें सज़ा दूँगा।”

35 फिर रब ने इसराईलियों के दरमियान वबा फैलने दी, इसलिए कि उन्होंने उस बछड़े की पूजा की थी जो हारून ने बनाया था।

33

1 रब ने मूसा से कहा, “इस जगह से रवाना हो जा। उन लोगों को लेकर जिनको तू मिसर से निकाल लाया है उस मुल्क को जा जिसका वादा मैंने इब्राहीम, इसहाक और याकूब से किया है। उन्हीं से मैंने कसम खाकर कहा था, ‘मैं यह मुल्क तुम्हारी औलाद को दूँगा।’

2 मैं तेरे आगे आगे फ़रिश्ता भेजकर कनानी, अमोरी, हिती, फ़रिज़्ज़ी, हिब्वी और यबूसी अक्रवाम को उस मुल्क से निकाल दूँगा।

3 उठ, उस मुल्क को जा जहाँ दूध और शहद की कसरत है। लेकिन मैं साथ नहीं जाऊँगा। तुम इतने हटधर्म हो कि अगर मैं साथ जाऊँ तो खतरा है कि तुम्हें वहाँ पहुँचने से पहले ही बरबाद कर दूँ।”

4 जब इसराईलियों ने यह सख्त अलफाज़ सुने तो वह मातम करने लगे। किसी ने भी अपने ज़ेवर न पहने,

5 क्योंकि रब ने मूसा से कहा था, “इसराईलियों को बता कि तुम हटधर्म हो। अगर मैं एक लमहा भी तुम्हारे साथ चलूँ तो खतरा है कि मैं तुम्हें तबाह कर दूँ। अब अपने ज़ेवरात उतार डालो। फिर मैं फ़ैसला करूँगा कि तुम्हारे साथ क्या किया जाए।”

6 इन अलफाज़ पर इसराईलियों ने होरिब यानी सीना पहाड़ पर अपने ज़ेवर उतार दिए।

मुलाकात का ख़ैमा

7 उस वक़्त मूसा ने ख़ैमा लेकर उसे कुछ फ़ासले पर ख़ैमागाह के बाहर लगा दिया। उसने उसका नाम ‘मुलाकात का ख़ैमा’ रखा। जो भी रब की मरज़ी दरियाफ़्त करना चाहता वह ख़ैमागाह से निकलकर वहाँ जाता।

8 जब भी मूसा ख़ैमागाह से निकलकर वहाँ जाता तो तमाम लोग अपने ख़ैमों के दरवाज़ों पर खड़े होकर मूसा के पीछे देखने लगते। उसके मुलाकात के ख़ैमे में ओझल होने तक वह उसे देखते रहते।

9 मूसा के ख़ैमे में दाखिल होने पर बादल का सतून उतरकर ख़ैमे के दरवाज़े पर ठहर जाता। जितनी देर तक रब मूसा से बातें करता उतनी देर तक वह वहाँ ठहरा रहता।

10 जब इसराईली मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर बादल का सतून देखते तो वह अपने अपने ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़े होकर सिजदा करते।

11 रब मूसा से स्बरू बातें करता था, ऐसे शख्स की तरह जो अपने दोस्त से बातें करता है। इसके बाद मूसा निकलकर ख़ैमागाह को वापस चला जाता। लेकिन उसका जवान मददगार यशुअ बिन नून ख़ैमे को नहीं छोड़ता था।

मूसा रब का जलाल देखता है

12 मूसा ने रब से कहा, “देख, तू मुझसे कहता आया है कि इस क़ौम को कनान ले चल। लेकिन तू मेरे साथ किस को भेजेगा? तूने अब तक यह बात मुझे नहीं

बताई हालाँकि तूने कहा है, 'मैं तुझे बनाम जानता हूँ, तुझे मेरा करम हासिल हुआ है।'

13 अगर मुझे वाकई तेरा करम हासिल है तो मुझे अपने रास्ते दिखा ताकि मैं तुझे जान लूँ और तेरा करम मुझे हासिल होता रहे। इस बात का खयाल रख कि यह क्रौम तेरी ही उम्मत है।”

14 रब ने जवाब दिया, “मैं खुद तेरे साथ चलूँगा और तुझे आराम दूँगा।”

15 मूसा ने कहा, “अगर तू खुद साथ नहीं चलेगा तो फिर हमें यहाँ से रवाना न करना।

16 अगर तू हमारे साथ न जाए तो किस तरह पता चलेगा कि मुझे और तेरी क्रौम को तेरा करम हासिल हुआ है? हम सिर्फ़ इसी वजह से दुनिया की दीगर क्रौमों से अलग और मुमताज़ हैं।”

17 रब ने मूसा से कहा, “मैं तेरी यह दरखास्त भी पूरी करूँगा, क्योंकि तुझे मेरा करम हासिल हुआ है और मैं तुझे बनाम जानता हूँ।”

18 फिर मूसा बोला, “बराहे-करम मुझे अपना जलाल दिखा।”

19 रब ने जवाब दिया, “मैं अपनी पूरी भलाई तेरे सामने से गुज़रने दूँगा और तेरे सामने ही अपने नाम रब का एलान करूँगा। मैं जिस पर मेहरबान होना चाहूँ उस पर मेहरबान होता हूँ, और जिस पर रहम करना चाहूँ उस पर रहम करता हूँ।

20 लेकिन तू मेरा चेहरा नहीं देख सकता, क्योंकि जो भी मेरा चेहरा देखे वह ज़िंदा नहीं रह सकता।”

21 फिर रब ने फ़रमाया, “देख, मेरे पास एक जगह है। वहाँ की चट्टान पर खड़ा हो जा।

22 जब मेरा जलाल वहाँ से गुज़रेगा तो मैं तुझे चट्टान के एक शिगाफ़ में रखूँगा और अपना हाथ तेरे ऊपर फैलाऊँगा ताकि तू मेरे गुज़रने के दौरान महफूज़ रहे।

23 इसके बाद मैं अपना हाथ हटाऊँगा और तू मेरे पीछे देख सकेगा। लेकिन मेरा चेहरा देखा नहीं जा सकता।”

34

पत्थर की नई तख्तियाँ

1 रब ने मूसा से कहा, “अपने लिए पत्थर की दो तख्तियाँ तराश ले जो पहली दो की मानिंद हों। फिर मैं उन पर वह अलफाज़ लिखूँगा जो पहली तख्तियों पर लिखे थे जिन्हें तूने पटख दिया था।

2 सुबह तक तैयार होकर सीना पहाड़ पर चढ़ना। चोटी पर मेरे सामने खड़ा हो जा।

3 तेरे साथ कोई भी न आए बल्कि पूरे पहाड़ पर कोई और शाख्स नजर न आए, यहाँ तक कि भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल भी पहाड़ के दामन में न चरें।”

4 चुनाँचे मूसा ने दो तख्तियाँ तराश लीं जो पहली की मानिंद थीं। फिर वह सुबह-सवेरे उठकर सीना पहाड़ पर चढ़ गया जिस तरह रब ने उसे हुक्म दिया था। उसके हाथों में पत्थर की दोनों तख्तियाँ थीं।

5 जब वह चोटी पर पहुँचा तो रब बादल में उतर आया और उसके पास खड़े होकर अपने नाम रब का एलान किया।

6 मूसा के सामने से गुज़रते हुए उसने पुकारा, “रब, रब, रहीम और मेहरबान खुदा। तहम्मूल, शफ़क़त और वफ़ा से भरपूर।

7 वह हज़ारों पर अपनी शफ़क़त कायम रखता और लोगों का कुसूर, नाफ़रमानी और गुनाह मुआफ़ करता है। लेकिन वह हर एक को उस की मुनासिब सज़ा भी देता है। जब वालिदैन गुनाह करें तो उनकी औलाद को भी तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा के नतायज भुगतने पड़ेंगे।”

8 मूसा ने जल्दी से झुककर सिजदा किया।

9 उसने कहा, “ऐ रब, अगर मुझ पर तेरा करम हो तो हमारे साथ चल। बेशक यह क्रौम हटधर्म है, तो भी हमारा कुसूर और गुनाह मुआफ़ कर और बख़्श दे कि हम दुबारा तेरे ही बन जाएँ।”

10 तब रब ने कहा, “मैं तुम्हारे साथ अहद बाँधूँगा। तेरी क्रौम के सामने ही मैं ऐसे मोजिज़े करूँगा जो अब तक दुनिया-भर की किसी भी क्रौम में नहीं किए गए। पूरी क्रौम जिसके दरमियान तू रहता है रब का काम देखेगी और उससे डर जाएगी जो मैं तेरे साथ करूँगा।

11 जो अहकाम मैं आज देता हूँ उन पर अमल करता रह। मैं अमोरी, कनानी, हिती, फ़रिज़्जी, हिव्वी और यबूसी अक़वाम को तेरे आगे आगे मुल्क से निकाल दूँगा।

12 खबरदार, जो उस मुल्क में रहते हैं जहाँ तू जा रहा है उनसे अहद न बाँधना। वरना वह तेरे दरमियान रहते हुए तुझे गुनाहों में फँसाते रहेंगे।

13 उनकी कुरबानगाहें ढा देना, उनके बुतों के सतून टुकड़े टुकड़े कर देना और उनकी देवी यसीरत के खंबे काट डालना।

14 किसी और माबूद की परस्तिश न करना, क्योंकि रब का नाम गयूर है, अल्लाह गौरतमंद है।

15 खबरदार, उस मुल्क के बाशिंदों से अहद न करना, क्योंकि तेरे दरमियान रहते हुए भी वह अपने माबूदों की पैरवी करके जिना करेंगे और उन्हें कुरबानियाँ चढाएँगे। आखिरकार वह तुझे भी अपनी कुरबानियों में शिरकत की दावत देंगे।

16 खतरा है कि तू उनकी बेटियों का अपने बेटों के साथ रिश्ता बाँधे। फिर जब यह अपने माबूदों की पैरवी करके जिना करेगी तो उनके सबब से तेरे बेटे भी उनकी पैरवी करने लगेंगे।

17 अपने लिए देवता न ढालना।

सालाना ईदें

18 बेखमीरी रोटी की ईद मनाना। अबीब के महीने * में सात दिन तक तेरी रोटी में खमीर न हो जिस तरह मैंने हुक्म दिया है। क्योंकि इस महीने में तू मिसर से निकला।

19 हर पहलौठा मेरा है। तेरे माल मवेशियों का हर पहलौठा मेरा है, चाहे बछड़ा हो या लेला।

20 लेकिन पहलौठे गधे के एवज़ भेड़ देना। अगर यह मुमकिन न हो तो उस की गरदन तोड़ डालना। अपने पहलौठे बेटों के लिए भी एवज़ी देना। कोई मेरे पास खाली हाथ न आए।

21 छः दिन काम-काज करना, लेकिन सातवें दिन आराम करना। खाह हल चलाना हो या फसल काटनी हो तो भी सातवें दिन आराम करना।

22 गंदुम की फसल की कटाई की ईद † उस वक़्त मनाना जब तू गेहूँ की पहली फसल काटेगा। अंगूर और फल जमा करने की ईद इसराईली साल के इख़िताम पर मनानी है।

23 लाज़िम है कि तेरे तमाम मर्द साल में तीन मरतबा रब कादिरे-मुतलक के सामने जो इसराईल का ख़ुदा है हाज़िर हों।

* 34:18 मार्च ता अप्रैल। † 34:22 सितंबर ता अक्टूबर।

24 मैं तेरे आगे आगे कौमों को मुल्क से निकाल दूँगा और तेरी सरहदें बढ़ाता जाऊँगा। फिर जब तू साल में तीन मरतबा रब अपने खुदा के हुज़ूर आएगा तो कोई भी तेरे मुल्क का लालच नहीं करेगा।

25 जब तू किसी जानवर को ज़बह करके कुरबानी के तौर पर पेश करता है तो उसके खून के साथ ऐसी रोटी पेश न करना जिसमें खमीर हो। ईदे-फ़सह की कुरबानी से अगली सुबह तक कुछ बाक़ी न रहे।

26 अपनी ज़मीन की पहली पैदावार में से बेहतरीन हिस्सा रब अपने खुदा के घर में ले आना।

बकरी या भेड़ के बच्चे को उस की माँ के दूध में न पकाना।”

मूसा के चेहरे पर चमक

27 रब ने मूसा से कहा, “यह तमाम बातें लिख ले, क्योंकि यह उस अहद की बुनियाद हैं जो मैंने तेरे और इसराईल के साथ बाँधा है।”

28 मूसा चालीस दिन और चालीस रात वहीं रब के हुज़ूर रहा। इस दौरान न उसने कुछ खाया न पिया। उसने पत्थर की तख्तियों पर अहद के दस अहकाम लिखे।

29 इसके बाद मूसा शरीअत की दोनों तख्तियों को हाथ में लिए हुए सीना पहाड़ से उतरा। उसके चेहरे की जिल्द चमक रही थी, क्योंकि उसने रब से बात की थी। लेकिन उसे खुद इसका इल्म नहीं था।

30 जब हारून और तमाम इसराईलियों ने देखा कि मूसा का चेहरा चमक रहा है तो वह उसके पास आने से डर गए।

31 लेकिन उसने उन्हें बुलाया तो हारून और जमात के तमाम सरदार उसके पास आए, और उसने उनसे बात की।

32 बाद में बाक़ी इसराईली भी आए, और मूसा ने उन्हें तमाम अहकाम सुनाए जो रब ने उसे कोहे-सीना पर दिए थे।

33 यह सब कुछ कहने के बाद मूसा ने अपने चेहरे पर निक्काब डाल लिया।

34 जब भी वह रब से बात करने के लिए मुलाकात के ख़ैमे में जाता तो निक्काब को ख़ैमे से निकलते वक़्त तक उतार लेता। और जब वह निकलकर इसराईलियों को रब से मिले हुए अहकाम सुनाता

35 तो वह देखते कि उसके चेहरे की जिल्द चमक रही है। इसके बाद मूसा दुबारा निक्राब को अपने चेहरे पर डाल लेता, और वह उस वक़्त तक चेहरे पर रहता जब तक मूसा रब से बात करने के लिए मुलाक़ात के ख़ैमे में न जाता था।

35

सबत का दिन

1 मूसा ने इसराईल की पूरी जमात को इक़्श करके कहा, “रब ने तुमको यह हुक्म दिए हैं :

2 छः दिन काम-काज किया जाए, लेकिन सातवाँ दिन मख़सूसो-मुक़द्स हो। वह रब के लिए आराम का सबत है। जो भी इस दिन काम करे उसे सज़ाए-मौत दी जाए।

3 हफ़ते के दिन अपने तमाम घरों में आग तक न जलाना।”

मुलाक़ात के ख़ैमे के लिए सामान

4 मूसा ने इसराईल की पूरी जमात से कहा, “रब ने हिदायत दी है

5 कि जो कुछ तुम्हारे पास है उसमें से हदिये लाकर रब को उठानेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करो। जो भी दिली ख़ुशी से देना चाहे वह इन चीज़ों में से कुछ दे : सोना, चाँदी, पीतल;

6 नीले, अरगवानी और क़िरमिज़ी रंग का धागा, बारीक कतान, बकरी के बाल,

7 मेंढों की सुर्ख रँगी हुई खालें, तख़स की खालें, कीकर की लकड़ी,

8 शमादान के लिए ज़ैतून का तेल, मसह करने के लिए तेल और ख़ुशबूदार बखूर के लिए मसाले,

9 अक़ीके-अहमर और दीगर जवाहर जो इमामे-आज़म के बालापोश और सीने के कीसे में जड़े जाएंगे।

10 तुममें से जितने माहिर कारीगर हैं वह आकर वह कुछ बनाएँ जो रब ने फ़रमाया

11 यानी ख़ैमा और वह गिलाफ़ जो उसके ऊपर लगाए जाएंगे, हुकें, दीवारों के तख़्ते, शहतीर, सतून और पाए,

12 अहद का संदूक़, उसे उठाने की लकड़ियाँ, उसके कफ़फारे का ढकना, मुक़द्सतरिन कमरे के दरवाज़े का परदा,

13 मखसूस रोटियों की मेज़, उसे उठाने की लकड़ियाँ, उसका सारा सामान और रोटियाँ,

14 शमादान और उस पर रखने के चराग उसके सामान समेत, शमादान के लिए तेल,

15 बखूर जलाने की कुरबानगाह, उसे उठाने की लकड़ियाँ, मसह का तेल, खुशबूदार बखूर, मुकद्दस खैमे के दरवाजे का परदा,

16 जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह, उसका पीतल का जंगला, उसे उठाने की लकड़ियाँ और बाकी सारा सामान, धोने का हौज़ और वह ढाँचा जिस पर हौज़ रखा जाता है,

17 चारदीवारी के परदे उनके खंबों और पाइयों समेत, सहन के दरवाजे का परदा,

18 खैमे और चारदीवारी की मेखें और रस्से,

19 और वह मुकद्दस लिबास जो हास्न और उसके बेटे मक़दिस में खिदमत करने के लिए पहनते हैं।”

20 यह सुनकर इसराईल की पूरी जमात मूसा के पास से चली गई।

21 और जो जो दिली खुशी से देना चाहता था वह मुलाक़ात के खैमे, उसके सामान या इमामों के कपड़ों के लिए कोई हदिया लेकर वापस आया।

22 रब के हदिये के लिए मर्द और खवातीन दिली खुशी से अपने सोने के ज़ेवरात मसलन जड़ाऊ पिनें, बालियाँ और छल्ले ले आए।

23 जिस जिसके पास दरकार चीज़ों में से कुछ था वह उसे मूसा के पास ले आया यानी नीले, क़िरमिज़ी और अरगवानी रंग का धागा, बारीक कतान, बकरी के बाल, मेंढों की सुर्ख रँगी हुई खालें और तख़स की खालें।

24 चाँदी, पीतल और कीकर की लकड़ी भी हदिये के तौर पर लाई गई।

25 और जितनी औरतें कातने में माहिर थीं वह अपनी काती हुई चीज़ें ले आईं यानी नीले, क़िरमिज़ी और अरगवानी रंग का धागा और बारीक कतान।

26 इसी तरह जो जो औरत बकरी के बाल कातने में माहिर थीं और दिली खुशी से मक़दिस के लिए काम करना चाहती थीं वह यह कातकर ले आईं।

27 सरदार अक़ीक़े-अहमर और दीगर जवाहर ले आए जो इमामे-आज़म के बालापोश और सीने के कीसे के लिए दरकार थे।

28 वह शमादान, मसह के तेल और खुशबूदार बखूर के लिए मसाले और जैतून का तेल भी ले आए।

29 यों इसराईल के तमाम मर्द और खवातीन जो दिली खुशी से रब को कुछ देना चाहते थे उस सारे काम के लिए हदिये ले आए जो रब ने मूसा की मारिफत करने को कहा था।

बज़लियेल और उहलियाब

30 फिर मूसा ने इसराईलियों से कहा, “रब ने यहदाह के कबीले के बज़लियेल बिन ऊरी बिन हर को चुन लिया है।

31 उसने उसे इलाही रह से मामूर करके हिकमत, समझ और तामीर के हर काम के लिए दरकार इल्म दे दिया है।

32 वह नक्शे बनाकर उनके मुताबिक सोने, चाँदी और पीतल की चीज़ें बना सकता है।

33 वह जवाहर को काटकर जड़ने की काबिलियत रखता है। वह लकड़ी को तराशकर उससे मुख्तलिफ चीज़ें बना सकता है। वह बहुत सारे और कामों में भी महारत रखता है।

34 साथ ही रब ने उसे और दान के कबीले के उहलियाब बिन अखी-समक को दूसरों को सिखाने की काबिलियत भी दी है।

35 उसने उन्हें वह महारत और हिकमत दी है जो हर काम के लिए दरकार है यानी कारीगरी के हर काम के लिए, कढाई के काम के लिए, नीले, अरगवानी और क्रिमिजी रंग के धागे और बारीक कतान से कपडा बनाने के लिए और बुनाई के काम के लिए। वह माहिर कारीगर है और नक्शे भी बना सकते हैं।

36

1 लाज़िम है कि बज़लियेल, उहलियाब और बाक़ी कारीगर जिनको रब ने मक़दिस की तामीर के लिए हिकमत और समझ दी है सब कुछ ऐन उन हिदायात के मुताबिक बनाएँ जो रब ने दी हैं।”

इसराईली दिली खुशी से देते हैं

2 मूसा ने बज़लियेल और उहलियाब को बुलाया। साथ ही उसने हर उस कारीगर को भी बुलाया जिसे रब ने मक़दिस की तामीर के लिए हिकमत और महारत दी थी और जो खुशी से आना और यह काम करना चाहता था।

3 उन्हें मूसा से तमाम हृदिये मिले जो इसराईली मकदिस की तामीर के लिए लाए थे।

इसके बाद भी लोग रोज़ बरोज़ सुबह के वक़्त हृदिये लाते रहे।

4 आखिरकार तमाम कारीगर जो मकदिस बनाने के काम में लगे थे अपना काम छोड़कर मूसा के पास आए।

5 उन्होंने कहा, “लोग हृद से ज़्यादा ला रहे हैं। जिस काम का हुक्म रब ने दिया है उसके लिए इतने सामान की ज़रूरत नहीं है।”

6 तब मूसा ने पूरी ख़ैमागाह में एलान करवा दिया कि कोई मर्द या औरत मकदिस की तामीर के लिए अब कुछ न लाए।

यों उन्हें मज़ीद चीज़ें लाने से रोका गया,

7 क्योंकि काम के लिए सामान ज़रूरत से ज़्यादा हो गया था।

मुलाक़ात का ख़ैमा

8 जो कारीगर महारत रखते थे उन्होंने ख़ैमे को बनाया। उन्होंने बारीक कतान और नीले, अरग़वानी और किरमिज़ी धागे से दस परदे बनाए। परदों पर किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से क़रबी फ़रिशतों का डिज़ायन बनाया गया।

9 हर परदे की लंबाई 42 फ़ुट और चौड़ाई 6 फ़ुट थी।

10 पाँच परदों के लंबे हाशिये एक दूसरे के साथ जोड़े गए और इसी तरह बाक़ी पाँच भी। यों दो बड़े टुकड़े बन गए।

11 दोनों टुकड़ों को एक दूसरे के साथ मिलाने के लिए उन्होंने नीले धागे के हलके बनाए। यह हलके हर टुकड़े के 42 फ़ुटवाले एक किनारे पर लगाए गए,

12 एक टुकड़े के हाशिये पर 50 हलके और दूसरे पर भी उतने ही हलके। इन दो हाशियों के हलके एक दूसरे के आमने-सामने थे।

13 फिर बज़लियेल ने सोने की 50 हुकें बनाकर उनसे आमने-सामने के हलकों को एक दूसरे के साथ मिलाया। यों दोनों टुकड़ों के जोड़ने से ख़ैमा बन गया।

14 उसने बकरी के बालों से भी 11 परदे बनाए जिन्हें कपड़ेवाले ख़ैमे के ऊपर रखना था।

15 हर परदे की लंबाई 45 फ़ुट और चौड़ाई 6 फ़ुट थी।

16 पाँच परदों के लंबे हाशिये एक दूसरे के साथ जोड़े गए और इस तरह बाक़ी छः भी।

17 इन दोनों टुकड़ों को मिलाने के लिए उसने हर टुकड़े के 45 फुटवाले एक किनारे पर पचास पचास हलके लगाए।

18 फिर पीतल की 50 हुकें बनाकर उसने दोनों हिस्से मिलाए।

19 एक दूसरे के ऊपर के दोनों खैमों की हिफाज़त के लिए बज़लियेल ने दो और गिलाफ बनाए। बकरी के बालों के खैमे पर रखने के लिए उसने मेंढों की सुर्ख रंगी हुई खालें जोड़ दीं और उसके ऊपर रखने के लिए तख़स की खालें मिलाईं।

20 इसके बाद उसने कीकर की लकड़ी के तख़ते बनाए जो खैमे की दीवारों का काम देते थे।

21 हर तख़ते की ऊँचाई 15 फुट थी और चौड़ाई सवा दो फुट।

22 हर तख़ते के नीचे दो दो चूले थीं। इन चूलों से हर तख़ते को उसके पाइयों के साथ जोड़ा जाता था ताकि तख़ता खड़ा रहे।

23 खैमे की जुनबी दीवार के लिए 20 तख़ते बनाए गए

24 और साथ ही चाँदी के 40 पाए भी जिन पर तख़ते खड़े किए जाते थे। हर तख़ते के नीचे दो पाए थे, और हर पाए में एक चूल लगती थी।

25 इसी तरह खैमे की शिमाली दीवार के लिए भी 20 तख़ते बनाए गए

26 और साथ ही चाँदी के 40 पाए जो तख़तों को खड़ा करने के लिए थे। हर तख़ते के नीचे दो पाए थे।

27 खैमे की पिछली यानी मगरिबी दीवार के लिए छः तख़ते बनाए गए।

28 इस दीवार को शिमाली और जुनबी दीवारों के साथ जोड़ने के लिए कोनेवाले दो तख़ते बनाए गए।

29 इन दो तख़तों में नीचे से लेकर ऊपर तक कोना था ताकि एक से शिमाली दीवार मगरिबी दीवार के साथ जुड़ जाए और दूसरे से जुनबी दीवार मगरिबी दीवार के साथ। इनके ऊपर के सिरे कड़ों से मज़बूत किए गए।

30 यों पिछले यानी मगरिबी तख़तों की पूरी तादाद 8 थी और इनके लिए चाँदी के पाइयों की तादाद 16, हर तख़ते के नीचे दो पाए।

31-32 फिर बज़लियेल ने कीकर की लकड़ी के शहतीर बनाए, तीनों दीवारों के लिए पाँच पाँच शहतीर। वह हर दीवार के तख़तों पर यों लगाने के लिए थे कि उनसे तख़ते एक दूसरे के साथ मिलाए जाएँ।

33 दरमियानी शहतीर यों बनाया गया कि वह दीवार की आधी ऊँचाई पर दीवार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लग सकता था।

34 उसने तमाम तख्तों और शहतीरों पर सोना चढ़ाया। शहतीरों को तख्तों के साथ लगाने के लिए उसने सोने के कड़े बनाए जो तख्तों में लगाने थे।

मुकद्दस खैमे के परदे

35 अब बज़लियेल ने एक और परदा बनाया। उसके लिए भी बारीक कतान और नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग का धागा इस्तेमाल हुआ। उस पर भी किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से कर्बूबी फ़रिशतों का डिज़ायन बनाया गया।

36 फिर उसने परदे को लटकाने के लिए कीकर की लकड़ी के चार सतून, सोने की हुकें और चाँदी के चार पाए बनाए। सतूनों पर सोना चढ़ाया गया।

37 बज़लियेल ने खैमे के दरवाज़े के लिए भी परदा बनाया। वह भी बारीक कतान और नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग के धागे से बनाया गया, और उस पर कढ़ाई का काम किया गया।

38 इस परदे को लटकाने के लिए उसने सोने की हुकें और कीकर की लकड़ी के पाँच सतून बनाए। सतूनों के ऊपर के सिरों और पट्टियों पर सोना चढ़ाया गया जबकि उनके पाए पीतल के थे।

37

अहद का संदूक

1 बज़लियेल ने कीकर की लकड़ी का संदूक बनाया। उस की लंबाई पौने चार फुट थी जबकि उस की चौड़ाई और ऊँचाई सवा दो फुट थी।

2 उसने पूरे संदूक पर अंदर और बाहर से खालिस सोना चढ़ाया। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द उसने सोने की झालर लगाई।

3 संदूक को उठाने के लिए उसने सोने के चार कड़े ढालकर उन्हें संदूक के चारपाइयों पर लगाया। दोनों तरफ़ दो दो कड़े थे।

4 फिर उसने कीकर की दो लकड़ियाँ संदूक को उठाने के लिए तैयार कीं और उन पर सोना चढ़ाया।

5 उसने इन लकड़ियों को दोनों तरफ़ के कड़ों में डाल दिया ताकि उनसे संदूक को उठाया जा सके।

6 बज़लियेल ने संदूक का ढकना खालिस सोने का बनाया। उस की लंबाई पौने चार फुट और चौड़ाई सवा दो फुट थी।

7-8 फिर उसने दो कर्बूबी फ़रिश्ते सोने से घड़कर बनाए जो ढकने के दोनों सिरों पर खड़े थे। यह दो फ़रिश्ते और ढकना एक ही टुकड़े से बनाए गए।

9 फ़रिश्तों के पर यों ऊपर की तरफ़ फैले हुए थे कि वह ढकने को पनाह देते थे। उनके मुँह एक दूसरे की तरफ़ किए हुए थे, और वह ढकने की तरफ़ देखते थे।

मखसूस रोटियों की मेज़

10 इसके बाद बज़लियेल ने कीकर की लकड़ी की मेज़ बनाई। उस की लंबाई तीन फुट, चौड़ाई डेढ़ फुट और ऊँचाई सवा दो फुट थी।

11 उसने उस पर ख़ालिस सोना चढ़ाकर उसके इर्दगिर्द सोने की झालर लगाई।

12 मेज़ की ऊपर की सतह पर उसने चौखटा भी लगाया जिसकी ऊँचाई तीन इंच थी और जिस पर सोने की झालर लगी थी।

13 अब उसने सोने के चार कड़े ढालकर उन्हें चारों कोनों पर लगाया जहाँ मेज़ के पाए लगे थे।

14 यह कड़े मेज़ की सतह पर लगे चौखटे के नीचे लगाए गए। उनमें वह लकड़ियाँ डालनी थीं जिनसे मेज़ को उठाना था।

15 बज़लियेल ने यह लकड़ियाँ भी कीकर से बनाई और उन पर सोना चढ़ाया।

16 आखिरकार उसने ख़ालिस सोने के वह थाल, प्याले, मै की नज़रें पेश करने के बरतन और मरतबान बनाए जो उस पर रखे जाते थे।

शमादान

17 फिर बज़लियेल ने ख़ालिस सोने का शमादान बनाया। उसका पाया और डंडी घड़कर बनाए गए। उस की प्यालियाँ जो फूलों और कलियों की शकल की थीं पाए और डंडी के साथ एक ही टुकड़ा थीं।

18 डंडी से दाईं और बाईं तरफ़ तीन तीन शाखें निकलती थीं।

19 हर शाख पर तीन प्यालियाँ लगी थीं जो बादाम की कलियों और फूलों की शकल की थीं।

20 शमादान की डंडी पर भी इस किस्म की प्यालियाँ लगी थीं, लेकिन तादाद में चार।

21 इनमें से तीन प्यालियाँ दाएँ बाएँ की छः शाखों के नीचे लगी थीं। वह यों लगी थीं कि हर प्याली से दो शाखें निकलती थीं।

22 शाखें और प्यालियाँ बल्कि पूरा शमादान ख़ालिस सोने के एक ही टुकड़े से घड़कर बनाया गया।

23 बज़लियेल ने शमादान के लिए खालिस सोने के सात चराग बनाए। उसने बत्ती कतरने की कैंचियाँ और जलते कोयले के लिए छोटे बरतन भी खालिस सोने से बनाए।

24 शमादान और उसके तमाम सामान के लिए पूरे 34 किलोग्राम खालिस सोना इस्तेमाल हुआ।

बरखूर जलाने की कुरबानगाह

25 बज़लियेल ने कीकर की लकड़ी की कुरबानगाह बनाई जो बरखूर जलाने के लिए थी। वह डेढ़ फुट लंबी, इतनी ही चौड़ी और तीन फुट ऊँची थी। उसके चार कोनों में से सींग निकलते थे जो कुरबानगाह के साथ एक ही टुकड़े से बनाए गए थे।

26 उस की ऊपर की सतह, उसके चार पहलुओं और उसके सींगों पर खालिस सोना चढ़ाया गया। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द बज़लियेल ने सोने की झालर बनाई।

27 सोने के दो कड़े बनाकर उसने उन्हें इस झालर के नीचे एक दूसरे के मुकाबिल पहलुओं पर लगाया। इन कड़ों में कुरबानगाह को उठाने की लकड़ियाँ डाली गईं।

28 यह लकड़ियाँ कीकर की थीं, और उन पर भी सोना चढ़ाया गया।

29 बज़लियेल ने मसह करने का मुकद्दस तेल और खुशबूदार खालिस बरखूर भी बनाया। यह इत्रसाज़ का काम था।

38

जानवरों को पेश करने की कुरबानगाह

1 बज़लियेल ने कीकर की लकड़ी की एक और कुरबानगाह बनाई जो भस्म होनेवाली कुरबानियों के लिए थी। उस की ऊँचाई साढ़े चार फुट, उस की लंबाई और चौड़ाई साढ़े सात सात फुट थी।

2 उसके ऊपर चारों कोनों में से सींग निकलते थे। सींग और कुरबानगाह एक ही टुकड़े के थे, और उस पर पीतल चढ़ाया गया।

3 उसका तमाम साज़ो-सामान और बरतन भी पीतल के थे यानी राख को उठाकर ले जाने की बालटियाँ, बेलचे, काँटे, जलते हुए कोयले के लिए बरतन और छिड़काव के कटोरे।

4 कुरबानगाह को उठाने के लिए उसने पीतल का जंगला बनाया। वह ऊपर से खुला था और यों बनाया गया कि जब कुरबानगाह उसमें रखी जाए तो वह उस किनारे तक पहुँचे जो कुरबानगाह की आधी ऊँचाई पर लगी थी।

5 उसने कुरबानगाह को उठाने के लिए चार कड़े बनाकर उन्हें जंगले के चार कोनों पर लगाया।

6 फिर उसने कीकर की दो लकड़ियाँ बनाकर उन पर पीतल चढ़ाया

7 और कुरबानगाह के दोनों तरफ लगे इन कड़ों में डाल दीं। यों उसे उठाया जा सकता था। कुरबानगाह लकड़ी की थी लेकिन खोखली थी।

8 बज़लियेल ने धोने का हौज़ और उसका ढाँचा भी पीतल से बनाया। उसका पीतल उन औरतों के आईनों से मिला था जो मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर खिदमत करती थीं।

ख़ैमे का सहन

9 फिर बज़लियेल ने सहन बनाया। उस की चारदीवारी बारीक कतान के कपड़े से बनाई गई। चारदीवारी की लंबाई जुनूब की तरफ 150 फुट थी।

10 कपड़े को लगाने के लिए चाँदी की हुकें, पट्टियाँ, लकड़ी के खंबे और उनके पाए बनाए गए।

11 चारदीवारी शिमाल की तरफ भी इसी तरह बनाई गई।

12 ख़ैमे के पीछे मगरिब की तरफ चारदीवारी की चौड़ाई 75 फुट थी। कपड़े के अलावा उसके लिए 10 खंबे, 10 पाए और कपड़ा लगाने के लिए चाँदी की हुकें और पट्टियाँ बनाई गईं।

13 सामने, मशरिक् की तरफ जहाँ से सूरज तुलू होता है चारदीवारी की चौड़ाई भी 75 फुट थी।

14-15 कपड़ा दरवाज़े के दाईं तरफ साढे 22 फुट चौड़ा था और उसके बाईं तरफ भी उतना ही चौड़ा। उसे दोनों तरफ तीन तीन खंबों के साथ लगाया गया जो पीतल के पाइयों पर खड़े थे।

16 चारदीवारी के तमाम परदों के लिए बारीक कतान इस्तेमाल हुआ।

17 खंबे पीतल के पाइयों पर खड़े थे, और परदे चाँदी की हुकों और पट्टियों से खंबों के साथ लगे थे। खंबों के ऊपर के सिरों पर चाँदी चढ़ाई गई थी। सहन के तमाम खंबों पर चाँदी की पट्टियाँ लगी थीं।

18 चारदीवारी के दरवाजे का परदा नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग के धागे और बारीक कतान से बनाया गया, और उस पर कढ़ाई का काम किया गया। वह 30 फुट चौड़ा और चारदीवारी के दूसरे परदों की तरह साढ़े सात फुट ऊँचा था।

19 उसके चार खंबे और पीतल के चार पाए थे। उस की हुकें और पट्टियाँ चाँदी की थीं, और खंबों के ऊपर के सिरों पर चाँदी चढ़ाई गई थी।

20 खैमे और चारदीवारी की तमाम मेखें पीतल की थीं।

खैमे का तामीरी सामान

21 जैल में उस सामान की फहरिस्त है जो मक़दिस की तामीर के लिए इस्तेमाल हुआ। मूसा के हुक्म पर इमामे-आज़म हारून के बेटे इतमर ने लावियों की मारिफ़त यह फ़हरिस्त तैयार की।

22 (यहदाह के कबीले के बज़लियेल बिन ऊरी बिन हूर ने वह सब कुछ बनाया जो रब ने मूसा को बताया था।

23 उसके साथ दान के कबीले का उहलियाब बिन अखी-समक था जो कारीगरी के हर काम और कढ़ाई के काम में माहिर था। वह नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग के धागे और बारीक कतान से कपड़ा बनाने में भी माहिर था।)

24 उस सोने का वज़न जो लोगों के हृदियों से जमा हुआ और मक़दिस की तामीर के लिए इस्तेमाल हुआ तक़रीबन 1,000 किलोग्राम था (उसे मक़दिस के बाटों के हिसाब से तोला गया)।

25 तामीर के लिए चाँदी जो मर्दुमशुमारी के हिसाब से वसूल हुई, उसका वज़न तक़रीबन 3,430 किलोग्राम था (उसे भी मक़दिस के बाटों के हिसाब से तोला गया)।

26 जिन मर्दों की उम्र 20 साल या इससे ज़ायद थी उन्हें चाँदी का आधा आधा सिक्का देना पड़ा। मर्दों की कुल तादाद 6,03,550 थी।

27 चूँकि दीवारों के तख्तों के पाए और मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाजे के सतूनों के पाए चाँदी के थे इसलिए तक़रीबन पूरी चाँदी इन 100 पाइयों के लिए सर्फ़ हुई।

28 तक़रीबन 30 किलोग्राम चाँदी बच गई। इससे चारदीवारी के खंबों की हुकें और पट्टियाँ बनाई गईं, और यह खंबों के ऊपर के सिरों पर भी चढ़ाई गईं।

29 जो पीतल हृदियों से जमा हुआ उसका वज़न तक़रीबन 2,425 किलोग्राम था।

30 खैमे के दरवाजे के पाए, जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह, उसका जंगला, बरतन और साजो-सामान,

31 चारदीवारी के पाए, सहन के दरवाजे के पाए और खैमे और चारदीवारी की तमाम मेखें इसी से बनाई गईं।

39

हारून का बालापोश

1 बज़लियेल की हिदायत पर कारीगरों ने नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग का धागा लेकर मकदिस में खिदमत के लिए लिबास बनाए। उन्होंने हारून के मुकद्दस कपड़े उन हिदायात के ऐन मुताबिक बनाए जो रब ने मूसा को दी थीं।

2 उन्होंने इमामे-आज़म का बालापोश बनाने के लिए सोना, नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल किया।

3 उन्होंने सोने को कूट कूटकर बर्क बनाया और फिर उसे काटकर धागे बनाए। जब नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से कपड़ा बनाया गया तो सोने का यह धागा महारत से कढ़ाई के काम में इस्तेमाल हुआ।

4 उन्होंने बालापोश के लिए दो पट्टियाँ बनाई और उन्हें बालापोश के कंधों पर रखकर सामने और पीछे से बालापोश के साथ लगाईं।

5 पटका भी बनाया गया जिससे बालापोश को बाँधा जाता था। इसके लिए भी सोना, नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल हुआ। यह उन हिदायात के ऐन मुताबिक हुआ जो रब ने मूसा को दी थीं।

6 फिर उन्होंने अक्रीके-अहमर के दो पत्थर चुन लिए और उन्हें सोने के खानों में जड़कर उन पर इसराईल के बारह बेटों के नाम कंदा किए। यह नाम जौहरों पर उस तरह कंदा किए गए जिस तरह मुहर कंदा की जाती है।

7 उन्होंने पत्थरों को बालापोश की दो पट्टियों पर यों लगाया कि वह हारून के कंधों पर रब को इसराईलियों की याद दिलाते रहें। यह सब कुछ रब की दी गई हिदायात के ऐन मुताबिक हुआ।

सीने का कीसा

8 इसके बाद उन्होंने सीने का कीसा बनाया। यह माहिर कारीगर का काम था और उन्हीं चीज़ों से बना जिनसे हारून का बालापोश भी बना था यानी सोने और नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से।

9 जब कपडे को एक दफा तह किया गया तो कीसे की लंबाई और चौड़ाई नौ नौ इंच थी।

10 उन्होंने उस पर चार कतारों में जवाहर जड़े। हर कतार में तीन तीन जौहर थे। पहली कतार में लाल, ज़बरजद और ज़ुमुरद।

11 दूसरी में फ़ीरोज़ा, संगे-लाजवर्द और हजस्ल-क्रमर।

12 तीसरी में ज़रक्रोन, अक्रीक और याकूते-अरगवानी।

13 चौथी में पुखराज, अक्रीके-अहमर और यशब। हर जौहर सोने के खाने में जड़ा हुआ था।

14 यह बारह जवाहर इसराईल के बारह कबीलों की नुमाइंदगी करते थे। एक एक जौहर पर एक कबीले का नाम कंदा किया गया, और यह नाम उस तरह कंदा किए गए जिस तरह मुहर कंदा की जाती है।

15 अब उन्होंने सीने के कीसे के लिए खालिस सोने की दो जंजीरें बनाई जो डोरी की तरह गुंधी हुई थीं।

16 साथ साथ उन्होंने सोने के दो खाने और दो कड़े भी बनाए। उन्होंने यह कड़े कीसे के ऊपर के दो कोनों पर लगाए।

17 फिर दोनों जंजीरें उन दो कड़ों के साथ लगाई गईं।

18 उनके दूसरे सिरे बालापोश की कंधोंवाली पट्टियों के दो खानों के साथ जोड़ दिए गए, फिर सामने की तरफ लगाए गए।

19 उन्होंने कीसे के निचले दो कोनों पर भी सोने के दो कड़े लगाए। वह अंदर, बालापोश की तरफ लगे थे।

20 अब उन्होंने दो और कड़े बनाकर बालापोश की कंधोंवाली पट्टियों पर लगाए। यह भी सामने की तरफ लगे थे लेकिन नीचे, बालापोश के पटके के ऊपर ही।

21 उन्होंने सीने के कीसे के निचले कड़े नीली डोरी से बालापोश के इन निचले कड़ों के साथ बाँधे। यों कीसा पटके के ऊपर अच्छी तरह सीने के साथ लगा रहा। यह उन हिदायात के ऐन मुताबिक हुआ जो रब ने मूसा को दी थीं।

हारून का चोगा

22 फिर कारीगरों ने चोगा बुना। वह पूरी तरह नीले धागे से बनाया गया। चोगे को बालापोश से पहले पहनना था।

23 उसके गरेबान को बुने हुए कालर से मज़बूत किया गया ताकि वह न फटे।

24 उन्होंने नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग के धागे से अनार बनाकर उन्हें चोगे के दामन में लगा दिया।

25 उनके दरमियान खालिस सोने की घंटियाँ लगाई गईं।

26 दामन में अनार और घंटियाँ बारी बारी लगाई गईं। लाज़िम था कि हासून खिदमत करने के लिए हमेशा यह चोगा पहने। रब ने मूसा को यही हुक्म दिया था।

खिदमत के लिए दीगर लिबास

27 कारीगरों ने हासून और उसके बेटों के लिए बारीक कतान के ज़ेरजामे बनाए। यह बुननेवाले का काम था।

28 साथ साथ उन्होंने बारीक कतान की पगडियाँ और बारीक कतान के पाजामे बनाए।

29 कमरबंद को बारीक कतान और नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग के धागे से बनाया गया। कढ़ाई करनेवालों ने इस पर काम किया। सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक बनाया गया जो रब ने मूसा को दी थीं।

30 उन्होंने मुक़द्स ताज यानी खालिस सोने की तख्ती बनाई और उस पर यह अलफ़ाज़ कंदा किए, 'रब के लिए मखसूसो-मुक़द्स।'

31 फिर उन्होंने इसे नीली डोरी से पगड़ी के सामनेवाले हिस्से से लगा दिया। यह भी उन हिदायात के मुताबिक बनाया गया जो रब ने मूसा को दी थीं।

सारा सामान मूसा को दिखाया जाता है

32 आखिरकार मक़दिस का काम मुकम्मल हुआ। इसराईलियों ने सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक बनाया था जो रब ने मूसा को दी थीं।

33 वह मक़दिस की तमाम चीज़ें मूसा के पास ले आए यानी मुक़द्स खैमा और उसका सारा सामान, उस की हुकें, दीवारों के तख्ते, शहतीर, सतून और पाए,

34 खैमे पर मेंढों की सुर्ख रँगी हुई खालों का गिलाफ़ और तखस की खालों का गिलाफ़, मुक़द्सतरीन कमरे के दरवाज़े का परदा,

35 अहद का संदूक जिसमें शरीअत की तख्तियाँ रखनी थीं, उसे उठाने की लकडियाँ और उसका ढकना,

36 मखसूस रोटियों की मेज़, उसका सारा सामान और रोटियाँ,

37 खालिस सोने का शमादान और उस पर रखने के चराग उसके सारे सामान समेत, शमादान के लिए तेल,

38 बखूर जलाने की सोने की कुरबानगाह, मसह का तेल, खुशबूदार बखूर, मुकद्दस खैमे के दरवाजे का परदा,

39 जानवरों को चढ़ाने की पीतल की कुरबानगाह, उसका पीतल का जंगला, उसे उठाने की लकड़ियाँ और बाकी सारा सामान, धोने का हौज़ और वह ढाँचा जिस पर हौज़ रखना था,

40 चारदीवारी के परदे उनके खंबों और पाइयों समेत, सहन के दरवाजे का परदा, चारदीवारी के रस्से और मेखें, मुलाकात के खैमे में खिदमत करने का बाकी सारा सामान

41 और मक़दिस में खिदमत करने के वह मुक़द्दस लिबास जो हास्न और उसके बेटों को पहनने थे।

42 सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ बनाया गया था जो रब ने मूसा को दी थीं।

43 मूसा ने तमाम चीज़ों का मुआयना किया और मालूम किया कि उन्होंने सब कुछ रब की हिदायात के मुताबिक़ बनाया था। तब उसने उन्हें बरकत दी।

40

मक़दिस को खड़ा करने की हिदायात

1 फिर रब ने मूसा से कहा,

2 “पहले महीने की पहली तारीख को मुलाकात का खैमा खड़ा करना।

3 अहद का संदूक जिसमें शरीअत की तख्तियाँ हैं मुक़द्दसतरीन कमरे में रखकर उसके दरवाजे का परदा लगाना।

4 इसके बाद मखसूस रोटियों की मेज़ मुक़द्दस कमरे में लाकर उस पर तमाम ज़रूरी सामान रखना। उस कमरे में शमादान भी ले आना और उस पर उसके चराग रखना।

5 बखूर की सोने की कुरबानगाह उस परदे के सामने रखना जिसके पीछे अहद का संदूक है। फिर खैमे में दाखिल होने के दरवाजे पर परदा लगाना।

6 जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह सहन में खैमे के दरवाजे के सामने रखी जाए।

7 खैमे और इस कुरबानगाह के दरमियान धोने का हौज़ रखकर उसमें पानी डालना।

8 सहन की चारदीवारी खड़ी करके उसके दरवाजे का परदा लगाना।

9 फिर मसह का तेल लेकर उसे खैमे और उसके सारे सामान पर छिड़क देना। यों तू उसे मेरे लिए मखसूस करेगा और वह मुकद्दस होगा।

10 फिर जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह और उसके सामान पर मसह का तेल छिड़कना। यों तू उसे मेरे लिए मखसूस करेगा और वह निहायत मुकद्दस होगा।

11 इसी तरह हौज़ और उस ढाँचे को भी मखसूस करना जिस पर हौज़ रखा गया है।

12 हारून और उसके बेटों को मुलाक्रात के खैमे के दरवाज़े पर लाकर गुस्ल कराना।

13 फिर हारून को मुकद्दस लिबास पहनाना और उसे मसह करके मेरे लिए मखसूसो-मुकद्दस करना ताकि इमाम के तौर पर मेरी खिदमत करे।

14 उसके बेटों को लाकर उन्हें जेरजामे पहना देना।

15 उन्हें उनके वालिद की तरह मसह करना ताकि वह भी इमामों के तौर पर मेरी खिदमत करें। जब उन्हें मसह किया जाएगा तो वह और बाद में उनकी औलाद हमेशा तक मक़दिस में इस खिदमत के लिए मखसूस होंगे।”

मक़दिस को खड़ा किया जाता है

16 मूसा ने सब कुछ रब की हिदायात के मुताबिक़ किया।

17 पहले महीने की पहली तारीख़ को मुकद्दस खैमा खड़ा किया गया। उन्हें मिसर से निकले पूरा एक साल हो गया था।

18 मूसा ने दीवार के तख़्तों को उनके पाइयों पर खड़ा करके उनके साथ शहतीर लगाए। इसी तरह उसने सतूनों को भी खड़ा किया।

19 उसने रब की हिदायात के ऐन मुताबिक़ दीवारों पर कपड़े का खैमा लगाया और उस पर दूसरे ग़िलाफ़ रखे।

20 उसने शरीअत की दोनों तख़्तियाँ लेकर अहद के संदूक में रख दीं, उठाने के लिए लकड़ियाँ संदूक के कड़ों में डाल दीं और कफ़फारे का ढकना उस पर लगा दिया।

21 फिर उसने रब की हिदायात के ऐन मुताबिक़ संदूक को मुकद्दसतरीन कमरे में रखकर उसके दरवाज़े का परदा लगा दिया। यों अहद के संदूक पर परदा पड़ा रहा।

22 मूसा ने मखसूस रोटियों की मेज़ मुकद्दस कमरे के शिमाली हिस्से में उस परदे के सामने रख दी जिसके पीछे अहद का संदूक था।

23 उसने रब की हिदायत के ऐन मुताबिक रब के लिए मखसूस की हुई रोटियाँ मेज़ पर रखीं।

24 उसी कमरे के जुनूबी हिस्से में उसने शमादान को मेज़ के मुकाबिल रख दिया।

25 उस पर उसने रब की हिदायत के ऐन मुताबिक रब के सामने चराग रख दिए।

26 उसने बखूर की सोने की कुरबानगाह भी उसी कमरे में रखी, उस परदे के बिलकुल सामने जिसके पीछे अहद का संदूक था।

27 उसने उस पर रब की हिदायत के ऐन मुताबिक खुशबूदार बखूर जलाया।

28 फिर उसने खैमे का दरवाज़ा लगा दिया।

29 बाहर जाकर उसने जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह खैमे के दरवाज़े के सामने रख दी। उस पर उसने रब की हिदायत के ऐन मुताबिक भस्म होनेवाली कुरबानियाँ और गल्ला की नज़रें चढाईं।

30 उसने धोने के हौज़ को खैमे और उस कुरबानगाह के दरमियान रखकर उसमें पानी डाल दिया।

31 मूसा, हासून और उसके बेटे उसे अपने हाथ-पाँव धोने के लिए इस्तेमाल करते थे।

32 जब भी वह मुलाकात के खैमे में दाखिल होते या जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह के पास आते तो रब की हिदायत के ऐन मुताबिक पहले गुस्ल करते।

33 आखिर में मूसा ने खैमा, कुरबानगाह और चारदीवारी खड़ी करके सहन के दरवाज़े का परदा लगा दिया। यों मूसा ने मक़दिस की तामीर मुकम्मल की।

खैमे में रब का जलाल

34 फिर मुलाकात के खैमे पर बादल छा गया और मक़दिस रब के जलाल से भर गया।

35 मूसा खैमे में दाखिल न हो सका, क्योंकि बादल उस पर ठहरा हुआ था और मक़दिस रब के जलाल से भर गया था।

36 तमाम सफ़र के दौरान जब भी मक़दिस के ऊपर से बादल उठता तो इसराईली सफ़र के लिए तैयार हो जाते।

37 अगर वह न उठता तो वह उस वक़्त तक ठहरे रहते जब तक बादल उठ न जाता।

38 दिन के वक्त बादल मक़दिस के ऊपर ठहरा रहता और रात के वक्त वह तमाम इसराईलियों को आग की सूरत में नज़र आता था। यह सिलसिला पूरे सफ़र के दौरान जारी रहा।

किताबे-मुकदस

**The Holy Bible in the Urdu language, Urdu Geo
Version, Hindi Script**

Copyright © 2019 Urdu Geo Version

Language: उर्दू (Urdu)

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution-Noncommercial-No Derivatives license 4.0.

You may share and redistribute this Bible translation or extracts from it in any format, provided that:

You include the above copyright and source information.

You do not sell this work for a profit.

You do not change any of the words or punctuation of the Scriptures.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

2024-09-20

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 1 Jul 2025 from source files dated 20 Sep 2024

a1ee0020-7263-5fce-8289-9d7a7ac2d299